246

असली प्राचीन

रावण संहिता

लंकाधिपति रावण के रहस्य-चमत्कार भरे जीवनवृत्त के साथ ही
शिवोपासना व विभिन्न तंत्र साधनाओं की जानकारी

-: 246

रावणसंहिता

[रावण जीवन चरित, रावण का तंत्र ज्ञान, आयुर्वेद ज्ञान,
ज्योतिष ज्ञान एवं उनकी शिवभक्ति आदि विषयों
से सम्बन्धित अनुपम एवं संग्रहणीय ग्रन्थ]

लेखक
आचार्य पं० शिवकान्त झा
ज्यौतिषरत्न, वेदविशारद

44Books.com

प्रकाशक—
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी २२१००१

सन्

[मूल्य— ३२०/-

प्रकाशक—
श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार
कचौड़ीगली, वाराणसी
दूरभाष : २३९२५४३
२३९२४७१

©सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित

लेखक—
आचार्य पं० शिवकान्त झा

44Books.com

मुद्रक—
भारत प्रेस, वाराणसी

दो शब्द

'जिज्ञासा, प्राणी के विज्ञानात्मक-उत्कर्ष की आधारशिला है'', इस तथ्य को प्राय: सभी मानते व जानते हैं। यह भी जानते हैं कि निसर्गत: जिज्ञासु प्राणी अपनी चारों ओर घटित होने वाली घटनाओं के प्रति भी सर्वदा संवेदनशील रहने के आदी रहे हैं। इस आधार पर यह सोचना अनुचित नहीं ही है कि आदि काल से ही मनुष्य खगोलीय घटनाओं के प्रति भी स्वभावत: आकृष्ट होता रहा है। चूँकि आज भी जब लोग रात्रि के समय आकाश की ओर दृष्टिपात करते हैं, तो उन्हें भव्य, चित्ताकर्षक एवं चमत्कारिक दृश्य स्वत: अपनी ओर आकृष्ट कर, कुछ विशेष सोचने को बाध्य कर देती हैं। निश्चय ही वे आकाशीय चमत्कारिक दृश्य लोगों को आह्लादित एवं आनन्दित करने वाली तो होती ही हैं; आश्चर्योत्पादक व डरावने अनुभव भी प्रदान करती हैं।

जिस प्रकार आकाश में चमकते अनन्त ताराओं को देखकर कभी तो आनन्दानुभूति होती है, कभी ग्रहण, उल्कापात, धूमकेतुओं आदि को देख लोग विस्मित व भयभीत भी हो जाते हैं। उसी प्रकार यह सोचना कथमपि अनुचित नहीं है कि सृष्टि के प्रारम्भिक दिनों में लोग उपरोक्त प्रकार की चमत्कारिक घटनाओं या दृश्यों से निश्चय ही अत्यधिक विस्मित व भयभीत ही होते रहे होंगे, जिन्हें कभी लोगों द्वारा परमेश्वर का कोप भी समझा गया होगा। फिर शनै:-शनै: उनके रहस्यों को उद्घाटित करने का सार्थक प्रयत्न भी किया गया होगा।

प्रस्तुत ग्रन्थ रावणसंहिता के प्रवर्त्तक लंकेश्वर दशानन रावण के प्रसङ्ग में देवताओं से भगवान् श्री विष्णु का यह कहना कि वे अभी उसे युद्ध में परास्त नहीं कर सकते, रावण को प्राप्त दिव्य शक्तियों की ओर ही संकेत करता है। यह अजेयता प्रजापति ब्रह्मा से प्राप्त वर के कारण ही थी। इसे प्राप्त करने के लिए रावण ने घोर तपस्या की थी। परन्तु प्राकृतिक कुछ विलक्षणता का परिणाम ही सही मनुष्यों और वानरों की उपेक्षा का फल पराजय के रूप में उसके सामने आया। लेकिन यह क्या कम महत्त्वपूर्ण है कि लंकेश को पराजित करने के लिए निराकार को साकार रूप लेना पड़ा। उनके युद्ध की चर्चा करते समय किसी ने सच ही कहा है—वैसा कोई युद्ध न कभी हुआ और न कभी होगा।

रावण ने अपने अभियान को पूरा करने के लिए शस्त्र और शास्त्र दोनों साधनों को अपनाया। वह तंत्रशास्त्र का परम ज्ञाता था, उसने औषध ज्ञान को स्वयं जांचा-परखा और फिर प्रयोग किया था, वह एक अच्छा दैवज्ञ भी था। इस ग्रन्थ

में उसके इन्हीं विविध रूपों पर प्राप्त सामग्रियों की सहायता से प्रकाश डाला गया है। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि 'रावण संहिता' नाम का कोई भी ग्रंथ मूल रूप में उपलब्ध नहीं है। किसी अंश में सही हो सकता है, परन्तु सम्पूर्णता से अलभ्य भी नहीं कहा जा सकता है।

पौराणिक और ज्यौतिषीय गणना के आधार पर रावण की मृत्यु को लगभग नौ लाख वर्ष हो चुके हैं और इतने लंबे समय तक किसी ग्रंथ का मूल रूप में रह पाना संभव नहीं है। अर्थात् समय-समय पर इसमें काफी कुछ जुड़ा ही है। फिर भी प्रस्तुत ग्रंथ में उसकी उपलब्ध मौलिकता को बनाए रखते हुए ही कुछ ऐसा प्रयास किया गया है कि इसमें कुछ इस प्रकार की जानकारी और उपयोगी सामग्री जोड़ी जाए जिससे इस ग्रन्थ की मूल विषय सामग्री की जटिलता को कम कर सके तथा उसे अधिक महत्त्वशाली और उपयोगी भी बनाने में सहायक हो सके।

विश्वासपूर्वक यह कहा जा सकता है कि यह 'रावणसंहिता' ग्रंथ प्राचीन साहित्य में रूचि रखने वाले पाठकों को महाबली व शास्त्र मर्मज्ञ रावण के जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी देने में सक्षम हो सकेगा।

अन्त में यह कि ग्रन्थ प्रलेखनादि व प्रूफादिशोधन के समय जिन महानुभावों का मुझे सहयोग प्राप्त हुआ और जिनके ग्रन्थ या पाण्डुलिपियों से सहयोग मिला, उन लोगों का हृदय से आभार व्यक्त करना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूँ। विशेषकर प्रकाशक महोदय की मैं मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुए उनकी चिरायु की कामना करता हूँ, जिनके सत्प्रयास से ही यह ग्रन्थ आप विज्ञजनों की सेवा में प्रस्तुत हो सका है।

वैसे मैंने ग्रन्थ के प्रूफादि शोधन करने में निश्चय ही प्रमाद रहित प्रयास किया है। फिर भी यदि कहीं अशुद्धि रह गई हो, तो गलती करना मानवस्वभाव मान कर विद्वान् पाठक उसे सुधार कर पढ़ेंगे और सूचित भी करेंगे, तो बड़ी कृपा होगी।

अक्षय सप्तमी २०६६ — **शिवकान्त झा**
वाराणसी

4Books.com

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठांक
[प्रथम परिच्छेद]	
रावण जीवन वृत्तान्त	**२१-६२**
विश्रवा की उत्पत्ति प्रसङ्ग वर्णन	२२
वैश्रवण कुबेर की कथा	२४
राक्षसों का पूर्व इतिहास तथा उन्हें महादेव-पार्वती का वरदान	२५
सुकेश का वंश-विस्तार	२६
सुकेश के पुत्रों द्वारा सताये गये देवताओं की ओर से विष्णुजी का कुपित हो उन्हें मारने जाना	२८
देवासुर संग्राम	३०
राक्षस माली और माल्यवान् के मरने पर सुमाली का रसातल-वास और कुबेर का लंका में वास	३१
रावण, कुम्भकर्ण, सूर्पणखा तथा विभीषण का जन्म	३२
रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण का तप तथा वरदान	३४
कुबेर का लंकापुरी त्याग कैलाश पर अलकापुरी बसाना तथा रावण का लंका प्रवेश	३६
रावण को सूर्पणखा के विवाह की चिन्ता	३८
रावण का कुबेर के दूत को मारना	३९
रावण का विजय हेतु पर्यटन और कुबेर से युद्ध	३९
रावण का कुबेर को युद्ध में परास्त कर पुष्पक विमान प्राप्त करना	४०
रावण को नन्दी का शाप	४१
वेदवती द्वारा रावण को शाप	४२
रावण का राजा मरुत् को जीतना	४३
इक्ष्वाकुवंशी महाराज अनरण्य का रावण को शाप	४४
नारद जी द्वारा रावण को यमपुर विजय की प्रेरणा	४५
रावण-यमराज युद्ध	४६
रावण का यमराज को जीतकर आगे बढ़ना	४७
रावण का बहुत-सी कन्याओं और स्त्रियों का हरण करना तथा उनसे शापित होना	४९
खर और दूषण को जनस्थान भेजना	४९
रावण को नलकूबर का शाप	५१
देवताओं और राक्षसों का युद्ध तथा सुमाली वध	४३
मेघनाद का इन्द्र को बाँधकर लंका लाना	५४
ब्रह्मा का वर दे इन्द्र को छुड़ाना	५५
रावण की पराजय का इतिहास	५६
सहस्रार्जुन द्वारा रावण का बाँधा जाना	५७
पुलस्त्यजी का रावण को मुक्त कराना तथा रावण का लज्जित हो लंका को लौट आना	५९
जब रावण किष्किन्धा गया था	६०
[द्वितीय परिच्छेद]	
तन्त्र मन्त्र साधना	**६३-१७८**
षट्-कर्म	६४
षट्-कर्म-लक्षणम्	६४
विषय-कथनम्	६४
मारण-प्रयोग	६६
ज्वर द्वारा शत्रु का मारण	६७
आर्द्रपटी साधन का विनियोग	६८
बैरिमारण कवच	६९
काली का ध्यान	६९
माला-निर्णय	७१
जप-लक्षण	७१
मोहनाभिधान	७३
जल स्तम्भन का प्रयोग	७४
अग्नि स्तम्भन का प्रयोग	७५
आसन स्तम्भन का प्रयोग	७५
बुद्धि स्तम्भन प्रयोग	७५
मेघ स्तम्भन-प्रयोग	७६

KRBooks.com

विषय	पृष्ठांक
निद्रा स्तम्भन का प्रयोग	७६
सैन्य स्तम्भन प्रयोग	७६
सैन्य पलायन प्रयोग	७६
विद्वेषण प्रयोग	७७
उच्चाटन प्रयोग	७८
वशीकरण प्रयोग	७९
रावशीकरण	७९
कुचकाठिन्य की विधि	८१
योनि संस्कार	८१
रोभ-नाशन	८२
योनि-संकोचन	८२
स्त्री-द्रावण	८२
आकर्षण प्रयोग	८३
यक्षिणी साधन	८४
महायक्षिणी साधन	८४
भूतिनीसाधनम्	८५
शव-श्मशान-साधन	८६
मृतसञ्जीवनी प्रयोग	८७
विद्याधर सिद्धि	८८
भूतकरणम्	८८
कुष्ठीकरण प्रयोग	९०
मक्षिकानिवारण प्रयोग	९०
मूषकनिवारण प्रयोग	९०
मत्कुण-निवारण	९०
सर्पनिवारण प्रयोग	९०
मशक-निवारण	९१
क्षेत्रोपद्रवनाशन प्रयोग	९१
अन्नोत्पादन-मन्त्र	९१
रक्त निवारण	९१
बन्ध्यात्वनाशन प्रयोग	९१
गर्भस्तम्भन	९२
सुखप्रसव प्रयोग	९४
गर्भमोचन मन्त्र	९४
विद्यादात्री निर्गुण्डा यक्षिणी मन्त्र प्रयोग	९४
विद्या यक्षिणी साधन	९५
डाकिनी साधन	९५

विषय	पृष्ठांक
तस्कर ग्रहण चेटक	९६
ग्रहनाशनभूतेश्वर मन्त्र	९६
भूतोपद्रवनाश का उड्डीश मन्त्र	९६
डाकिनी से बालक को छुड़ाने का मन्त्र	९६
प्रेतादि या रोगादि झाड़ने का उत्तम मन्त्र	९७
नजर झाड़ने का मन्त्र	९७
डाकिनी के चोट मारने का मन्त्र	९८
डाकिनी द्वारा भक्षित को झाड़ना	९८
डाकिनी दूर करने वाला मन्त्र	९८
डाकिनी को बोलवाने का मन्त्र	९९
प्रेतादि झाड़ने का मन्त्र	९९
दूसरे के कृत्य को उलटना	९९
रात्रिज्वर निवारण तन्त्र	९९
अर्श निवारण तन्त्र	९९
दाँत के कीडे झाड़ने का मन्त्र	१००
हूक का मन्त्र	१०१
प्लीह निवारण मन्त्र	१०१
कखलाई निवारणार्थ मन्त्र	१०१
रींघनवायु का मन्त्र	१०१
सुखप्रसव	१०१
नेत्रपीडा निवारण मन्त्र	१०२
कण्ठवेल का मन्त्र	१०२
बिच्छू झाड़ने का मन्त्र	१०२
सर्प झाड़ने का मन्त्र	१०३
सर्पकीलन का मन्त्र	१०४
सर्पों को भगाने का मन्त्र	१०४
पागल कुत्ते का मन्त्र	१०४
आधासीसी का मन्त्र	१०४
कमल झाड़ने का मन्त्र	१०५
दर्द और थनपल को झाड़ना	१०५
जमोगा का मन्त्र	१०५
दबा पसली झाड़ने का मन्त्र	१०५
सर्व रोग निवारक मंत्र	१०६
बवासीर नाशक मंत्र	१०६
पीलिया झाड़ने का मंत्र	१०६
कण्ठवेल पीड़ा मुक्ति मंत्र	१०७

4kBooks.com

विषय	पृष्ठांक
बालज्वर नाशक मंत्र	१०७
नक्सीर स्तम्भन मंत्र	१०७
मसान रोग (सूखा रोग) नाशक प्रभावशाली झाड़ा	१०७
आधाशीशी नाशक मंत्र	१०८
नेत्र बाधा निवारण मंत्र	१०८
अन्न पचाने का मंत्र	१०८
आँख की फूली काटने हेतु	१०९
शारीरिक पीड़ा नाशक मंत्र	१०९
बवासीर नाशक मंत्र	१०९
सूखा रोग झाड़ने का मन्त्र	१०९
सर्वरोग नाशक तान्त्रिक यन्त्र अथवा तावीज	११०
अंडकोष वृद्धि रोकने का यन्त्र	११०
नियमित मासिक-धर्म हेतु तान्त्रिक टोटके	१११
मृतवत्सा दोष निवृत्ति हेतु दो मन्त्र	१११
मृतवत्सा नारी हेतु झाड़ा	११२
गर्भाशय के विकार मिटाने का झाड़ा व गंडा	११२
ज्वरों के लिए झाड़ा	११२
दाँत दाढ़ का दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र	११३
वायु नाशक हनुमान् मन्त्र	११३
समस्त व्याधियाँ नाशक हनुमान् मन्त्र	११३
बाय रोग झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	११४
कान दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र	११४
अण्ड वृद्धि व सर्प भगाने का हनुमान् मन्त्र	११४
हवा आदि रोग दूर करने का हनुमान् मन्त्र	११५
दाद झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	११५
आधा शीशी विनाशक हनुमान् मन्त्र	११५
कान की पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र	११६
नकसीर रोग निवारक हनुमान् मन्त्र	११६
समस्त रोग शान्ति का हनुमान् मन्त्र	११६
आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र	११६
डिब्बा (पहली) का रोग दूर करने के लिए हनुमान् मन्त्र	११७
नेत्र पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र	११७
बवासीर नाशक हनुमान् मन्त्र	११७
बगली दर्द दूर करने का हनुमान् मन्त्र	११८
आधा सीसी नाशक हनुमान् मन्त्र	११८
उखड़ी नाभि ठीक करने का हनुमान् मन्त्र	११८
बाला झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	११८
सिर दर्द निवारक हनुमान् मन्त्र	११९
आधा-सीसी दर्द नाशक हनुमान् मन्त्र	११९
नेत्र रोग नाशक हनुमान् मन्त्र	११९
दन्त पीड़ा निवारक हनुमान् मन्त्र	१२०
स्त्री सर्व-रोग नाशक हनुमान् मन्त्र	१२०
सर्व-शूल नाशक हनुमान् मन्त्र	१२०
रोग-दोष नाशक हनुमान् मन्त्र	१२१
दुर्बलता दूर करने का हनुमान् मन्त्र	१२१
रोग लकवा ठीक करने का मंत्र	१२१
रोग बिच्छू का विष उतारने का मंत्र	१२२
रोग दन्त शूल नाशक मंत्र	१२२
रोग बवासीर (खूनी) दूर करने का मंत्र	१२३
रोग नेत्र पीड़ा नाशक मंत्र	१२३
रोग शिर: शूलादिशामक मंत्र	१२३
रोग गांठ या फोड़े को ठीक करने के मंत्र	१२३
मस्तक पीड़ा निवारण मन्त्र	१२४
सर्वाङ्ग वेदना हरण मन्त्र	१२४
आधा शीश का दर्द दूर करने का मन्त्र	१२४
उदर वेदना निवारक मन्त्र	१२४
नेत्र पीड़ा निवारक मन्त्र	१२४
रोग निवारण मन्त्र	१२५
ऋतु वेदना निवारण मन्त्र	१२५
मासिक विकार दूर करने का मन्त्र	१२५
प्रसव कष्ट निवारण मन्त्र	१२५
[illegible]गी रोग हरण मन्त्र	१२६
रतौंधी विनाशक मन्त्र	१२६
नैन वेदना विनाशक मन्त्र	१२६

KABOOKS.com

विषय	पृष्ठांक
मस्तक शूल विनाशक मन्त्र	१२६
आँखों का दर्द दूर करने का मन्त्र	१२६
दन्त शूल नाशक मन्त्र	१२७
तपेदीक (टी० बी०) आदि सर्व ज्वर नाशक अद्भुत मन्त्र	१२७
पसली झारने (दूर करने) का मन्त्र	१२७
बिच्छू का विष झाड़ने का मन्त्र	१२८
दूसरा मन्त्र (डंक झाड़ने का)	१२८
पीलिया (कँवर) का मन्त्र	१२८
ज्वर नाशक तन्त्र धूप	१२९
ज्वर नाशक मन्त्र	१२९
ज्वर नाशक अन्य मन्त्र	१२९
बाई झारने का यन्त्र	१२९
बालकों को रोना दूर करने का मन्त्र	१२९
जानवरों के कीड़ा झाड़ने का मन्त्र	१२९
वायु गोला का मन्त्र	१३०
वायु गोला झाड़ने का मन्त्र	१३०
कान का दर्द झाड़ने का मन्त्र	१३०
मृगी (मिरगी) का मन्त्र	१३०
प्रसव आसानी से होने का मन्त्र-यन्त्र	१३०
दूसरा प्रसव मन्त्र	१३०
आँख दुखने का मन्त्र	१३१
जानवरों के खुरहा रोग का मन्त्र	१३१
आधा शीशी झाड़ने का मन्त्र	१३१
रतौंधी झाड़ने का मन्त्र	१३१
बवासीर झाड़ने का मन्त्र	१३१
द्यूत विजय मन्त्र	१३२
गोमहिषी दुग्धवर्धन उपाय	१३२
भूत-प्रेत बाधानाशक मंत्र	१३३
प्रेतादि दोष नाशक मंत्र	१३३
भूत-प्रतों को भगाने का तन्त्र	१३४
भूतप्रेत भगाने का मन्त्र	१३४
भूत-प्रेत से स्वयं मुक्ति	१३५
भूत-प्रेत-पिशाच-डाकिनी निवारण यन्त्र	१३६
भूतादि दुष्ट आत्माओं के निवारण के मन्त्र	१३६

विषय	पृष्ठांक
डाइन-चुड़ैल दोष की निवृत्ति के लिए मन्त्र	१३८
चुड़ैल भगाने की दूसरी विधि	१३८
मसान	१३८
डाकिनी मन्त्र	१३८
चुड़ैल हेतु मन्त्र	१३९
औपरा हेतु मन्त्र	१३९
डायन हेतु मन्त्र	१३९
भूत-प्रेत आदि निवारण मन्त्र	१३९
श्री मणिभद्र भूत-प्रेत-बाधा निवारण-मन्त्र	१३९
भूत-प्रेत व दुष्टभय निवारक मन्त्र	१४०
सुख-समृद्धि दायक कालिका मन्त्र	१४०
भूत आदि हटाने का बाग मन्त्र	१४१
चुड़ैल भगाने का मन्त्र	१४१
भूत भय नाशन मन्त्र	१४१
डायन, पिशाचिनी भगाने का मन्त्र	१४१
भूत भय नाशन	१४१
भूत बाधा नाशन प्रयोग	१४२
चामुण्डा मन्त्र प्रयोग	१४२
नजर उतारने का मंत्र	१४२
दृष्टिदोष (नजर) नाशक मन्त्र	१४४
नजर लगने पर इन मन्त्रों का प्रयोग करें	१४४
नजर झाड़ने का मन्त्र	१४४
नजर दोष दूर करने का मंत्र	१४५
डायन की नजर झाड़ने का मन्त्र	१४६
नजर झाड़ने का हनुमान् मन्त्र	१४६
अतर मोहिनी	१४६
लूणमोहिनी	१४७
सुपारीमोहिनी	१४७
इलायचीमोहिनी	१४७
लौंग मोहिनी	१४७
राजवशीकरण	१४७
सभा मोहिनी	१४८
नग्न मोहिनी	१४८
शत्रु मोहिनी	१४९

4EBooks.com

विषय	पृष्ठांक
मूली मन्त्र प्रयोग	१४९
वशीकरण तन्त्र	१४९
राजावशीकरण तन्त्र	१५२
पति वशीकरण तन्त्र	१५३
स्त्रीवशीकरण तन्त्र	१५३
अथाकर्षण तन्त्र	१५४
पगच्छेदन	१५४
कुछ अन्य प्रयोग	१५५
शत्रु मूत्रबन्धन मन्त्र	१५६
शत्रुशिरसि पादुकाहनन	१५७
शत्रुपीडन	१५७
मूठचालन मन्त्र	१५८
सर्वकार्य सिद्धि भैरव मन्त्र प्रयोग	१५९
मेघ स्तम्भन	१६०
सेना स्तम्भन	१६०
स्नापलायन	१६०
अग्नि स्तम्भन	१६१
पदस्तम्भन	१६१
व्यापार वृद्धि मंत्र	१६२
व्यापार बंधन मुक्ति का मंत्र	१६३
रोजगार बाधानाशक एवम् व्यापार वृद्धि कारक मन्त्र	१६३
धन प्राप्ति का मंत्र	१६४
धन वृद्धि करने का मन्त्र	१६५
अधिक अन्न उपजाने का मन्त्र	१६५
गाय भैंस आदि को दूध बढ़ाने का मन्त्र	१६५
अति दुर्लभ निधि दर्शन मन्त्र	१६६
ऋद्धि करण मन्त्र	१६६
आकस्मिक धन प्राप्ति मन्त्र	१६६
नवग्रहजन्य दोष-उत्पात शान्ति के यन्त्र-मन्त्रादि	१६६
अष्टगन्ध बनाने की विधि	१६७
पुराणोक्त रवि मन्त्र	१६८
वैदिक रवि मन्त्र	१६८
तन्त्रोक्त रवि मन्त्र	१६८
सूर्य गायत्री मन्त्र	१६८
चन्द (चन्द्रमा) का यन्त्र-मन्त्रादि	१६८
पुराणोक्त चन्द्र जप मन्त्र	१६९
वैदिक चन्द्र मन्त्र	१६९
तन्त्रोक्त मन्त्र	१६९
सोम गायत्री मन्त्र	१६९
मंगल का यन्त्र-मन्त्रादि	१६९
पुराणोवत भौम जप मन्त्र	१६९
वैदिक जप मन्त्र	१७०
तन्त्रोवत भौम मन्त्र	१७०
भौम गायत्री मन्त्र	१७०
ऋणमोचन मंगल स्तोत्र	१७०
बुध का यन्त्र-मन्त्रादि	१७१
पुराणोक्त बुध जप मन्त्र	१७१
वैदिक बुध मन्त्र	१७१
तन्त्रोक्त बुध मन्त्र	१७२
बुध गायत्री मन्त्र	१७२
बृहस्पति (गुरु) का यन्त्र-मन्त्रादि	१७२
वेदोक्त गुरु मन्त्र	१७२
तन्त्रोक्त गुरु मन्त्र	१७२
गुरु गायत्री मन्त्र	१७३
शुक्र का यन्त्र-मन्त्रादि	१७३
पुराणोक्त शुक्र मन्त्र	१७३
वेदोक्त शुक्र मन्त्र	१७३
तन्त्रोक्त शुक्र मन्त्र	१७३
शुक्र गायत्री मन्त्र	१७४
शनि का यन्त्र-मन्त्रादि	१७४
पुराणोक्त शनि जप मन्त्र	१७४
वैदिक शनि मन्त्र	१७४
तन्त्रोक्त शनि मन्त्र	१७४
शनि गायत्री मन्त्र	१७४
राहु का मन्त्र	१७५
पुराणोक्त राहु मन्त्र	१७५
वैदिक राहु मन्त्र	१७५
तंत्रोक्त मन्त्र	१७५
राहु गायत्री मन्त्र	१७५
केतु का यन्त्र-मन्त्रादि	१७६

WBooks.com

विषय	पृष्ठांक
पुराणोक्त केतु मन्त्र	१७६
वैदिक केतु मन्त्र	१७६
तन्त्रोक्त मन्त्र	१७६
केतु गायत्री मन्त्र	१७६
नवग्रहों का यन्त्र-मन्त्रादि	१७६
नवग्रह स्तोत्र	१७७
अशुभ फलवाले ग्रहों के उपाय	१७७

[तृतीय परिच्छेद]

रोग चिकित्सा ज्ञान १७९-४२०

प्रथम रोग परीक्षा की आवश्यकता	१७९
वातादिज्वर का उपचार	१८६
कफज्वर का उपचार	१८८
वातपित्तज्वर का उपचार	१८९
सन्निपातज्वर का उपचार	१९१
जीर्णज्वर का उपचार	१९७
ग्रहणी का उपचार	२१०
अर्श (बवासीर) का उपचार	२१४
क्षुधा या भूख वृद्धि के उपचार	२२३
विसूचिका रोग का उपचार	२२९
कृमिरोग का उपचार	२३०
पाण्डुरोग का उपचार	२३१
कामला और पाण्डु रोग का उपचार	२३२
रक्तपित्त रोग का उपचार	२३५
राजयक्ष्मा-क्षय रोग (टी.बी.) का उपचार	२४०
खाँसी का उपचार	२४६
हिचकी एवं श्वास का उपचार	२४९
स्वरविकृति का उपचार	२५२
आम रोचकता का उपचार	२५३
उबकाई एवं वमन का उपचार	२५४
तृष्णा या पिपासा का उपचार	२५७
मद्यपानजनित रोग का उपचार	२५९
दाह या जलनशीलता का उपचार	२६१
उन्माद रोग का उपचार	२६२
अपस्मार या मृगीरोग का उपचार	२६३
वातरोग का उपचार	२६५

विषय	पृष्ठांक
वातरक्त का उपचार	२७८
ऊरुस्तम्भ रोग का उपचार	२८२
आमवात का उपचार	२८४
शूलरोग का उपचार	२८९
परिणामशूल का उपचार	२९४
उदावर्त एवं आनाह का उपचार	२९८
हृदयरोग का उपचार	३०५
मूत्रकृच्छ्र का उपचार	३०७
मूत्राघात का उपचार	३०९
अश्मरी रोग का उपचार	३११
प्रमेहमधुमेहपिडिका रोग का उपचार	३१३
मोटापा रोग का उपचार	३१७
उदररोग का उपचार	३१९
उदर कृत प्लीहा रोग का उपचार	३२२
शोथोदर रोग का उपचार	३२४
शोथ रोग का उपचार	३२४
वृद्धिब्रध्न रोग का उपचार	३२७
गलगंड, गण्डमाला, ग्रंथि अर्बुद और अपची आदि रोगों का उपचार	३२९
श्लीपद रोग का उपचार	३३३
विद्रधि रोग का उपचार	३३५
सद्योव्रण का उपचार	३३९
शस्त्रादि भग्ना का उपचार	३४१
नाड़ीव्रण का उपचार	३४२
भगन्दर रोग का उपचार	३४४
उपदंश रोग का उपचार	३४६
शूकदोष रोग का उपचार	३४७
कुष्ठ रोग का उपचार	३४८
उदर्द कोठशीतपित्त का उपचार	३५९
अम्लपित्त का उपचार	३६०
विसर्पविस्फोटक का उपचार	३६२
मसूरिका (चेचक) रोग का उपचार	३६५
क्षुद्ररोग का उपचार	३६६
मुखरोग का उपचार	३७२
कर्णरोग का उपचार	३७९
नाक के रोग का उपचार	३८२

4AKBooks.com

विषय	पृष्ठांक
नेत्र रोग का उपचार	३८४
शिरोरोग का उपचार	४००
प्रदर रोग का उपचार	४०४
योनिव्यापद् का उपचार	४०६
सूतिका रोग का उपचार	४०८
बालरोग का उपचार	४१६
सर्प आदि विष विनाशक उपचार	४१४
रसायन का वर्णन	४१७
वाजीकरण का वर्णन	४१९
[चतुर्थ परिच्छेद]	
काल (ज्यौतिष) शास्त्र	**४२१-५२४**
काल के प्रकार	४२१
कालपुरुष शरीर के अङ्ग और राशियाँ	४२२
राशि स्वरूप ज्ञान	४२२
मेष आदि राशियों का अधिवास	४२२
मेष आदि राशियों की लघुता दीर्घता	४२३
राशियों के पृष्ठोदयादि संज्ञा	४२३
राशियों की जलचरादि संज्ञा	४२३
चतुष्पदादि संज्ञा	४२४
राशियों के दिवारात्रि बल	४२४
राशियों के धातु मूल जीव संज्ञा	४२४
मेषादि राशियों की द्विपदादि संज्ञा	४२४
राशियों के वर्ण	४२४
राशियों का स्वामी	४२४
भाव विचार	४२५
ग्रहों के आत्मादि विचार	४२६
ग्रहों के राजादि संज्ञा	४२६
ग्रहों का वर्ण ज्ञान	४२६
ग्रहों का शुभाशुभ ज्ञान	४२६
चन्द्र का बलाबल	४२७
ग्रहों के पृष्ठोदयादि संज्ञा	४२७
ग्रहों के विहगादि स्वरूप	४२७
ग्रहों के बालादि अवस्था	४२७
ग्रहों के धातु आदि संज्ञा	४२७
ग्रहों के ताम्रादि वर्ण	४२७
ग्रहों के द्रव्य व अधिदेवता	४२७

विषय	पृष्ठांक
ग्रहों के माणिक्यादि रत्न	४२८
ग्रहों के वस्त्र	४२८
पूर्वादि दिशा स्वामी ज्ञान	४२८
ग्रहों के विप्र आदि संज्ञा	४२८
ग्रहों के पुरुषादि संज्ञा व तत्त्व	४२८
ग्रहों के मज्जा आदि ज्ञान	४२८
ग्रहों के लवणादि रस व अयनादि परिज्ञान	४२९
उच्चादि परिज्ञान	४२९
ग्रहों के मूलत्रिकोण राशियाँ	४२९
ग्रहों का फल परिमाण	४२९
ग्रहों का विफल स्थान	४२९
ग्रहों का बालादि अवस्था	४३०
सूर्य स्वरूप	४३०
चन्द्र स्वरूप	४३०
भौम स्वरूप	४३०
बुध स्वरूप	४३०
गुरु स्वरूप	४३०
भृगु स्वरूप	४३०
शनि स्वरूप	४३०
ग्रह वध क्रम	४३१
ग्रहों के मित्रादि ज्ञान	४३१
ग्रहों के स्थिरादि संज्ञा	४३१
ग्रहों की दृष्टि	४३१
ग्रहों का कारक	४३१
ग्रहों का स्थिरकारक	४३२
ग्रह अरिष्ट ज्ञान	४३२
ग्रहों से अरिष्ट नाश	४३२
सूर्य कृत दोष	४३२
चन्द्र कृत दोष	४३२
मङ्गल कृत दोष	४३२
बुध कृत दोष	४३३
गुरु भृगु कृत दोष	४३३
शनि केतु कृत दोष	४३३
राहु कृत दोष	४३३
ग्रह भाव योग	४३३

4Books.com

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ सूर्य फल	४३३
द्वितीय भाव में स्थित सूर्य फल	४३३
तृतीय भाव में स्थित सूर्य फल	४३३
चतुर्थ भावस्थ सूर्य फल	४३४
पंचम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
षष्ठ भावस्थ सूर्य	४३४
सप्तम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
अष्टम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
नवम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
दशम भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
एकादश भावस्थ सूर्य फल	४३४
द्वादश भाव में स्थित सूर्य फल	४३४
लग्नस्थ चन्द्र फल	४३४
द्वितीय भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
तृतीय भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
चतुर्थ भावस्थ चन्द्र फल	४३५
पंचम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
षष्ठ भावस्थ चन्द्र	४३५
सप्तम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
अष्टम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
नवम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
दशम भाव में स्थित चन्द्र फल	४३५
एकादश भावस्थ चन्द्र फल	४३६
द्वादश भाव में स्थित चन्द्र फल	४३६
लग्नस्थ मंगल फल	४३६
द्वितीय भाव में स्थित मंगल फल	४३६
तृतीय भाव में स्थित मंगल फल	४३६
चतुर्थ भावस्थ मंगल फल	४३६
पंचम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
षष्ठ भावस्थ मंगल फल	४३६
सप्तम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
अष्टम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
नवम भाव में स्थित मंगल फल	४३६
दशम भाव में स्थित मंगल फल	४३७
एकादश भावस्थ मंगल फल	४३७
द्वादश भाव में स्थित मंगल फल	४३७
लग्नस्थ बुध फल	४३७
द्वितीय भाव में स्थित बुध फल	४३७
तृतीय भाव में स्थित बुध फल	४३७
चतुर्थ भावस्थ बुध फल	४३७
पंचम भाव में स्थित बुध फल	४३७
षष्ठ भावस्थ बुध फल	४३७
सप्तम भाव में स्थित बुध फल	४३७
अष्टम भाव में स्थित बुध फल	४४०
नवम भाव में स्थित बुध फल	४४०
दशम भाव में स्थित बुध फल	४४०
एकादश भावस्थ बुध फल	४४०
द्वादश भाव में स्थित बुध फल	४४०
लग्नस्थ बृहस्पति फल	४४०
द्वितीय भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
तृतीय भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति फल	४४०
पंचम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४०
षष्ठ भावस्थ बृहस्पति फल	४४०
सप्तम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
अष्टम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
नवम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
दशम भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
एकादश भावस्थ बृहस्पति फल	४४१
द्वादश भाव में स्थित बृहस्पति फल	४४१
लग्नस्थ शुक्र फल	४४१
द्वितीय भाव में स्थित शुक्र फल	४४१
तृतीय भाव में स्थित शुक्र फल	४४१
चतुर्थ भावस्थ शुक्र फल	४४१
पंचम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
षष्ठ भावस्थ शुक्र फल	४४२
सप्तम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
अष्टम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
नवम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
दशम भाव में स्थित शुक्र फल	४४२
एकादश भावस्थ शुक्र फल	४४२
द्वादश भाव में स्थित शुक्र फल	४४२

4Books.com

विषय	पृष्ठांक
लग्नस्थ शनि फल	४४२
द्वितीय भाव में स्थित शनि फल	४४२
तृतीय भाव में स्थित शनि फल	४४३
चतुर्थ भावस्थ शनि फल	४४३
पंचम भाव में स्थित शनि फल	४४३
षष्ठ भावस्थ शनि फल	४४३
सप्तम भाव में स्थित शनि फल	४४३
अष्टम भाव में स्थित शनि फल	४४३
नवम भाव में स्थित शनि फल	४४३
दशम भाव में स्थित शनि फल	४४३
एकादश भावस्थ शनि फल	४४३
द्वादश भाव में स्थित शनि फल	४४३
भावों का शुभाशुभत्व विचार	४४४
केन्द्रस्थ दो ग्रह योग फल	४४४
केन्द्र में स्थित सूर्य–चन्द्र योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य भौम योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य बुध योग फल	४४४
केन्द्रस्थ सूर्य गुरु योग फल	४४५
सूर्य शुक्र योग फल	४४५
सूर्य शनि योग फल	४४५
चन्द्र भौम योग फल	४४६
चन्द्र बुध योग फल	४४६
चन्द्र गुरु योग फल	४४६
चन्द्र शुक्र योग फल	४४७
चन्द्र शनि योग फल	४४७
भौम बुध योग फल	४४७
भौम गुरु योग फल	४४७
भौम शुक्र योग फल	४४८
भौम शनि योग फल	४४८
बुध गुरु योग फल	४४८
बुध शुक्र योग फल	४४९
बुध शनि योग फल	४४९
गुरु शुक्र योग फल	४४९
गुरु शनि योग फल	४४९
शुक्र शनि योग फल	४५०
दो तीन आदि ग्रह योग	४५०
सूर्य चन्द्रमा योग फल	४५०
सूर्य भौम योग फल	४५०
सूर्य बुध योग फल	४५०
सूर्य गुरु योग फल	४५१
सूर्य शुक्र योग फल	४५१
सूर्य शनि योग फल	४५१
चन्द्र भौम योग फल	४५१
चन्द्र बुध योग फल	४५१
चन्द्र गुरु योग फल	४५१
चन्द्र शुक्र योग फल	४५१
चन्द्र शनि योग फल	४५१
भौम बुध योग फल	४५२
भौम गुरु योग फल	४५२
भौम शुक्र योग फल	४५२
भौम शनि योग फल	४५२
बुध गुरु योग फल	४५२
बुध शुक्र योग फल	४५२
बुध शनि योग फल	४५२
गुरु शुक्र योग फल	४५२
गुरु शनि योग फल	४५३
शुक्र शनि योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र मंगल योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र बुध योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र गुरु योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र शुक्र योग फल	४५३
सूर्य चन्द्र शनि योग फल	४५३
सूर्य मंगल बुध योग फल	४५३
सूर्य मंगल गुरु योग फल	४५४
सूर्य भौम शुक्र योग फल	४५४
सूर्य भौम शनि योग फल	४५४
सूर्य बुध गुरु योग फल	४५४
सूर्य बुध शुक्र योग फल	४५४
सूर्य बुध शनि योग फल	४५४
सूर्य गुरु शुक्र योग फल	४५४
सूर्य गुरु शनि योग फल	४५४
सूर्य शुक्र शनि योग फल	४५४

MBooks.com

विषय	पृष्ठांक
चन्द्र भौम बुध योग फल	४५५
चन्द्र भौम गुरु योग फल	४५५
चन्द्र भौम शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र भौम शनि योग फल	४५५
चन्द्र बुध गुरु योग फल	४५५
चन्द्र बुध शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र बुध शनि योग फल	४५५
चन्द्र गुरु शुक्र योग फल	४५५
चन्द्र गुरु शनि योग फल	४५६
चन्द्र शुक्र शनि योग फल	४५६
भौम बुध गुरु योग फल	४५६
भौम बुध शुक्र योग फल	४५६
भौम बुध शनि योग फल	४५६
भौम गुरु शुक्र योग फल	४५६
भौम गुरु शनि योग फल	४५६
भौम शुक्र शनि योग फल	४५६
बुध गुरु शुक्र योग फल	४५७
बुध गुरु शनि योग फल	४५७
बुध शुक्र शनि योग फल	४५७
गुरु शुक्र शनि योग फल	४५७
माता व पिता के सुख विचार	४५७
शुभ ग्रहों के योग फल	४५७
पाप ग्रहों के योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र मंगल बुध योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम गुरु योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम शुक्र योग फल	४५७
सूर्य चन्द्र भौम शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध गुरु योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र बुध शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र गुरु शनि योग फल	४५८
सूर्य चन्द्र शुक्र शनि योग फल	४५८
सूर्य भौम बुध गुरु योग फल	४५८
सूर्य भौम बुध शुक्र योग फल	४५९
सूर्य भौम बुध शनि योग फल	४५९

विषय	पृष्ठांक
सूर्य भौम गुरु शुक्र योग फल	४५९
सूर्य भौम गुरु शनि योग फल	४५९
सूर्य भौम शुक्र शनि योग फल	४५९
सूर्य बुध गुरु शुक्र योग फल	४५९
सूर्य बुध गुरु शनि योग फल	४५९
सूर्य बुध शुक्र शनि योग फल	४५९
सूर्य गुरु शुक्र शनि योग फल	४५९
चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल	४६०
चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र भौम बुध शनि योग फल	४६०
चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल	४६०
चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल	४६०
चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल	४६०
चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल	४६०
चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल	४६०
चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६१
भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६१
भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६१
भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम बुध शनि योग फल	४६१
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र भौम शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र बुध शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य चन्द्र गुरु शुक्र शनि योग फल	४६२
सूर्य भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६२
सूर्य मंगल बुध गुरु शनि योग फल	४६३
चन्द्र मंगल बुध शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य मंगल बुध शुक्र शनि योग फल	४६३

KBooks.com

विषय	पृष्ठांक
चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
सूर्य बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६३
चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६३
चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
भौम बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
एक राशि में सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शुक्र योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम बुध गुरु शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम बुध शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र भौम गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य चन्द्र बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
सूर्य मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६४
चन्द्र मंगल बुध गुरु शुक्र शनि योग फल	४६५
सृष्टि के समय योग	४६५
स्थावर जङ्गम की अभिव्यक्ति	४६५
मनुष्येतर जन्म ज्ञान	४६५
वर्णाकृति भेद ज्ञान का विचार	४६५
पशु शरीर में राशि विभाग का ज्ञान	४६५
वियोनि का वर्ण व चिन्ह ज्ञान	४६५
ग्रहों के वर्णों का ज्ञान	४६६
प्रकारान्तर से वर्ण का ज्ञान	४६६
पक्षी जन्म ज्ञान	४६६
वृक्ष जन्म योग	४६६
लग्नांश पति से वृक्षों से भेद का ज्ञान	४६७
वृक्ष के शुभाशुभ फल का ज्ञान	४६७
वृक्षों की संख्या का ज्ञान	४६७
वियोनि जन्म ज्ञान	४६७
वियोनि ज्ञान में विशेष कथन	४६७
चतुष्पद जन्म ज्ञान	४६८
विशेष रीति से वियोनि जन्म ज्ञान	४६८
जन्तुओं की आकृति व यमलादि का ज्ञान	४६८
एक से अधिक वियोनि जन्म ज्ञान	४६८
लोक विपरीत प्रसव ज्ञान	४६९
वृश्चिक लग्नस्थ द्विपद वा नवम नवांश फल	४६९
धनु लग्न धनु नवांश या धनु द्वादशांश फल	४६९
मकर लग्नस्थ मकर नवांश या मकर द्वादशांश फल	४६९
मीन लग्नस्थ मीन नवांश या मीन द्वादशांश फल	४६९
मेष या वृष लग्नस्थ मेष या वृष नवांश फल	४६९
गर्भाधानयोग्य रजोदर्शन	४७०
रजो दर्शन में कारण	४७०
गर्भाधान में अक्षम रजोदर्शन	४७०
स्त्री पुरुष संयोग कथन	४७०
अन्य पुरुष संयोग कथन	४७१
संभोग प्रकार का विचार	४७१
गर्भ सम्भव योग	४७१
गर्भस्थिति का स्वरूप	४७१
गर्भ में पुत्रादि का ज्ञान	४७२
पुत्र जन्म योग	४७२
नपुंसक जन्म योग कथन	४७२
यमल योग विचार	४७२
गर्भ में तीन बालकों का योग	४७३
प्रत्येक मास में गर्भ की स्थिति विचार	४७३
गर्भ के दस मासों का स्वामी	४७३
गर्भपात योग	४७३
गर्भपुष्टि ज्ञान	४७४
गर्भ सहित गर्भवती मरण विचार	४७४
गर्भ वृद्धि योग	४७४
गर्भ समय से प्रसव मास का ज्ञान	४७४
सर्वसम्मत से जन्म राशि ज्ञान	४७५
प्रसव काल का ज्ञान	४७५
प्रसवकालिक लग्नादि का ज्ञान	४७५
नेत्रहीन योग	४७५
मूक योग	४७५

AIBooks.com

विषय	पृष्ठांक
जड एवं सदन्त योग	४७५
अधिकाङ्ग योग	४७५
वामन एवं कुब्ज योग	४७६
पङ्गु योग	४७६
बिना शिर, पैर, हाथ के जन्म योग	४७६
लग्नादि से जन्मयोग का ज्ञान	४७६
प्रसव स्थान का विचार	४७६
सूतिकागृह विचार	४७७
सूतिका गृह में शयन स्थान ज्ञान	४७७
सूतिका गृह के स्वरूप ज्ञान	४७८
सूतिका की शय्या का विचार	४७८
सूतिका का भूमि शयन एवं उपसूतिका ज्ञान	४७८
दीपक की वर्त्ति व तेल का ज्ञान	४७८
अधिक दीप का ज्ञान	४७९
प्रसव के समय अन्धकार विचार	४७९
पिता की अनुपस्थिति में जन्म योग	४७९
कष्ट में प्रसव एवं माता के सुख का विचार	४८०
परजात जन्म योग	४८०
प्रसव समय में मातृकष्ट का विचार	४८०
सर्पवेष्टित जन्म योग	४८०
माता पिता का सुख योग	४८०
पुरुष–स्त्री ग्रहों के बल का ज्ञान	४८१
तीन प्रकार के अरिष्ट	४८१
तृतीय वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
द्वितीय वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
नवम वर्ष के बाद अरिष्ट योग	४८१
एक मास में अरिष्ट योग	४८१
एक वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
छठवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
चौथे वर्ष में अरिष्ट योग	४८१
दो मास में अरिष्ट योग	४८२
शीघ्र अरिष्ट योग	४८२
जन्माधिपति के द्वारा शारीरिक पीड़ा का ज्ञान	४८२
सात वर्ष में अरिष्ट का ज्ञान	४८२
दश या सोलह वर्ष में अरिष्ट का विचार	४८२
शीघ्र मरण विचार	४८२
स्वल्पकाल में मरण योग	४८२
एक, चार, आठ वर्ष में अरिष्ट योग	४८२
एक, छः, आठ वर्ष में अरिष्ट योग	४८२
नवम वर्ष में अरिष्ट योग	४८३
चतुर्थ मास में अरिष्ट का विचार	४८३
माता के साथ अरिष्ट का विचार	४८३
शीघ्र निधन अरिष्ट योग	४८३
शीघ्र अरिष्ट योग	४८३
शीघ्र अरिष्ट का ज्ञान	४८३
नवम वर्ष में अरिष्ट योग	४८४
मातृ अरिष्ट योग	४८४
पितृ अरिष्ट योग	४८४
पिता के अरिष्ट का योग	४८४
माता के साथ निधन योग	४८४
जन्म के समय पिता का स्थान	४८४
पिता का निधन योग	४८४
माता एवं जातक में एक के निधन का ज्ञान	४८५
नेत्र हानि योग	४८५
पुनः नेत्र हानि योग	४८५
कर्ण रोग का ज्ञान	४८६
चन्द्र राशि से कर्ण रोग का ज्ञान	४८६
तीन दिन जीवन योग	४८६
एक दिन का जीवन योग	४८७
सात दिन का जीवन योग	४८७
रोगारम्भ से अरिष्ट का विचार	४८७
पुनः रोगारम्भ से अरिष्ट	४८७
पुनः जन्माङ्ग से अरिष्ट योग	४८७
एक मास वा सात दिन का आयु योग	४८८
मृत जातक योग	४८८
त्रिकोण गत पापग्रह से अरिष्ट योग	४८८
शीघ्र निधन योग	४८८
१०८ वर्ष की आयु का योग	४८८

AKBooks.com

विषय	पृष्ठांक
१२० वर्ष की आयु का योग	४८८
देवतुल्य आयु योग	४८८
गतायु योग	४८९
अनुक्तकाल योगों में निधन समय का विचार	४८९
पाँचवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
ग्यारहवें वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
सात वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
चतुर्थ वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
तीन वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
नौ वर्ष में अरिष्ट योग	४८९
पाँच वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
बारह वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
सात वर्ष में अरिष्ट योग	४९०
दुर्मुहूर्त में अरिष्ट योग	४९०
अल्प समय में अरिष्ट योग	४९०
प्रत्येक राशि में चन्द्रकृत अरिष्ट योग	४९०
कथित अंशों में निधन समय का विचार	४९०
गुरुवश निधन वर्ष का विचार	४९१
राजकुलोत्पन्न राजयोग व निम्नकुलोत्पन्न राजयोग एवं धनवान् योग	४९१
क्रूरकर्मा व सत्कृत राजयोग	४९१
नीचकुल में उत्पन्न होने वाले राजयोग	४९१
नीच कुलोत्पन्न राजयोगों के बत्तीस प्रकार	४९१
अधमवंशोत्पन्न का राजयोग	४९२
अखिलभूमण्डल पालक योग	४९२
विज्ञान कुशल राजयोग	४९२
सद्भूपाल राजयोग	४९२
अधिक लक्ष्मी से युत राजयोग	४९२
इन्द्र तुल्य राजयोग	४९२
शत्रु से अजेय राजयोग	४९२
शत्रु को पराजित कर्त्ता राजयोग	४९२
स्वभुजबल से पृथ्वीपति योग	४९३
अधिराजयोग	४९३
अपारकीर्तियुत राजयोग	४९३
प्रसन्न राजयोग	४९३
इन्द्रतुल्य बलशाली राजयोग	४९३
अखण्ड भूपतियोग	४९३
यशस्वी व समस्त शत्रुहन्ता राजयोग	४९३
सार्वभौम राजयोग	४९३
देव-दानवों से वन्दित राजा	४९४
शत्रुरहित राजयोग	४९४
सार्वभौम राजयोग	४९४
सगरादि तुल्य राजयोग	४९४
तपस्वी राजयोग	४९४
बृहस्पति की बुद्धितुल्य राजयोग	४९४
दुर्वार शत्रुमारक राजयोग	४९४
यशस्वी राजयोग	४९४
अधिक हाथी रखने वाला राजा	४९४
स्वकीर्ति से दिशाओं का शुभ्रकर्त्ता राजयोग	४९५
शत्रुजेता राजयोग	४९५
सार्वभौम राजयोग	४९५
अधिक हाथी वाला राजयोग	४९५
अपूर्व यशस्वी राजयोग	४९५
निषाद कुलोत्पन्न राजयोग	४९५
महाराज योग	४९५
ग्रामीण राजयोग	४९५
अधिक यशस्वी राजयोग	४९६
नीच कुलोत्पन्न राजयोग	४९६
देवतुल्य राजयोग	४९६
नीच कुलोत्पन्न राजयोग	४९६
लक्ष्मीयुत राजयोग	४९६
प्रसिद्ध राजयोग	४९६
ब्राह्मणकुलोत्पन्न का राजयोग	४९६
गौपालक राजयोग	४९६
सकलनृप पालक राजयोग	४९६
यशस्वी राजयोग	४९७
कुत्सित राजयोग	४९७
नीचकुलोत्पन्न राजयोग	४९७
शत्रुजेता राजयोग	४९७

विषय	पृष्ठांक
निराकुल राजयोग	४९७
चक्र व समुद्र राजयोग	४९७
अधिक सम्पत्तिवान् राजयोग	४९७
नगर नामक राजयोग	४९७
प्रशान्त राजयोग	४९७
कलश संज्ञित राजयोग	४९८
पूर्ण कुम्भ नामक राजयोग	४९८
सर्ववन्दित राजयोग	४९८
स्थिर लक्ष्मीवान् राजयोग	४९८
अति लक्ष्मीवान् राजयोग	४९८
चन्द्रांशतुल्य यशस्वी राजयोग	४९८
स्वगुण प्रख्यात राजयोग	४९८
यशस्वी राजयोग	४९९
पराक्रम धन वाहन से युक्त राजयोग	४९९
सर्पराज के तुल्य प्रतापी राजयोग	४९९
राजराजेश्वर राजयोग	४९९
शत्रुजित राजयोग	४९९
लक्ष्मीपति राजयोग	४९९
ब्राह्मणकुलोत्पन्न राजयोग	४९९
अंग देशाधिप राजयोग	४९९
मगधाधिप राजयोग	४९९
शत्रुदमन राजयोग	४९९
गोप कुलोत्पन्न राजयोग	५००
समस्त भूमण्डल का स्वामी राजयोग	५००
कश्मीरमण्डलीय राजयोग	५००
तीन ओर समुद्र से वेष्टित भूमि का राजयोग	५००
प्रसिद्ध कीर्तिमान् राजयोग	५००
शत्रुजित राजयोग	५००
द्वीपाधिप राजयोग	५००
त्रिभुवनाधिप राजयोग	५००
शत्रुजित राजयोग	५००
विमल कीर्तिमान् राजयोग	५००
प्रसिद्ध यशस्वी राजयोग	५०१
स्वभुज विजयी राजयोग	५०१
अस्थिर स्वभावी राजयोग	५०१

विषय	पृष्ठांक
अजेय राजयोग	५०१
द्विज देवभक्त राजयोग	५०१
सर्ववन्दित राजयोग	५०१
स्वबाहुबल से शत्रु को जीतने वाले राजा का राजयोग	५०१
कीर्तिमान् राजयोग	५०१
पुष्कल नामक राजयोग एवं फल	५०१
शतयोजन भूमि का स्वामी	५०२
सार्वभौम राजयोग	५०२
वर्धितश्री राजयोग	५०२
शत्रुजेता राजयोग	५०२
विश्व का कल्याण करने वाला राजा	५०२
वीर राजयोग	५०२
सार्वभौम राजयोग	५०२
अतुल्य बलवान् राजयोग	५०२
अहंकारी राजयोग	५०२
कुबेर के समान धनी राजयोग	५०२
त्रिसमुद्रपारग राजयोग	५०३
सिंहासनाधिशायी राजयोग	५०३
अपने बाहुबल से पृथ्वी को जीतने वाला राजा	५०३
समस्त नृपों से वन्दित राजा	५०३
सुनफादि योग में भी राजयोग का विचार	५०३
अतुल कीर्तिमान् राजयोग	५०३
सार्वभौम राजयोग	५०३
जातक भङ्ग योग	५०३
चाण्डाल सदृशी योग	५०३
ब्राह्मण सदृशी योग	५०३
भिक्षाटन-धनरहित-नित्य लुब्ध योग	५०४
दास और भिक्षाटन योग	५०४
श्वास क्षयप्लीहगुल्मविद्रधि रोग योग	५०४
अङ्ग वैकल्य व तनु शोषण योग	५०४
सूखा रोग-अंधापन-विक्षिप्तता योग	५०४
उन्माद व स्मृति भ्रंश योग	५०५

AIBooks.com

विषय	पृष्ठांक
अन्य वसु (धन) स्त्री भोग करने वाला योग	५०५
कुलनाशक-अल्पायु-भिक्षुक योग	५०५
भिक्षाशनी-दु:खित देहभोग योग	५०६
अपस्मार (मृगी) रोग योग	५०६
'गदा' नामक योग अपस्मार रोग योग	५०६
चाण्डाल योग-कुलाचार-सत्कर्महीन योग	५०६
वाग्दोष-परिभ्रंश योग	५०६
कुलघ्न आदि योग	५०६
कुलध्वंस-विदार योग	५०७
गृह से बहिष्कृत-स्त्री-पुत्रहीन-मूर्ख योग	५०७
अति हीन वृत्ति योग	५०७
जन्मभूमि भ्रष्ट-भाग्यहीन योग	५०७
राज योग भङ्गार्थ योग	५०७
परप्रैष्य (दूत) योग	५०८
फटे-चिथड़े वस्त्र और बन्धन योग	५०८
मन्द-अक्षि रोगी योग	५०८
अन्धा योग	५०८
विकलाङ्गता-जाति भ्रष्टता योग	५०८
कुष्ठ रोगी योग	५०९
गुल्म और कण्ठ रोगी योग	५०९
उन्माद (बाबलापन) क्रोधी-कलह प्रिय योग	५०९
हृदयशूल-भाग्यहीनता योग	५०९
ज्ञान धनादि हीन-परान्नभुक्-रुग्णदेह-कलहप्रिय योग	५०९
संस्कारहानि योग	५१०
वाहन से भयप्रद योग	५१०
शारीरिक उष्णता और जल में पिता मृत्यु योग	५१०
पिता की जल में मृत्यु योग	५१०
द्विज (ब्राह्मणादि) प्रहर्ता-कर्ण रहित-शिशुघ्न योग	५१०
शिशुघ्न और मृग जाति हन्ता योग	५११
नित्य पक्षिहन्ता योग	५११
गलान्तमृत्यु और वामनयनहीन योग	५११
शिथिली भय-कृकलास भय योग	५११
कौल्यादि पातित्य-कूर्म भय-दंशभय-स्त्रियों के निद्रा से भय योग	५१२
स्त्री गमन योग	५१२
सम्भोग और सम्भोग स्थान योग	५१२
पशुसङ्ग या समान सम्भोग योग	५१३
स्त्रियों के स्तन आदि स्वरूप योग	५१३
ग्रह स्थिति योग	५१३
द्विज-देवतार्थ धन योग	५१३
विंशोत्तरी महादशा जन्मनक्षत्र से दशेश ज्ञान प्रकार	५१३
विंशोत्तरी दशा ज्ञानार्थ महा-दशान्तर्दशा चक्र	५१४
ग्रहदशा वर्ष और भुक्त भोग्य वर्ष ज्ञान प्रकार	५१५
विंशोत्तरी दशा क्रम जानने का प्रकार	५१५
पुन: अन्तर्दशा ज्ञान प्रकार	५१५
सूर्यान्तर्दशा फल	५१५
चन्द्रान्तर्दशाफल	५१५
भौमान्तर्दशा फल	५१५
राह्वन्तर्दशा फल	५१५
गुर्वन्तर्दशा फल	५१६
शन्यन्तर्दशा फल	५१६
बुधान्तर्दशा फल	५१६
केत्वन्तर्दशा फल	५१६
शुक्रान्तर्दशा फल	५१६
योगिनी दशा के स्वामी कथन	५१६
जन्मनक्षत्र वश योगिनी दशा ज्ञान	५१६
योगिनी दशा के नाम	५१६
योगिनी दशा वर्ष	५१६
अन्तर्दशा लाने में विशेष	५१७
योगिनी दशा फल	५१७
पुन: मंगलादिदशा फल	५१८

AIBooks.com

विषय	पृष्ठांक
वर्ष दशा क्रम प्रकार	५१८
ग्रहों की नित्यानित्य दशाओं का प्रकार	५१९
नित्यदशाज्ञानार्थ अन्य प्रकार	५१९
पञ्चमहापुरुष-भूत विचार	५१९
पञ्चमहापुरुष लक्षण कथन	५१९
रूचक लक्षण	५१९
भद्र लक्षण	५१९
हंस लक्षण	५२०
मालव्य लक्षण	५२०
शश लक्षण	५२०
पञ्चमहाभूत का प्रयोजन	५२०
जातक प्रकृति	५२१
पंचभूत स्वभाव लक्षण	५२१
प्रयोजन	५२२
सत्त्वादिगुणफल	५२२
गुण के प्रकार	५२२
उत्तम-मध्यम-अधम के लक्षण	५२३
उदासीन के लक्षण	५२३
गुण प्रयोजन	५२३
मेलापन विचार	५२३

[पञ्चम परिच्छेद]

सदाशिव उपासना	**५२५-५६८**
शिव और ॐकार	५२५
ॐ मंत्र का उपदेश	५२५
ॐकार मंत्र जप का काल	५२६
लिङ्ग पूजन की विशेषता वर्णन	५२७
शिवलिङ्ग पूजन विधान	५२८
शिप प्राप्ति के उपाय	५२९
शिव की वैदिक पूजन विधि	५३२
पार्थिव पूजन पद्धतिः	५३५
शिवलिंग का अभिषिञ्चन मन्त्र	५४१
शिवताण्डवस्तोत्रम्	५४२
शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्	५४३
शिवषडक्षरस्तोत्रम्	५४३
ॐकार का स्वरूप निरूपण	५४४
पञ्चकलात्मक ॐकार	५४५
पतितोद्धारक ॐकार	५४६
शिवभक्ति महिमा	५४७
नाम मन्त्र का उपेदश	५४८
शिवलिङ्ग पूजार्थ विधान	५४९
योग भेद वर्णन	५५४
योग मार्ग के विघ्नों का वर्णन	५५७
योगी के ऐश्वर्यों का वर्णन	५५८
योग योग्य स्थान आदि वर्णन	५५९
योग प्रयोग कथन	५६०
नैमित्तिक कर्म पालन	५६१
काम्य कर्म का फल	५६३
ध्यान की महिमा	५६५

□□□

44Books.com

॥श्रीः॥

रावणसंहिता

प्रथम परिच्छेद

रावण जीवन वृत्तान्त

भगवान् विष्णु से खिन्न शुक्राचार्य द्वारा मेघनाद को शिवयज्ञ के लिये उत्साहित करते हुए कल्पान्तर की घटित रावण की उत्पत्ति, उसकी तपश्चर्या आदि के साथ राम-रावण युद्ध आदि घटनाओं की कथा जैसा कहा गया है, वैसी ही कथा के आधार पर यहाँ रावण के जीवन वृत्तान्त को प्रस्तुत किया जा रहा है—

राक्षसों का वध कर जब श्रीराम ने राज्य ग्रहण किया, तब समस्त मुनिगण राम-लक्ष्मण के बल-पराक्रम की प्रशंसा करने को अयोध्या में पधारे। पूर्व दिशा के निवासी कौशिक, यकृत, गार्ग्य, गालव और मेधातिथि के पुत्र कण्ड्व, दक्षिण के निवासी स्वस्त्यात्रेय, नमुचि, अगस्त्य, सुमुख और विमुख, पश्चिम दिशा के आश्रयी नृषंगु, कवषी, धौम्य और सशिष्य कौषेय तथा उत्तर दिशा के आश्रयी—वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और भरद्वाज—ये सात ऋषि आये।

समस्त ऋषि रघुनाथजी के राजभवन पर पहुँच कर ड्योढ़ी पर खड़े हो गये। वे सभी अग्नि के समान तेजस्वी थे। द्वारपालों ने इन्हें सादर बैठाया। तब वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता, अनेक शास्त्रों में निष्णात, मुनिश्रेष्ठ धर्मात्मा अगस्त्यजी द्वारपालों से बोले—'दशरथनन्दन श्रीराम से जाकर हम मुनियों के आगमन की सूचना दो। द्वारपाल तत्क्षण ही रामचन्द्र के पास गया और ऋषि श्रेष्ठ अगस्त्य आदि के पधारने का समाचार सुनाया।

महर्षियों का आगमन सुनकर श्रीराम ने कहा—सबकों यहाँ यथा सुख से ले आओ। फिर तो वे सब ऋषिश्रेष्ठ राम के पास पहुँचे। श्रीरामचन्द्र हाथ जोड़ उठ खड़े हुए। सबका अर्घ्य, पाद्यार्घ्य से पूजन किया और बड़े आदर से सबको एक-एक गौ दान दिया।

तत्पश्चात् सबको प्रणाम करके शुद्ध भाव से उन्हें सुवर्ण के आसन पर बैठाया, जिस पर कुशासन और मृगचर्म बिछे थे। राम ने उन सबकी कुशल पछी। तब उन वेदवेत्ता महर्षियों ने कहा—हे रघुनन्दन! हे महाबाहो! आपके कुशल से हम सभी कुशलपूर्वक हैं।

AABooks.com

आपने सब लोकों को रुलाने वाले रावण का वध किया, यह सौभाग्य की बात है। हे राम! आपके लिए पुत्र, पौत्रवान् रावण का नाश करना कोई बड़ी बात न थी। नि:सन्देह आप त्रैलोक्य विजयी हैं। राक्षसेन्द्र रावण का वध कर आपको सीता सहित विजयी देखकर हम अपना सौभाग्य समझते हैं।

धर्मात्मन् लक्ष्मण आपके ऐसे हितकारी भ्राता हैं कि, माताओं और बन्धुओं सहित हम आपको सकुशल देख रहे हैं। यह तो दैवात् ही था कि आपने प्रहस्त, विकट, विरूपाक्ष, महोदर और अकम्पन आदि राक्षसों को मारा। अन्यथा ये सब तो बड़े ही दुर्धर्ष थे। कुम्भकर्ण तो ऐसा था कि जिसके समान विशालकाय भूमण्डल में कोई था ही नहीं।

दैवात् ही आपने उसे भी मार डाला। त्रिशिरा, देवान्तक, नरान्तक भी ऐसे ही थे, पर उन्हें भी आपने मार डाला। राक्षसेन्द्र रावण तो अवश्य ही था। उससे द्वन्द्व युद्ध कर आपने विजय प्राप्त की—यह भी बड़ा आनन्द हुआ। परन्तु हे वीर! रावण का पराभव उतना अशक्य नहीं था जितना इन्द्रजीत का। युद्ध में उसे मार डालना—यह तो बड़े हर्ष की बात है, क्योंकि वह मायायुद्ध करता था। उसका वध सुनकर हम लोग बड़े आश्चर्य में पड़ गये।

परन्तु हमें तो आपके जय की इच्छा थी। उससे भी आपने विजय-लाभ किया, यह हमारा सौभाग्य है। क्योंकि उसे कोई मार नहीं सकता था। आपने हमें अभय दान दिया। भवितात्मा मुनियों के इन वचनों को सुनकर राम ने भी आश्चर्यचकित होकर हाथ जोड़ लिया और पूछा कि, हे भगवन् ! महाबली रावण और कुम्भकर्ण को छोड़कर आप इन्द्रजीत की प्रशंसा क्यों कर रहे हैं?

यह रावण से बढ़ कर क्यों हुआ? अतिकाय त्रिशिरा आदि भी तो ऐसे ही दुर्धर्ष थे? इन्द्रजीत का प्रभाव, बल और पराक्रम कैसा था? उसने इन्द्र को कैसे जीता था और वह कैसे प्राप्त हुआ था? पुत्र से बलि पिता क्यों नहीं था? युद्ध में वह अपने पिता से अधिक पराक्रमी कैसे हुआ? मेरा यह निवेदन है कि मुझसे यह कथन कीजिये।

विश्रवा की उत्पत्ति प्रसङ्ग वर्णन

महात्मा राघव के इस वचन को सुनकर महातेजस्वी कुम्भयोनि अगस्त्यजी ने कहा—हे राम! सुनिये, इन्द्रजीत महत् तेजस्वी और बलवान् था जिससे उसका कोई शत्रु उसे मार नहीं सकता था, वह अपने शत्रु का वध करके ही रहता था। हे राघव! इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें पहले रावण का जन्म और उसकी वर-प्राप्ति का वर्णन करता हूँ।

पूर्व सत्युग में ब्रह्मा के एक पुत्र पुलस्त्य नामक थे। जिनके तप का प्रभाव ब्रह्माजी के ही समान था। तब एक तो उनका ऐसा तप दूसरे विमल गुणवान् भी थे। इससे ये सभी के मित्र बन गये। तप करने की इच्छा से वे मुनिश्रेष्ठ मेरुपर्वत के समीप तृणबिन्दु के आश्रम में जाकर तप करने लगे। तब उनको तप:स्वाध्याय में रत देख, वेदमंत्र श्रवण और विहार की इच्छा से बहुत-सी कन्याएँ वहाँ जाने लगीं।

उनमें अप्सराएँ भी रहती और ये सब ऋषियों, नागों और राजर्षियों की कन्याएँ थीं। इनके कारण तपस्वी पुलस्त्य के तप में विघ्न पड़ने लगा। इससे एक दिन पुलस्त्य जी ने कह दिया कि अब कल से जो कन्या यहाँ मुझे दिखाई पड़ेगी वह गर्भवती हो जायेगी। इस ब्रह्मशाप के भय से दूसरे दिन कन्याएँ वहाँ नहीं गयीं। परन्तु उनमें राजर्षि तृणबिन्दु की कन्या ने नहीं सुना था, इसलिए वह दूसरे दिन पुलस्त्यजी के आश्रम में चली गई और स्वच्छन्दता से विचरने लगी।

परन्तु उसने अन्य कन्याओं को वहाँ नहीं देखा। इससे उसे कुछ आश्चर्य हुआ। फिर भी वह राजर्षिकन्या वेद ध्वनि सुनने की इच्छा से मुनि का दर्शन करने चली गयी। किन्तु जैसे ही उन तेजस्वी मुनि को देखा, वैसे ही उसका शरीर पीला पड़ गया और वह गर्भवती हो गई। उसे अपना शरीर देखकर बड़ी व्यग्रता हुई और वह भागकर अपने पिता के आश्रम में चली आयी। यहाँ पिता ने देखते ही उससे जो समाचार पूछा तो उसने कहा—और तो कुछ नहीं।

आज पुलस्त्य मुनि के आश्रम में जाते ही मेरे अंगों में यह परिवर्तन अनायास हो आया है। मुनि ने नेत्र बन्द कर देखा तो उन्हें सबकुछ ज्ञात हो गया। वे उस कन्या को साथ ले पुलस्त्य मुनि के आश्रम पर आये और उनसे प्रार्थनापूर्वक उसे अपनी सेवकिनी बना लेने की प्रार्थना की। ब्राह्मण श्रेष्ठ पुलस्त्य जी धार्मिक राजर्षि तृणबिन्दु के उन वचनों को सुन उस कन्या को 'बहुत अच्छा' ऐसा कहकर अंगीकार किया।

कन्या को पुलस्त्य जी को सौंप राजा तृणबिन्दु अपने आश्रम में लौट आये। वह राजतनया भी अपने गुणों से पति को सन्तुष्ट कर वहाँ रहने लगी। तब एक दिन उसके शील-स्वभाव से सन्तुष्ट हो मुनिश्रेष्ठ पुलस्त्यजी उससे बोले कि 'हे सुश्रोणि! मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ, इसलिए हे देवि! आज मैं अपने ही तुल्य एक ऐसा पुत्र देता हूँ कि जो उत्तम वंशों का वर्द्धक होगा और पौलस्त्य नाम से प्रसिद्ध होगा।

परन्तु तुमने मेरी ध्वनि सुनकर गर्भ धारण किया है जिससे उसका नाम विश्रवा होगा। ऐसा वर पाकर वह देवी प्रसन्न हुई। फिर तो कुछ ही समय पश्चात् त्रिलोक विख्यात यशोधर्म समन्वित विश्रवा नामक पुत्र को प्रसव किया। यह विश्रवा भी वेदज्ञ मुनि व्रतचारी तथा अपने पिता के समान तपस्वी हुए।

वैश्रवण कुबेर की कथा

अल्पकाल में ही पुलस्त्य-पुत्र मुनिश्रेष्ठ विश्रवा अपने पिता के ही समान तप करने लगे। वे सत्यवादी, शीलवान्, जितेन्द्रिय, स्वाध्याय निरत, पवित्र, भोगों में अनासक्त और सर्वदा धर्म तत्पर रहा करते थे। जब विश्रवा के आचरण को देखकर महामुनि भरद्वाज ने अपनी देवाङ्गना तुल्य सुन्दरी कन्या का उनसे विवाह कर दिया।

फिर सन्तानेच्छुक उस कन्या से धर्मात्मामुनि विश्रवा ने एक ऐसा पुत्र उत्पन्न किया जो ब्राह्मणोचित समस्त गुणो से युक्त परम अद्भुत बलवान् था। उसके जन्म से पितामह पुलस्त्यजी को बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने अपने पौत्र में कल्याणकारिणी बुद्धि देखकर कहा कि यह तो धनाध्यक्ष होगा। फिर तो उन्होंने ही देवर्षियों सहित उसका नामकरण किया और कहा कि 'यह बालक विश्रवा से उत्पन्न हुआ है और वैसा ही है भी।

अत: इसका नाम वैश्रवण होगा। फिर तो उस महातपोवन में रहते हुए वह वैश्रवण भी बड़े तेजस्वी हुए। उन्होंने सोचा कि, धर्म की ही परमगति है। अत: मैं भी धर्माचरण करूँगा। उन्होंने कठिन व्रत के साथ हजारों वर्ष के घोर तप किए, जिसमें वे कभी जल पीकर, कभी वायु पान कर और कभी निराहार ही रह जाते थे।

इस प्रकार उन्होंने एक हजार वर्ष, एक वर्ष की भाँति व्यतीत कर दिये। तब तो ब्रह्माजी उनके इस तप को देखकर प्रसन्न हो गए और इन्द्रादिक देवताओं को साथ ले उन्हें वर देने के लिए उनके आश्रम पर पधारे और बोले—हे सुव्रत! हे वत्स! मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ, वर माँगो।

तब अपने समक्ष ब्रह्माजी को उपस्थित देख वैश्रवण ने कहा—भगवन्! मेरी इच्छा है के मैं लोकपाल बनूँ और समस्त धन मेरे पास रहे। वैश्रवण की यह बात सुनकर ब्रह्माजी को और भी प्रसन्नता हुयी और उन्होंने 'तथास्तु' कहकर उसकी प्रार्थना स्वीकार की तथा वैश्रवण से फिर बोले—हे वत्स! मैं चौथा लोकपाल रचने ही वाला था, अब तुम्हीं उस पद को स्वीकार करो। जाओ अपार धन के स्वामी बनो। इन्द्र, वरुण और यम के साथ तुम्हारा चौथा स्थान होगा।

यह सूर्य के समान तेजस्वी पुष्पक विमान है, इसे तुम अपनी सवारी के लिए लो और आज ही से देवताओं की समानता प्राप्त करो। अब मैं अपने लोक को जाता हूँ, तुम्हारा कल्याण हो।

ऐसा कहकर ब्रह्माजी अपने लोक को चले गये। ब्रह्मादि देवताओं के चले जाने पर धनेश वैश्रवणजी ने हाथ जोड़कर अपने पिता से कहा—'भगवन्! मैंने पितामह ब्रह्माजी से अभीष्ट वरदान तो प्राप्त किया है, किन्तु उन्होंने मेरे रहने का कोई

स्थान नहीं बताया है। अत: अब आप ही मेरे लिए किसी ऐसे निवास स्थान का विचार कीजिये, जहाँ रहने से किसी भी प्राणी को कष्ट न हो?' पुत्र के इस प्रकार कहने पर मुनि श्रेष्ठ विश्रवा बोले—धर्मज्ञ! सुनो। दक्षिण समुद्र के तट पर एक त्रिकूट नामक पर्वत है, जिसके शिखर पर एक विशाल पुरी है, जिसका नाम लंका है।

विश्वकर्मा ने उसे राक्षसों के लिये बनाया था। वह अमरावती के ही समान रमणीक है। अत: तुम लंका में ही निवास करो। उसके चतुर्दिक् चौड़ी खाई खुदी है और वहयन्त्रों तथा शस्त्रों से परिपूर्ण है। वह लंकापुरी रमणीय है। सुवर्ण और वैदूर्य मणि के उसके द्वार हैं। पहले उसमें राक्षस रहा करते थे। किन्तु अब विष्णु के भय से वे वहाँ से भागकर पृथ्वी के नीचे रसातल में जा बसे हैं। तुम वहाँ जामकर सुख से रहो।

वहाँ तुम्हें या और किसी को भी कोई कष्ट न होगा। तब अपने पिता विश्रवा मुनि के ऐसा कहने पर धर्मात्मा पुत्र वैश्रवण अब राक्षस की चारों ओर समुद्र से घिरी हुई लंका में प्रसन्नतापूर्वक निवास करने लगे। देवता और गन्धर्व उनका यशोगान करने लगे। उनका हृदय बड़ा विनीत था। धर्मात्मा धनेश्वर वैश्रवण पुष्पक द्वारा समय-समय पर अपने माता-पिता के समीप प्राय: आते-जाते रहते थे।

राक्षसों का पूर्व इतिहास तथा उन्हें महादेव-पार्वती का वरदान

अगस्त्यजी के कहे हुए इस वृत्तान्त को सुनकर श्रीराम विस्मित हो गये। उन्होंने बारम्बार शिर कम्पितकर अगस्त्यजी की ओर देखते हुए पूछा—हे भगवन् ! आपसे यह सुनकर कि लंका में पहले ही से राक्षस रहते थे' मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्या वे राक्षस रावण, कुम्भकर्ण आदि से भी बढ़कर बली थे? हे ब्रह्मन् ! उनके मूल पूर्वज कौन थे और उनका क्या नाम था। विष्णु से उनका क्या बैर था कि उन्होंने उन्हें मार भगाया?

तब राम के ऐसा पूछने पर अगस्त्यजी बोले—हे राम! ब्रह्माजी ने पहले जल की सृष्टि की और उसकी रक्षार्थ अनेक प्राणियों को उन्होंने उत्पन्न किया। उनमें हेति और प्रहेति नाम के दो राक्षस थे। वे दोनों भ्राता मधु-कैटभ के समान ही वीर थे। उनमें प्रहित बड़ा धार्मिक था, जो तपोवन में जाकर तप करने लगा और हेति ने विवाह के लिए बड़ा यत्न किया। उस समय काल की एक बहन थी जिसका नाम 'भया' था। अभी वह कुमारी ही थी कि उसका रूप अति भयंकर हो गया। हेति ने उसी भया के साथ विवाह किया। उससे एक पुत्र हुआ जिसका नाम विद्युत्केश था।

उसका विवाह संध्या की पुत्री से हुआ, जिसका नाम सालकटङ्कटा था। उसे पाकर निशाचर विद्युत्केश बड़ा प्रसन्न हुआ और सुख से रहने लगा। कुछ काल पश्चात्

उस संध्या पुत्री ने विद्युत्केश से गर्भ धारण किया और मन्दराचल पर जाकर वहाँ एक पुत्र प्रसव किया और उस नवजात शिशु को वहीं त्याग फिर विद्युत्केश के पास चली आयी। इधर उसका वह त्यागा हुआ पुत्र मेघ की भाँति शब्द करने लगा। फिर मुँह में मुट्ठी डालकर धीरे-धीरे रोने लगा। उसी समय वृषभारूढ़ शिव-पार्वती आकाश मार्ग से उधर होकर कहीं जा रहे थे।

उन्होंने वहाँ उस बालक के रोने का शब्द सुना। जब निकट जाकर देखा तो पार्वतीजी को बड़ी दया आई। उन्होंने उनके कहने से उस राक्षस-पुत्र का वय उसकी माता के समान कर दिया और उसे अमरत्व भी प्रदान कर दिया। महादेवजी के लिए ऐसा करना कोई बड़ी बात नहीं थी। क्योंकि वे अक्षर और अविनाशी हैं। महादेवजी ने पार्वतीजी को प्रसन्न करने के लिए एक पुर के समान एक विमान भी दे दिया और हे नृपात्मज! पार्वतीजी ने राक्षसियों को यह भी वर दे दिया कि 'राक्षसियाँ गर्भ धारण करते ही शिशु उत्पन्न करें और वह तत्क्षण माता की आयु का हो जाया करें।

हे राम! फिर तो वह विद्युत्केश का पुत्र सुकेश के नाम से प्रसिद्ध हुआ और महादेवजी के वरदान से वह बड़ा अभिमानी हो गया। अब आकाशचारी यान (विमान) और लक्ष्मी को प्राप्त कर वह सर्वत्र विचरण करने लगा।

सुकेश का वंश-विस्तार

तदनन्तर सुकेश को वरदान प्राप्त तथा धार्मिक देखकर विश्वावसु के समान तेजस्वी ग्रामणी नामक गन्धर्व ने अपनी 'देववती' रूप यौवनशालिनी कन्या, जो दूसरी लक्ष्मी के ही समान तीनों लोकों में प्रसिद्ध थी—उसे दे दी। उसमें सुकेश से अग्नि के समान शरीरधारी तीन पुत्र उत्पन्न हुए। बलवानों में श्रेष्ठ उन तीनों के क्रमशः ये नाम थे।

माल्यवान्, सुमाली और माली। सुकेश के ये तीनों पुत्र तीन लोकों के समान, तीनों अग्नियों के समान, तीनों वेदों के समान अथवा वात, पित्त, कफ के समान उग्र और भयङ्कर थे। तेजस्वी तो ऐसे थे कि शीघ्र ही बढ़कर युवा हो गये। फिर वे तीनों मेरु पर्वत पर जाकर कठोर नियमों द्वारा सब प्राणियों को भयोत्पादक तप करने लगे। उनके घोर तप से देवताओं और मनुष्यों सहित त्रैलोक्य संतप्त हो उठा। तब तो अपने विमान पर बैठकर ब्रह्माजी उन्हें वर देने आये। कहा, वर माँगो।

इस पर वे राक्षस वृक्षों की तरह थर-थर काँपते हुए हाथ जोड़कर बोले—हे देव! यदि आप हमें वर देना चाहते हैं तो हम आपसे यही माँगते हैं कि हममें परस्पर प्रीति बनी रहे और हमें कोई जीत न पावे। हम अपने शत्रुओं के संहारक हों और अजर-अमर हों। ब्राह्माजी ने कहा—तथास्तु। तुम लोग ऐसा ही होओ, सुकेश

के पुत्रों को ऐसा वर दे, ब्रह्माजी अपने लोक को चले गये। हे राम! अब वे राक्षस वरदान पाकर अत्यन्त निर्भय हो देवताओं और असुरों को सताने लगे।

देवता, महर्षि और चारण अनार्यों की भाँति अपना रक्षक ढूँढ़ने लगे। फिर उन्हें कोई रक्षक न मिला। तब वे शिल्पियों में श्रेष्ठ विश्वकर्मा के पास गए और कहा कि देवताओं की इच्छानुसार आप ही उनके गृह-निर्माणकर्त्ता हैं। अत: हम लोगों के लिए भी किसी उच्चस्थान पर एक ऐसा भवन दीजिए जो शिव-भवन के समान बड़ा विस्तृत और ऊँचा हो। तब उन महाबलवान् राक्षसों के वचन सुनकर विश्वकर्मा ने उन्हें वास करने के लिए इन्द्र के समान स्थान बतलाते हुए कहा कि—'दक्षिण समुद्र के तट पर सुवेल पर्वत के समीप ही एक त्रिकूट नाम का पर्वत है, जिसके मध्य का शिखर बड़ा ही उन्नत मेघ के सदृश दीख पड़ता है, जिसके ऊपर पक्षी भी नहीं पहुँच सकते।

उसके ऊपर तीस योजन चौड़ी और सौ योजन लम्बी एक नगरी बनी हुई है, जिसका नाम लंका है। उसकी दीवारें सोने की हैं और सुवर्ण तोरण से भूषित फाटक है। इस लंकापुरी को मैंने इन्द्र की आज्ञा से बनाया था। तुम लोग उसी में जाकर रहो। हे शत्रुओं के संहारक राक्षसों! जब तुम वहाँ बहुत से राक्षसों सहित बस जाओगे, तब शत्रुओं से दुर्धर्ष हो जाओगे। विश्वकर्मा के इन वचनों को सुनकर वे राक्षस अपने साथ सहस्त्रों सेवकों को लेकर उस नगरी में जा बसे। लंका के स्वर्णभूषित गृहों में बस कर वे बड़े हर्षित हुए।

हे राघव! इसी समय स्वेच्छया एक गन्धर्वी उत्पन्न हुई जिसका नाम नर्मदा था। उसकी तीन पुत्रियाँ थी, जो ह्री, श्री और कीर्ति के समान ही द्युतिमती थीं। उसेन अपनी तीनों पुत्रियों को क्रमश: उन तीनों राक्षसों को दे दीं। उन्होंने उनसे उत्तरा, फाल्गुनी नक्षत्र में विवाह किया। उनसे माल्यवान् ने अपनी सौन्दर्यवती सुन्दरी नामक पत्नी से वज्रमुष्टि, विरूपाक्ष, दुर्मुख, सुप्तघ्न, यज्ञकोप, मत्त और उन्मत्त ये सात पुत्र उत्पन्न किये। साथ ही उसने 'अनला' नामक एक सुन्दरी कन्या भी उत्पन्न की। फिर सुमाली की भार्या केतुमती, जो पूर्णिमा की चन्द्रमा के सामन सुन्दरी थी।

उसने अपने गर्भ से प्रहस्त, कम्पन, विकट, कालिकामुख, धूम्राक्ष, दण्ड, महाबली, सुपार्श्व, संह्रादि, प्रधर्ष और भासकर्ण ये महाबली पुत्र और कुम्भीनसी, केकसी, राका और पुष्पोत्कटा नाम की कन्याएँ भी उत्पन्न कीं। इसी प्रकार माली ने अपनी वसुधा नाम्नी सुन्दर पत्नी से अनल, अनिल, हर और सम्पाति ये चार पुत्र उत्पन्न किये। यही चारों विभीषण के मन्त्री हुए। इस प्रकार राक्षस श्रेष्ठ उन तीनों राक्षसों का परिवार बहुत बढ़ा और वे तीनों अपने सैकड़ों पुत्रों के साथ इन्द्र सहित

सब देवताओं, ऋषियों, नागों और यक्षों को सताने लगे। वे सब दुरासद राक्षस, वायु के सदृश संसार में सर्वत्र भ्रमण करते। संग्राम क्षेत्र में काल के समान अमित तेजस्वी हो जाते और वरदान के प्रभाव से गर्वित हो सर्वदा यज्ञों को नष्ट किया करते।

सुकेश के पुत्रों द्वारा सताये गये देवताओं की ओर से विष्णुजी का कुपित हो उन्हें मारने जाना

उन राक्षसों से पीड़ित होकर देवता, ऋषि और तपस्वी भय से व्याकुल हो देवदेव महादेव की शरण में गये। वहाँ जाकर उन्होंने तिपुरमर्दक कामारि शिवजी को प्रणाम किया और भय से कम्पित वाणी द्वारा यह निवेदन किया कि—'हे भगवन्! हे प्रजाध्यक्ष! ब्रह्माजी के वर से धृष्ट हो सुकेश के पुत्र सम्पूर्ण प्रजा को बड़ा कष्ट दे रहे हैं।

हमारे शरणदाता आश्रम को उन्होंने उजाड़ दिया जो अब वास करने योग्य नहीं रह गया। देवतओं को स्वर्ग से हटाकर वे स्वयं ही अधिकार कर लिये तथा देवताओं के समानही अब वे तीनों राक्षस स्वर्ग में विहार करते हैं माली, सुमाली और माल्यवान्—ये तीनों राक्षस कहते हैं कि—'विष्णु, रुद्र, ब्रह्मा, इन्द्र, यम, वरुण और सूर्य मैं ही हूँ।

अब तो उन दुर्धर्ष और अहंकारी राक्षसों के साथ रहना हमारे लिये बड़ा कठिन हो गया है; क्योंकि वे हम सबको बड़ा कष्ट दे रहे हैं। हे प्रभो! हम आपकी शरण आये हैं। उनका नाश कर, हमें अभय कीजिये।' तब उन समस्त देवताओं की इस प्रार्थना को सुनकर कपर्दी, नीललोहित महादेवजी ने कहा—देवताओं! मैं तो उन राक्षसों को न मारूँगा। क्योंकि मुझसे तो वे अवध्य हैं। परन्तु मैं तुम्हें वह उपाय बतलाता हूँ कि, उन्हें कौन मार सकेगा। हे महर्षियों! तुम लोग इसी प्रकार देवताओं सहित भगवान् विष्णु की शरण में जाओ, वे उनका नाशकर डालेंगे।

भगवान् शिवजी के ऐसा कहने पर देवता उनकी जय-जयकार कर निशाचरों के भय से पीड़ित हो विष्णुजी के पास गये। वहाँ जाकर उन्होंने शंख, चक्र, गदाधारी देवनारायण के चरणों में प्रणाम किया और व्याकुलता से कहा कि—'हे देव! सुकेश के तीनों पुत्रों ने वरदान की शक्ति से आक्रमण करके हमारे स्थान हरण कर लिये हैं। त्रिकूट पर्वत के शिखर पर लंका नाम की जो दुर्गम नगरी है, वहीं रहकर वे निशिचर हम सब देवताओं को क्लेश दे रहे हैं। हे मधूसूदन! हमारे हितार्थ आप उनका संहार करें, हम सब आपकी शरण आये हैं। आप हमारी रक्षा करें।

आपके अतिरिक्त ऐसा कोई नहीं है जो हमारी रक्षा करे। राक्षस मद से मतवाले हो रहे हैं। अत:आप अपने चक्र से उनका शिर काटकर हमें अभय कीजिये।

देवताओं के इस प्रकार के निवेदन को सुनकर देवाधिदेव जनार्दन उन्हें अभय देते हुए बोले—'शिव से दर्पित राक्षस सुकेश को मैं जानता हूँ तथा उसके पुत्रों को भी जिनमें माल्यवान् श्रेष्ठ है, मैं अपरिचित नहीं हूँ। वे अवश्य ही धर्म की मर्यादा का उल्लंघन कर रहे हैं।

मैं उनका नाश करूँगा। तुम बस चिन्ता त्याग दो।' समर्थ विष्णु से ऐसा आश्वासन पाकर देवता उनकी जय-जयकार करते हुए अपने-अपने स्थान को चले आये। जब इसका समाचार माल्यवान् को प्राप्त हुआ, तब उसने अपने दोनों भाईयों को बुलाकर विष्णुजी के कुपित होने की सब बात कह सुनाई और कहा कि अब इस विषय में हम लोग भी उचित कार्यवाही करें; क्योंकि हिरण्यकशिपु तथा अन्य देवद्रोही दैत्यों को इन्हीं विष्णु ने मारा है। नमुचि, कालनेमि, संह्लाद, राधेय, यमलार्जुन, हार्दिक्य, शुम्भ और निशुम्भ आदि बड़े-बड़े बलवान् और शक्तिशाली असुर इन्हीं के हाथ से मारे गये हैं। अब वही नारायण हमें भी मारना चाहते हैं।

अत: हम सब भी कोई उचित उपाय करें। तब ज्येष्ठ भ्राता माल्यवान् की यह बात सुनकर सुमाली और माली ने कहा—'भाई! हम लोगों ने स्वाध्याय, दान और यज्ञ किये हैं। ऐश्वर्य की रक्षा तथा उसका उपयोग भी किया है। हमने आरोग्यपद जीवन पाया है तथा अपनी कुल-परम्परागत हमने धर्म की स्थापना की है। हमने देवसेना रूपी अगाध सागर में प्रवेश करके बड़े-से-बड़े शत्रु पर भी विजय प्राप्त की है। अत: हम लोगों को मृत्यु से कोई भय नहीं है। नारायण, रुद्र, इन्द्र या यमराज कोई भी क्यों न हों, हमारे समक्ष भयातुर हैं।

परन्तु विष्णुजी हम पर क्यों कुपित हैं इसका कोई कारण नहीं ज्ञात होता। सम्भवत: देवताओं के ही उत्तेजन से उनका मन हमारी ओर से विपरीत हो गया है। अतएव हम सब एकत्र होकर आज ही सब देवताओं का वध कर डालें—यह उचित है। क्योंकि उन्हीं के कारण यह उपद्रव उपस्थित हुआ।' ऐसा विचार कर उन महाबली निशाचरों ने युद्धोद्योग की घोषणा कर दी। राक्षसों की सब सेना एकत्र होने लगी। रथ, हाथी, घोड़े, गधे, बैल, ऊँट, गरुड़ के समान पक्षी, सिंह, बाघ, सूअर और नीलगाय आदि वाहनों पर वे बलोन्मत्त निशाचर लंका छोड़कर देवलोक को चल दिये। उस समय पृथ्वी और आकाश में भयंकर उत्पात प्रकट हुए। सम्पूर्ण भूतों का लय-सा होता दिखाई पड़ा।

गीधों का समूह राक्षसों पर काल सदृश मँडराने लगा। फिर भी वे कालपाशबद्ध राक्षस नहीं लौटे और बढ़ते ही चले गये। जब देवदूतों ने राक्षसों के इस उद्योग का समाचार विष्णुजी से कहा, तब वह तत्क्षण ही सहस्र सूर्य के समान चमचमाता

कवच धारणकर, बाणों से पूर्ण दो तरकस लिये, कटिसूत्र धारण किये हुए, प्रदीप्त खड्ग उठा अपने वाहन गरुड़ पर जा बैठे और इनके अतिरिक्त उन्होंने पाञ्चजन्य शंख, सुदर्शन चक्र, कौमोदकी गदा, नंदकी खड्ग और शार्ङ्गधनुष इस प्रकार सभी श्रेष्ठ आयुधों को उन्होंने ग्रहण कर लिया।

फिर तो श्याम स्वरूप, पीताम्बर पहने और गरुड़ की पीठ पर सवार, श्रीनारायण सुमेरु पर्वत स्थित् विद्युत् मेघ के समान शोभित होते हुए राक्षसों के संहारार्थ वहाँ जा पहुँचे। उस समय सिद्ध, देवर्षि, महानाग, गन्धर्व और यक्ष उनकी स्तुति करने लगे।

देवासुर संग्राम

अब श्रीनारायण को युद्ध के लिए उद्यत देख इन राक्षसों ने उन पर अपने अस्त्र-शस्त्रों की वर्षा आरम्भ कर दी। नीलवर्ण की कान्ति वाले श्रीनारायण राक्षसों के घेरे में जा पड़े। फिर तो जैसे खेतों पर टीड्डियाँ और अग्नि पर मच्छर, मधु-घट पर डाँस और सागर में मगर गिरते हों, ऐसे ही राक्षसों के चलाये हुए वज्रवत् बाण श्रीहरि के शरीर में समाने लगे। मानों प्रलयकाल में जीव भगवान् के शरीर में समा रहे हों।

राक्षसी सेना के विविध बाणों से श्रीहरि आच्छादित हो गये। किन्तु उनके प्रहारों को उन्होंने ऐसा ही सहन किया जैसे मछलियों के वेग को समुद्र सहता है। तदनन्तर उन्होंने शार्ङ्गधनुष उठा अपने वज्रवत् बाणों से राक्षसों का संहार करना आरम्भ कर दिया और मन के समान वेगवान् पैने बाणों से श्रीविष्णुजी ने सैकड़ों-सहस्त्रों राक्षसों को मार डाला। बचे-बचाये राक्षस भाग गये। पुरुषोत्तम भगवान् विष्णु ने अपना पाञ्चजन्य शंख बजाया। उससे त्रिलोक व्यथित हो उठा। राक्षस तो और भयभीत हुए तथाकितनों को बाणों से, कितनों को अपने चक्र से मार-काट कर सर्वदा के लिये पृथ्वी पर सुला दिया।

सुमाली के सारथी का शिर काट डाला। यह देख सुमाली का भाई माली अपना धनुष तान गुरुड़ पर दौड़ा। उसके धनुष से छूटे शर विष्णुजी के शरीर में प्रवेश करने लगे। किन्तु उससे कुछ भी क्षुभित न होकर भूतभावन भगवान् ने अपना धनुर्टकोरकर माली के ऊपर कितने ही बाण बरसाकर व्याकुल कर दिये। वह युद्ध से विमुख हो गया। शंख-चक्र-गदाधारी ने उसके मुकुट, ध्वजा और धनुष को काटकर उसके रथ के घोड़ों को भी मार गिराया। अब वह अपनी प्रचण्ड गदा ले विष्णुजी से युद्ध करने चला।

उसने गरुड़ की ललाट पर गदा का प्रहार किया। गरुड़ उस प्रहार को न सह सके और विष्णुजी को उन्होंने युद्ध से विमुख कर दिया। इससे राक्षस हर्षित हो गर्जने

लगे। इस पर नारायण ने सुदर्शन चक्र चला दिया। सुदर्शन ने माली का शिर काटकर धड़ से पृथक् कर दिया। यह देख देवतओं में हर्ष ध्वनि होने लगी। माली का वध हुआ देख सुमाली और माल्यवान् शोक सन्तप्त हो सैनिकों सहित लंका की ओर भाग गये। इतने में गरुड़ भी स्वस्थ हो गये।

फिर तो वे रणभूमि में जाकर क्रोध में भरकर अपने पंखों के पवन से राक्षसों को भगाने लगे। ऊपर से विष्णुजी अपने सब अस्त्रों से उन्हें मार-काटकर चूर्ण करने लगे। राक्षसों की बड़ी दुर्गति हुई। उनका भयंकर रक्तपात हुआ। वे कटकर खण्ड-खण्ड हो गए।

राक्षस माली और माल्यवान् के मरने पर सुमाली का रसातल-वास और कुबेर का लंका में वास

इस प्रकार जब पद्मनाभ भगवान् उस राक्षसी सेना को मारते और भगाते ही चले गए, तब अपनी सेना का इस प्रकार संहार होते देख माल्यवान्, जो भागकर लंका तक पहुँचा था, फिर पीछे की ओर लौट पड़ा और क्रोध में भरकर, लाल-लाल नेत्र केये भगवान् पुरुषोत्तम पद्मनाभ से बोला—हे नारायण! तुम पुरातन क्षात्रधर्म को नहीं जानते। क्योंकि युद्ध से भयभीत हम भागे हुओं को तुम क्षुद्रवत् मार रहे हो।

युद्ध से परांमुख हुए जो मारना पाप है। ऐसा करने वाला पुण्यलोक स्वर्ग को नहीं पाता। हे शंख-चक्र-गदाधारी! यदि तेरी इच्छा युद्ध करने की ही है तो आ मैं तेरे समक्ष खड़ा हूँ। मुझ पर तू अपना बल प्रयोग करे। विष्णुजी ने उसे खड़ा हुआ देखकर कहा—तुम लोगों ने देवताओं को त्रस्त कर दिया। मैंने राक्षस नाश रूप उन्हें वर दिया है। अत: मैं इस समय राक्षसों का विनाश कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण कर रहा हूँ।

मैं तुम सबको अवश्य ही मार डालूँगा। भले ही तुम रसातल तक क्यों न जाओ, मैं तुम्हारा पीछा करूँगा। विष्णुजी ऐसा कर ही रहे थे कि उस राक्षसेन्द्र ने उन देवदेव के वक्ष:स्थल पर अनी शक्ति चला दी। सुब्रह्मण्यप्रिय कमलनाभ भगवान् ने तत्क्षण ही उस शक्ति को अपनी छाती से निकाल उसी से माल्यवान् को मारा। भगवान् गोविन्द के हाथ से उस छूटी शक्ति ने माल्यवान् का कवच काट गिराया और उसकी छाती में प्रवेश कर उसे मूर्च्छित कर दिया। कुछ क्षण पश्चात् वह उठा और निश्चल खड़ा हो गया।

फिर उसने एक काँटेदार शूल उठा विष्णुजी को मारा। साथ ही उसने दौड़कर उनकी छाती में एक घूँसा भी मारा। फिर चार हाथ पीछे हटकर गरुड़ पर भी उसने प्रहार किया। फिर तो गरुड़जी ने जो अपने पंखों की प्रचण्ड वायु उसे दी तो

वह सूखे पत्तों की ढेर से उड़े पत्ते जैसे उड़ने लगा। तब अपने बड़े माल्यवान् को भागते देख सुमाली भी लंका को भाग गया।

माल्यवान् अपनी सेना सहित लंका में जा पहुँचा। इस प्रकार कमलनाथ भगवान् ने उन राक्षसों को कई बार मारा और भगाया और जब वे विष्णुजी की समक्षता न कर सके और सताये गये, तब वे अपने बाल-बच्चों सहित लंका का निवास त्यागकर पाताल में जा बसे। फिर सुमाली को राजा बना, वहीं सालकटङ्कटा के वश में रहने लगा। हे राम! तुमने जिन पुलस्त्य वंश वाले सब राक्षसों का संहार किया है, उनमें सुमाली, माल्यवान् और वे माली बड़े ही भाग्यशाली और प्रधान थे। अधिक क्या कहें, ये सब रावण से भी अधिक बलवान् थे।

शंख-चक्र-गदाधारी भगवान् विष्णु के अतिरिक्त और कोई भी इन सुर-शत्रु राक्षसों का नाश नहीं कर सकता था। अत:तुम्हीं चार भुजाधारी, सनातन, अजेय अविनाशी और साक्षात् नारायण हो। राक्षसों का नाश करने के लिए ही तुम्हारा अवतार हुआ है। हे नराधिप! आज मैंने तुम्हें समस्त राक्षसों की जैसे उत्पत्ति हुई है सुना दी।

हे रघुत्तम! अब मैं तुम्हें रावण और उसके पुत्रों का अन्य वृत्तान्त और उनका अतुल प्रभाव सुनाता हूँ। इस प्रकार जब सुमाली रसातल में चला गया, तब श्रीकुबेरजी लंका में जा रहने लगे थे।

रावण, कुम्भकर्ण, सूर्पणखा तथा विभीषण का जन्म

कुछ दिन पश्चात् सुमाली राक्षस रसातल से निकलकर अपनी सुन्दरी कन्या सहित मनुष्यलोक में विचरने लगा। तब इस प्रकार पृथ्वी पर विचरते हुए उसने पुष्पक विमान पर आरूढ़ कुबेरजी को देखा, जो अपने पिता विश्रवा के दर्शन करने जा रहे थे। यह देख सुमाली को आश्चर्य हुआ। वह मृत्युलोक छोड़ रसातल में पहुँच अपनी पुत्री कैकसी से बोला—हे पुत्रि! अब तुम्हारे विवाह का समय हो चुका है।

अधिक क्या कहें, मानीजनों के लिए कन्या दु:ख का कारण होती है। क्योंकि यह कोई पहले से नहीं जानता कि, कन्या का विवाह कैसे वर से होगा। मातृकुल, पितृकुल और श्वसुरकुल—इन तनों कुलों को कन्या सदैव संशययुक्त रखती है। अत: अब तुम ब्रह्मा के कुल में उत्पन्न पुलस्त्य के पुत्र विश्रवा मुनि को स्वयं जाकर वरण कर लो। हे पुत्री! विश्रवा को वरण करने से तुझे कुबेर के समान ही तेजस्वी पुत्र लाभ होगा।

फिर तो वह कन्या अपने पिता के वचनों को सुन और पितृ-गौरव को स्वीकार कर जहाँ विश्रवा मुनि तपस्या कर रहे थे, वहाँ जाकर खड़ी हो गई। तब पूर्ण

चन्द्रानना उस परम सुन्दरी को देख परमोदार विश्रवा मुनि ने उस कन्या से कहा—'भद्रे! तू किसकी दुहिता है और यहाँ कैसे आई है? तब उस कन्या ने हाथ जोड़कर कहा—महाराज! यहतो आप अपने तप से ही जान सकते हैं? फिर भी मैं आपको यह बतलाती हूँ कि, मैं अपने पिता की आज्ञा से आपके पास आई हूँ और मेरा नाम कैकसी है।

शेष वृत्तान्त आप स्वयं हीं जान सकते हैं। विश्रवा मुनि ने ध्यान कर उसके आने का प्रयोजन ज्ञात कर लिया और तब उससे कहा—हे भद्रे! मैंने तेरे मन की बात जान ली। हे मत्तगजेन्द्रगामिनी! मुझसे पुत्र उत्पन्न कराने की तेरी अभिलाषा है, किन्तु इस दारुण समय में तू मेरे पास आई है।

अतः तुमसे क्रूर कर्मा राक्षस उत्पन्न होंगे। विश्रवा मुनि के ऐसे वचन सुन कैकसी ने कहा—हे भगवन् ! आप जैसे ब्रह्मवादी द्वारा मैं दुराचारी पुत्रों को नहीं चाहती। अतः आप मुझ पर कृपा कीजिये। इस पर मुनिश्रेष्ठ ने कहा—अच्छा, तेरा पिछला पुत्र मेरे वंशानुरूप धर्मात्मा होगा—इसमें कोई सन्देह नहीं है।

हे राम! फिर तो कुछ काल पश्चात् उसने बड़ा भयंकर वीभत्सरूपी राक्षस पुत्र प्रसव किया। उसके दस सिर, बड़े-बड़े दाँत और बीस भुजाएँ थीं तथा वह काले रंग का पहाड़ के समान था। उसके लाल होंठ, विशाल शिर और चमकीले बाल थे। उसके जन्मते ही पृथ्वी काँपने लगी, समुद्र खलबला उठा,, आकाश से बड़े-बड़े उल्कापात हुए।

सूर्य का प्रकाश मन्द पड़ गया और देवताओ ने रक्त की वर्षा की। तदनन्तर पितामह ब्रह्मा के समान ही उसके पिता ने उसका नामकरण किया और कहा कि इस दस शिर वाले पुत्र का नाम दसग्रीव होगा। फिर कैकसी के गर्भ से कुम्भकर्ण का जन्म हुआ जिसके समान लम्बा-चौड़ा कोई अन्य प्राणी नहीं था।

फिर विकराल मुख वाली सूर्पणखा उत्पन्न हुई और सबके पश्चात् धर्मात्मा विभीषण का जन्म हुआ। उसके जन्म के समय आकाश से पुष्प-वृष्टि हुई तथा देवताओं ने दुन्दुभी बजायी और सबने साधु-साधु कहा। कुम्भकर्ण और दसग्रीव उस महावन में बढ़ने लगे। कुम्भकर्ण बड़ा उन्मत्त हुआ।

उसको भोजन से कभी तृप्ति ही न होती थी और तीनों लोकों में घूमकर महर्षियों का भक्षण किया करता था। विभीषण बाल्यकाल से ही धर्मात्मा था। वह सर्वदा धर्म में स्थित रह स्वाध्याय करता और नियमित आहार करते हुए इन्द्रियों को अपने वश में रखता।

कुछ काल पश्चात् धनपति वैश्रवण पुष्पक विमान पर बैठ अपने पिता का

दर्शन करने के लिए वहाँ आये, जो अपने तेज से प्रदीप्त हो रहे थे। तब उन्हें देखकर राक्षस-कन्या कैकसी अपने पुत्र दशग्रीव के पास आई और बोली—हे पुत्र! अपने भाई वैश्रवण को देखा, ये कैसे तेजस्वी हैं।

क्या ही अच्छा होता यदि तुम भी अपने भाई के समान हो। यद्यपि तुम बड़े पराक्रमी हो, तथापि ऐसा प्रयत्न करो, जिससे तुम भी वैश्रवण के ही समान तेजस्वी और वैभवशाली हो जाओ।' माता की यह बात सुनकर प्रतापी दशग्रीव को बड़ा रोष हुआ।

उसने कहा—माँ! तुम चिन्ता न करो। मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहता हूँ कि, अपने पराक्रम से भाई वैश्रवण के समान या उससे भी बढ़कर हो जाऊँगा। यह कहकर उसने तपस्या करने का विचार किया और गोकर्ण के पवित्र आश्रम पर जाकर वहाँ भाईयों सहित तप करने लगा। उसने घोर तपकर ब्रह्माजी को प्रसन्न कर लिया। उन्होंने प्रसन्न होकर उसे विजयदायक वर प्रदान किया।

रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण का तप तथा वरदान

इतना सुनकर श्रीरामचन्द्रजी ने अगस्त्य मुनि से पूछा—हे ब्रह्मन! उन महाबली भाईयों ने कैसे तपस्या की? यह सुन अगस्त्यी प्रसन्न होकर बोले—हे रामजी! कुम्भकर्ण अपनी इन्द्रियों को संयमित कर धर्म-मार्ग में स्थित हुआ और ग्रीष्मकाल में अपने चारों ओर अग्नि जलाकर पञ्चाग्नि तापने लगा। फिर वर्षा ऋतु में वीरासन से बैठकर जल की वृष्टि को सहता तथा शीतकाल में जल में बैठा रहता। इस प्रकार तप करते हुए उसने दस हजार वर्ष व्यतीत कर दिये। विभीषण तो सदा से ही धर्मात्मा थे। वे नित्य धर्म-परायण हो पाँच हजार वर्षों तक एक पैर से खड़े रहे।

उनका नियम समाप्त होने पर आकाश से पुष्प वृष्टि हुई तथा देवताओं ने स्तुति की। तदनन्तर विभीषण ने स्तुति की। तदनन्तर विभीषण ने अपनी दोनों भुजाएँ मस्तक के ऊपर उठाकर स्वाध्याय-परायण हो पाँच हजार वर्षों तक सूर्य की आराधना की। इस प्रकार मन को वश किये विभीषण ने भी दश हजार वर्ष व्यतीत किये। दशग्रीव ने तो दश हजार वर्ष तक निरन्तर उपवास किया और प्रत्येक हजार वर्ष के पूर्ण होने पर वह अपना एक मस्तक काटकर अग्नि में होम कर देता था। इस प्रकार नौ हजार वर्ष व्यतीत होने तक उसके नौ मस्तक अग्निदेव को अर्पित हो गये और जब दस हजार वर्ष पूर्ण होने लगा तब उसने अपना दशवाँ मस्तक काटना चाहा, फिर तो उसी क्षण उसके समक्ष ब्रह्माजी आ उपस्थित हुए।

उनके साथ देवता भी थे। तब ब्रह्माजी ने सन्तुष्ट होकर कहा—दशग्रीव! मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हूँ, वर माँग। पितामह की यह वाणी सुनकर दशग्रीव का चित्त प्रसन्न

हो गया। उसने नत-मस्तक हो ब्रह्माजी को प्रणाम किया और हर्ष गद्‌गद वाणी में कहा—'भगवन्! प्राणियों को मृत्यु का भय सर्वदा लगा रहता है, अतएव मैं अमर होना चाहता हूँ।' ब्रह्माजी ने कहा—ऐसा नहीं हो सकता। तू और कोई वर माँग। हे राम! जब लोककर्त्ता ब्रह्माजी ने ऐसा कहा, तब दशग्रीव ने हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की—प्रजानाथ! मैं गुरुड़, नाग, यक्ष, दैत्य, दानव, राक्षस तथा देवताओं के लिये अवध्य होऊँ। अन्य प्राणियों की मुझे चिन्ता नहीं है।

मनुष्य आदि जीवों को तो मैं तृणावत् समझता हूँ। दशग्रीव के ऐसा कहने पर देवताओं सहित खड़े ब्रह्माजी ने कहा—अच्छा, ऐसा ही होगा। हे राम! दशग्रीव से ऐसा कहकर ब्रह्माजी उससे फिर बोले—हे अनाथ! मैं तेरे ऊपर अति प्रसन्न हूँ। अत: मैं अपनी ओर से भी तुझे वर देता हूँ। तूने अपने जिन सिरों को काटकर अग्नि में होम किया है, वे सिर तेरे पूर्ववत् हो जायेंगे तथा एक और भी तुझे यह दुर्लभ वर देता हूँ कि जिस समय तू जैसा रूप धारण करना चाहेगा, वैसा रूप तेरा हो जायेगा।

ब्रह्माजी के यह कहते ही राक्षस दशग्रीव के होम किए सब सिर पूर्ववत् निकल आये। हे राम! दशग्रीव को ऐसा वर दे, ब्रह्माजी विभीषण से बोले—हे वत्स विभीषण! मैं तेरी धर्म बुद्धि देखकर प्रसन्न हूँ, अत: हे सुव्रत! तू वर माँग। धर्मात्मा विभीषण ने हाथ जोड़कर कहा—हे भगवन्! जब आप लोक गुरु ब्रह्माजी स्वयं ही मुझ पर प्रसन्न हैं, तब मुझे और चाहिए ही क्या? मैं तो ऐसे ही कृतार्थ हो गया। परन्तु आप मुझे वर देना ही चाहते हैं तो हे सुव्रत! आप मुझे यह वर दें कि, परम आपदा पड़ने पर भी मेरी बुद्धि धर्म पर ही तत्पर रहे और हे भगवान्! बिना किसी के शिक्षित किये ही मुझे ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करना आ जाय और जिस आश्रम में मैं रहूँ उसके प्रति मेरी सदैव निष्ठा वृद्धि होती रहे।

हे परमोदार! मेरा यही सर्वोत्कृष्ट अभीष्ट है। ब्रह्माजी ने कहा—एवमस्तु! तुम जैसा चाहते हो सब कुछ वैसा ही होगा। राक्षस-योनियों में उत्पन्न होकर भी तुम्हारी बुद्धि अधर्म में प्रवृत्त नहीं होती, इसलिए मैं तुम्हें अमरत्व प्रदान करता हूँ। विभीषण से ऐसा कहकर जब ब्रह्माजी कुम्भकर्ण को वर देने के लिए उद्यत हुए, तब सम्पूर्ण देवताओं ने हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की—'भगवान्! आप कुम्भकर्ण को वरदान न दीजिये।' क्योंकि आपको स्वयं ज्ञात ही है कि बिना वर पाये ही वह दुष्ट तीनों लोकों को सताया करता है। नन्दनवन में सभी अप्सराओं और इन्द्र के दश सेवकों को इसने भक्षण कर डाला है। इसके भक्षण किये ऋषियों और मनुष्यों की तो गणना ही नहीं है।

जब बिना वर पाये ही इसकी यह करनी है, तब वर पाने पर तो यह समस्त

त्रिभुवन को ही चर्वण कर जायेगा। अत: हे अमितप्रभ! वर के द्वारा इसे अज्ञान प्रदान कीजिए। इससे लोक कल्याण भी होगा और इसका भी मान बना रहेगा। तब देवताओं के ऐसा कहने पर पद्म सम्भव ब्रह्माजी ने सरस्वती देवी को स्मरण किया। उनके स्मरण करते ही सरस्वती आ पहुँची और हाथ जोड़ कर बोलीं—'हे देव! मैं आ गयी हूँ, कहिए क्या आज्ञा है? ब्रह्माजी ने कहा—'वाणी! तुम राक्षसराज कुम्भकर्ण की जिह्वा पर बैठकर इसके मुँह से देवताओं के अनुकूल बात निकालो!' सरस्वती ने कहा—'बहुत अच्छा'।

यह कह सरस्वती कुम्भकर्ण के मुँह में प्रवेश कर गयी। तब ब्रह्माजी ने कहा—महाबाहु कुम्भकर्ण! तुम भी जो चाहो वर माँगो। यह सुनकर कुम्भकर्ण ने कहा—'देवदेव! मैं यह चाहता हूँ कि, मैं अनेक वर्षों तक सोता रहूँ। ब्रह्माजी ने कहा तथास्तु! ऐसा कहकर देवताओं सहित ब्रह्माजी चले गए। पश्चात् सरस्वती देवी भी उसके मुख से निकल आईं और आकाश-मण्डल में चलीं गयी। अब कुम्भकर्ण को चेत हुआ।

वह दुरात्मा दु:खी हो चिन्ता करने लगा कि, हाय! मेरे मुख से ऐसा वचन क्यों निकल गया। मुझे ज्ञात होता है कि देवताओं ने आकर मुझे ठग लिया, इस प्रकार वे सब भाई तप द्वारा ब्रह्माजी से वरदान पाकर उस श्लेष्यान्तक वन में अपने पिता के पास फिर आ गये और सुख से रहने लगे।

कुबेर का लंकापुरी त्याग कैलाश पर अलकापुरी बसाना तथा रावण का लंका प्रवेश

उधर सुमाली इन तीनों भाईयों के वरदान पाने का समाचार सुनकर मारीच, महोदर, प्रहस्त और विरूपाक्ष अपने इन मन्त्रियों और कुछ अनुचरों सहित पाताल से बाहर निकल दसग्रीव से मिलने आया। अपने प्राचीन रोष को लिये वह आकर दशग्रीव से हृदय लगाकर मिला और उसकी वर प्राप्ति की बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की तथा यह कहा कि जिस लंका नगरी में तुम्हारे भाई धनाध्यक्ष निवास करते हैं, वह हम लोगों की है।

पूर्व में वहाँ हम राक्षसों का निवास था। अब यदि साम, दाम, अथवा प्रयोग द्वारा पुन: आप उसे लौटाकर हस्तगत कर दें तो हम सबका कार्य सिद्ध हो जाय। दशग्रीव ने कहा—नानाजी! धनेश हमारे ज्येष्ठ भ्राता हैं, उनके सम्बन्ध में आप मुझसे ऐसी बात न कहें। सुमाली चुप हो गया। तब कुछ क्षण पश्चात् अवसर पाकर प्रहस्त ने नम्रता से कहा कि, हे महाबाहो! आप यह क्या कहते हैं? आप वीर हैं। वीरों का ऐसा कोई भ्रातृभाव नहीं चलता। देखिये, अदिति और दिति दोनों

सगी बहिनें हैं। उन दोनों का ही विवाह प्रजापित कश्यप से हुआ है। उनमें अदिति ने देवताओं और दिति ने दैत्यों को जन्म दिया है। पूर्व में वनों, पर्वतों और समुद्रों सहित यह समस्त पृथ्वी दैत्यों के ही अधिकार में थी। परन्तु विष्णु ने युद्ध में दैत्यों को मारकर यह समस्त त्रिलोकी देवताओं के अधीन कर दी। आशय यह कि, एक आप ही ऐसा नहीं करने जा रहे हैं, ऐसा विपरीत आचरण पहले भी हुआ है।

प्रहस्त की यह बात सुनकर दशग्रीव प्रसन्न हो गया। उसने कहा—बहुत अच्छा। फिर तो दशग्रीव उन राक्षसों को साथ लेकर त्रिकूट पर्वत पर चला गया और वहाँ से उसने प्रहस्त को दूत बनाकर लंका में भेजते हुए यह कह दिया कि—'प्रहस्त! तुम शीघ्र ही जाकर यक्षराज कुबेर से शान्तिपूर्वक कह दो कि—'हे राजन् ! यह लंकापुरी राक्षसों की है।

यदि इसे आप प्रसन्नतापूर्वक हमें लौटा दीजिये तो आपके द्वारा यह धर्म का पालन समझा जायेगा।' फिर तो प्रहस्त कुबेर पालित लंका में गया और दशग्रीव ने जैसा सिखाया था, वैसा ही उनसे प्रस्ताव किया तथा यह कहा कि पूर्वकाल में यह रमणीक लंकापुरी सुमाली आदि राक्षसों के अधिकार में थी।

अब आप इसे इनको लौटा दें। हम प्रार्थना पूर्वक याचना करते हैं। इसीलिये आपके भाई दशग्रीव ने मुझे आपके पास भेजा है। तब प्रहस्त से ऐसी बात सुनकर कुबेर ने कहा—'पहले लंका निशाचरों से सूनी थी। उस समय पिताजी मुझे इसमें रहने की आज्ञा दी और मैंने आकर इसे बसाया।

हे दूत! तुम जाकर दशग्रीव से कह दो कि, यह पुरी तथा जो कुछ अकंटक यह राज्य मेरे पास है, वह सब तुम्हारा भी है। मेरा राज्य या धन तुमसे बँटा हुआ नहीं।' यह कहकर धनाध्यक्ष अपने पिता विश्रवा मुनि के पास चले गये और सब समाचार कह सुनाया तथा पूछा कि अब मैं क्या करूँ?

यह सुन मुनिश्रेष्ठ विश्रवा ने कहा—हे पुत्र! दशग्रीव ने मुझसे भी यह बात कही थी। इस पर उस दुर्बुद्धि को मैंने बहुत डाँटा और बार-बार कहा कि, ऐसी बुद्धि से तू नष्ट हो जायेगा। परन्तु जब से वर मिला है, तबसे वह बड़ा दुष्ट हो गया है और उसके लिए मान्य अमान्य कुछ नहीं रह गया है।

मेरे शाप से उसका स्वभाव बड़ा दारुण हो गया है। अतएव अब तुम अपने अनुयायियों सहित कैलास पर्वत पर जाओ और वहीं अपनी पुरी बनाओ और लंका को त्याग दो। कैलास बड़ा राज्य स्थान है। वहाँ तुम और भी सुखी रहोगे।

हे धनद! इस राक्षस से बैर करना उचित नहीं है; क्योंकि तुम जानते ही हो कि इसे सर्वोत्कृष्ट वर प्राप्त हो चुका है। यह सुन कुबेर अपने पिता की आज्ञा मान

सपरिवार, यात्रियों, वाहनों और धन को साथ ले, कैलास पर्वत पर चले गये। फिर तो प्रहस्त ने जाकर यह समाचार दशग्रीव से कह सुनाया, जो वहाँ पर्वत पर अपने मन्त्रियों और अनुचरों सहित बैठा था। उसने कहा—लंकापुरी खाली हो गई, अब आप हम लोगों सहित उसमें चलकर प्रवेश कीजिए।

फिर दशग्रीव अपने अनुचरों सहित लंका में जा बसा। लंका में पहुँच राक्षसों ने रावण को राजतिलक दिया तथा उसने उस पुरी को फिरसे बसाया। नीले मेघ के समान राक्षसों के समूह लंका में आकर बस गये। उधर कुबेर ने कैलास पर्वत पर जाकर अति सुन्दर इन्द्र की अमरावती के समान अपनी अलकापुरी स्थापना कर उसे बसाया।

रावण को सूर्पणखा के विवाह की चिन्ता

अब रावण अभिषिक्त हो अपने भाईयों सहित अपनी बहिन सूर्पणखा के विवाह की चिन्ता में पड़ा और कालकेयवंशी दानवेन्द्र विद्युज्जिह्व के साथ उसका व्याह कर दिया। पश्चात् जब एक दिन रावण वन में शिकार खेल रहा था कि, वहाँ उसकी दृष्टि दिति के पुत्र 'मय' पर जा पड़ी। उसके साथ एक सुन्दरी कन्या भी थी। तब रावण ने जो उसका समाचार पूछा तो 'मय' अपने जीवन का सब वृत्तान्त सुनाते हुए कहा कि, यह मेरी कन्या है जो हेमा नामक अप्सरा से उत्पन्न हुई है।

मैं इसके लिए योग्य वर की खोज में इधर-उधर विचर रहा हूँ, आप कौन हैं, अपना परिचय तो दीजिए। पुलस्त्यनन्दन रावण ने ब्रह्मा की तीसरी पीढ़ी में अपने को उत्पन्न होने वाला बतलाकर कहा कि, इस प्रकार मेरा नाम दशग्रीव है। राक्षसेन्द्र के ऐसा कहने पर मय ने अपनी कन्या का हाथ दशग्रीव के हाथ में दे दिया और कहा कि यह मेरी कन्या हेमा अप्सरा से उत्पन्न हुई है, इनका नाम मन्दोदरी है, इसे आप पत्नी के रूप में ग्रहण कीजिये। दशग्रीव ने कहा—बहुत अच्छा।

फिर तो वहीं अग्नि प्रदीप्त कर उसने मन्दोदरी का पाणिग्रहण किया। मय ने उसको एक अद्भुत और अमोघ शक्ति भी प्रदान की। दशग्रीव ने उसी शक्ति से लक्ष्मण पर प्रहार किया था। इस प्रकार भार्या ग्रहण कर दशग्रीव लंका में चला गया। लंका में जाकर फिर उसने अपने दोनों भाईयों का भी विवाह किया।

कुम्भकर्ण का व्याह वैरोचन की पौत्री अर्थात् बलि की पुत्री वज्रज्वाला से और गन्धर्वराज शैलूष की धर्मज्ञा पुत्री सरमा से विभीषण का विवाह हुआ। समय पाकर मन्दोदरी के गर्भ से मेघनाद उत्पन्न हुआ। उसी को इन्द्रजीत कहा जाता है। उसने जन्म लेते ही मेघ-सा गर्जन किया था, जिससे समस्त लंकानिवासी स्तम्भित हो गए थे, इससे दशग्रीव ने उसका नाम मेघनाद रखा था।

रावण का कुबेर के दूत को मारना

अब कुछ दिनों के पश्चात् ब्रह्मा के वरदान के अनुसार कुम्भकर्ण को मूर्तिमती तीव्र निद्रा ने आ घेरा। तब उसने समीप स्थित अपने भाई रावण से कहा कि—'हे राजन! अब मुझे निद्रा बाधित कर रही है। अतएव मेरे सोने के लिए कोई पृथक् एक भवन बनवा दीजिए। यह सुन रावण ने एक योजन चौड़ा और दो योजन लम्बा एक सुन्दर गृह निर्माण करा दिया। उसका वह शयनगृहचित्र-विचित्र बड़ा ही दर्शनीय था।

महाबली कुम्भकर्ण निद्राविष्ट हो सहस्त्रों वर्षों तक उसमें पड़ा सोता ही रहा और जागा नहीं। उन दिनों रावण निरंकुश हो देवताओं, ऋषियों, यक्षों और गन्धर्वों को मारता-पीटता रहा। उसने बड़े-बड़े उपद्रव किये। तब धर्मज्ञ धनेश्वर ने अपना दूत भेजकर रावण को यह बतलाया कि—'आप अपने चरित्र को सुधारें और अपनी शक्ति को धर्म के कार्य में व्यय करें। यह सब उपद्रव करना उचित नहीं है।

अब तक जो कुछ किए हो वही बहुत है। अब तो ऐसा कोई कार्य न करो कि, जिससे कुल में दूषण लगे। अन्यथा देवता और देवर्षिगण मिलकर तुम्हारे मारने का उपाय सोच रहे हैं।' कुबेर का यह सन्देश सुनकर रावण के नेत्र मारे क्रोध के लाल हो गये। उसने अपने दाँत कटकटाते और हाथ मलते हुए दूत को यह कहकर मार दिया कि, 'धनेश्वर मेरा बड़ा भाई है इसी से क्षमा करता हूँ, अन्यथा मैं उसे मार डालता। परन्तु अब तू यहाँ से जीवित नहीं जायेगा। उसे मारकर दुष्ट रावण ने राक्षसों को खिला दिया। पश्चात् वह रावण त्रिलोकी को विजय करने चला और सर्वप्रथम कुबेर पर ही उसने आक्रमण किया।

रावण का विजय हेतु पर्यटन और कुबेर से युद्ध

तब यह देखकर कि रावण मुझसे युद्ध करने आया है, कुबेर ने यक्षों को उससे युद्ध करने की आज्ञा दी। यक्षों और राक्षसों का भयंकर युद्ध हुआ। अल्प क्षण में ही रावण के मंत्री व्यथित हो गए। रावण भी रुधिर से नहा गया, तथापि कालदण्ड के समान अपनी गदा उठाकर उसने अनेक यक्षों को मार डाला। बात की बात में उसने यक्षों की सेना को भस्म कर दिया। बहुत थोड़े ही यक्ष शेष रह गए। तब कुबेर ने फिर बहुत से यक्षों को राक्षसों से युद्ध करने के लिए भेजा।

संयोधकटक नामक बड़ी वीर यक्ष भी अपनी बड़ी बलवती सेना लेकर आ पहुँचा। उसने अपने चक्र के प्रहार से राक्षस मारीच को मारकर मूर्च्छित कर दिया। परन्तु मारीच फिर जी उठा और युद्ध कर उस यक्ष को मार भगाया। पश्चात् रावण कुबेर-पालित अलकापुरी के प्रधान द्वार पर जाकर जा लगा।

वहाँ कुबेर के सैनिक यक्षों सहित द्वारपाल से उसका युद्ध हुआ। द्वारपाल ने

उसे बहुत मारा भी, परन्तु ब्रह्मा के वरदान से वह वीर धराशायी ने हुआ। फिर तो रावण ने उस द्वारपाल को मारकर पुरी में प्रवेश किया।

रावण का कुबेर को युद्ध में परास्त कर पुष्पक विमान प्राप्त करना

तदनन्तर कुबेर ने मणिभद्र नामक महायक्ष को चार हजार यक्ष सैनिकों सहित रावण से युद्ध करने को भेजा। परन्तु रावण के मंत्री प्रहस्त और महोदर ने मिलकर दो हजार यक्षों को युद्ध में मार डाला और अकेले मारीच ने दो हजार यक्षों का संहार किया। क्योंकि राक्षसों का युद्ध माया के बल से होता था और यक्षों का सरलता युक्त था।

इससे यक्षों से राक्षस प्रबल हुए। परन्तु यक्ष मणिभद्र ने राक्षस धूम्राक्ष से बड़ा युद्ध किया। उसने अपनी गदा के प्रहारों से धूम्राक्ष को मार-काटकर पृथ्वी पर गिरा दिया। वह लहुलूहान हो मूर्च्छित हो गया। यह देख रावण मणिभद्र पर टूट पड़ा। उसने मणिभद्र पर अपनी शक्तियों का प्रहार कर उसका मुकुट काट गिराया। इससे वह यक्ष वीर युद्ध क्षेत्र से पलायन कर गया।

यह देख राक्षस सिंहनाद करने लगे। इतने में कुबेर हाथ में गदा लिये दिखाई पड़े। उनके साथ कोष-रक्षक शुक और प्रोष्टपद तथा पद्म और शंखनामक कोउ-देवता भी आए। उन्होंने आकर देखा तो पितृ-शापित रावण धृष्टता से खड़ा है और अपने ज्येष्ठ भ्राता का प्रणामादि शिष्टाचार भी नहीं करता।

तब ऐसे रावण को देख कुबेरजी ने पितामह कुलोचित वचन उससे कहा— 'हे दुर्मते! मेरे मना करने पर भी तू नहीं मानता। इसका कटुफल तू नरक में पायेगा। अब तुझे सूझ पड़ेगा। अज्ञान का कर्मफल पश्चात् पाकर समझ पड़ता है। क्या तुझे अपने क्रूर कर्मों का नितान्त ही ज्ञान नहीं रहा? अरे मूढ़! जो अपने माता-पिता, ब्राह्मण और आचार्य का अपमान करता है, उसे यमराज के यहाँ बड़ा कष्ट प्राप्त होता है।

परन्तु मैं तुमसे अधिक वार्तालाप क्या करूँ? क्योंकि मूर्ख से अधिक वार्तालाप न करना चाहिए।' ऐसा कह कुबेर ने रावण के मारीच आदि मन्त्रियों पर भयानक प्रहार कर दिया। वे ताड़ित हो युद्ध क्षेत्र त्याग पलायन कर गये। तब रावण के मन्त्रियों को भगाकर महाबलवान् कुबेर ने रावण के मस्तक पर अपनी प्रचण्ड गदा का प्रहार किया, किन्तु रावण अपने स्थान से विचलित न हुआ। अब कुबेर और रावण दोनों परस्पर युद्ध करने लगे।

रावण व्याघ्र, शूकर, मेघ, पर्वत, सागर, वृक्ष, यक्ष और दैत्य के रूपों में दृष्टि आने लगा। उसका मुख्य स्वरूप दृष्टिगोचर ही न होता। उसी समय रावण ने अपने एक विशाल अस्त्र से कुबेर की विशाल गदा को विद्ध कर दिया। साथ ही उनके

मस्तक पर भी प्रहार किया। उस प्रहार को कुबेर सहन न कर सके और रक्त वमन करते हुए वृक्ष के समान धराशायी हो गए।

यद्यपि निधि देवताओं ने कुबेर को उठाकर नन्दन वन में पहुँचाया और सचेष्ट किया। इस प्रकार धनेश्वर को परास्त कर रावण ने विजय स्वरूप उनका पुष्पक विमान छीन लिया। पुष्पक की विचित्र रचना थी। अब दुर्मति रावण उस पर आरूढ़ हो कैलास से नीचे उतरा। अब उसने अपने को ऐसा समझा मानों त्रिलोकी को विजय कर लिया।

रावण को नन्दी का शाप

हे राम! इस प्रकार रावण अपने भ्राता कुबेर को विजय कर स्वामिकार्तिक के जन्मस्थान 'शरतण' नामक सरकण्डों के विशाल वन में जा पहुँचा। वहां से आगे के पर्वतों पर चढ़कर जब वह चला तो पुष्पक की गति अवरुद्ध हो गयी। वहाँ रावण सोचने लगा कि, पुष्पक क्यों नहीं चलता है? इतने ही में अति करालरूप काले-पीले रंगों वाले अति लघुरूप उसे नन्दीश्वर दिखाई पड़े, जो बड़े ही विकट रूप मूँढ़ मुड़ाये शिव की सेवा में लगे रहने वाले थे।

उन्होंने रावण के निकट जाकर निर्भीकता से कहा 'हे दशग्रीव! यहाँ शिवजी क्रीड़ा कर रहे हैं। अतः तू यहाँ से चला जा। इस पर्वत पर चाहे गरुड़, नाग, यक्ष, देवता, गन्धर्व और राक्षस कोई भी हो, नहीं जा सकता।' नन्दी के इन वचनों को सुनकर रावण मारे क्रोध के जल गया, उसके नेत्र लाल हो गये। वह अपने कुण्डलों को हिलाता हुआ पुष्पक विमान से उतर पड़ा और यह कहता हुआ की यह कौन शंकर है? पर्वत के नीचे आ गया।

वहाँ रावण ने देखा कि, नन्दी दीप्त शूल लिये दूसरे महादेव के समान ही शंकरजी के निकट खड़े हैं। तब वानर-जैसा नन्दीश्वर का मुख देख-देख रावण अट्टहास करने लगा। यह देख नन्दी बड़े कुपित हुए। उन्होंने कहा—दशानन! तूने जो मेरे वानररूप की अवज्ञा कर अट्टहास किया है तो मेरे समान ही तेजस्वी वानर तेरे वंश का मूलोच्छेदन करने के लिये उत्पन्न होंगे।

वे ही तेरे इस प्रबल अहंकार और शारीरिक बल के दर्प को दूर करेंगे। यद्यपि मैं तुझे अभी इसी क्षण मार डालता, तथापि क्या करूँ, तू तो स्वकृत दुष्कर्मों से पूर्व ही मर चुका है। फिर मरे को मारना ही क्या है? महात्मा नन्दीश्वर के यह कहते ही देवताओं ने आकाश से दुन्दुभी बजायी और पुष्प वर्षा की। परन्तु महाबली रावण ने इसकी किञ्चित् भी चिन्ता न की।

पर्वत के निकट जा वृषभपति रुद्र की अवहेलना करने के लिए उस पर्वत

को ही उखाड़ देना चाहा और तत्क्षण ही अपनी दोनों भुजाएँ उसके भीतर प्रवेश कर पर्वत को उठा लेना चाहा। पर्वत काँपने लगा। पर्वत के कम्प से महादेवजी के समस्त गण काँप गये और पार्वतीजी भी भयभीत हो महेश्वर से चिपट गईं। हे राम! फिर महादेवजी ने बिना किसी प्रयास के ही अपने पैर के अँगूठे से उस पर्वत को दबा दिया।

पर्वत के दबाते उनके नीचे रावण की विशाल भुजाएँ पिसने लगी। वह रोष से तथा भुजाओं के दबने की पीड़ा से सहसा ऐसे वेग से चिल्लाया कि उसके चीत्कार से त्रयलोक कम्पित हो गया। वज्रपात जैसा शब्द सुनाई पड़ा। देवता विचलित हो गये, समुद्र संक्षुब्ध हो गये, पर्वत काँप उठे। तब दशान के मन्त्रियों ने उससे कहा— हे दशानन! अब तुम उमापति नीलकंठ महादेव को स्तुति से प्रसन्न करो।

यहाँ तुम्हारी रक्षा का अब कोई अन्य उपाय नहीं है। महादेव जी बड़े दयालु हैं। शरण जाते ही वह तुम पर प्रसन्न हो जायेंगे। तब दशानन ने शिवजी को प्रणाम कर सामवेद के विविध मन्त्रों द्वारा उनकी स्तुति करना प्रारम्भ किया और उस प्रकार रोते-बिलकते उसे एक सहस्त्र वर्ष व्यतीत हो गये, तब महादेवजी रावण पर प्रसन्न हुए और पर्वत से भुजाएँ निकालने का उसे अवसर दिया। साथ ही उसी दिनसे उसके उस चीत्कार के कारण उन्होंने ही उसका नाम 'राव' रख दिया और कहा कि अब तेरी जिधर इच्छा हो, चला जा।

उसी समय श्री महादेवजी को प्रसन्न देख रावण ने देवताओं, गन्धर्वों, दानवों, राक्षसों, गुह्यकों, नागों तथा अन्य प्राणियों से अपनी अवध्यता तथा ब्रह्माजी द्वारा वर प्राप्ति की बात कहकर यह निवेदन किया कि—इतने पर भी मेरी जो शेष आयु रह गई है वह मेरे किसी कार्य से नष्ट न हो, इसका मुझे वर दीजिये और अपना एक शस्त्र भी दीजिए। इस पर शंकरजी ने उसे अपना चन्द्रहास नामक महादीप्त खड्ग (तलवार) प्रदान किया तथा उसकी शेष आयु भी दे दी।

साथ ही यह भी आदेश दे दिया कि, इस खड्ग का कभी अनादर मत करना अन्यथा यह मेरे पास चला आयेगा। रावण महादेवजी को प्रणाम कर पुष्पक पर बैठ वहाँ से लौट पड़ा और पृथ्वी के सभी बलवानों और पराक्रमी क्षत्रियों को सताने लगा। कितने ही शूरवीर उसकी अवज्ञा पर मार डाले गये। बुद्धिमान् जनों ने उसे दुर्जय समझ अपनी पराजय स्वीकार कर ली।

वेदवती द्वारा रावण को शाप

हे राजन् ! अब महाबली रावण पृथ्वी पर विचरता हुआ एक दिन हिमालय के वन में जा पहुँचा। वहाँ उसने साक्षात् देवकन्या के समान एक ऐसी कन्या देखी

जो मृगचर्म धारण किये तपोनुष्ठान में रत थी। उसे देखते ही रावण कामदेव से पीड़ित हो गया और मुसका कर उसका परिचय पूछते हुए उसे विमोहित कर अपनी अभिलाषा तृप्त करना चाहा और कहा कि तेरी युवावस्था और सौन्दर्य इस प्रकार के तप के योग्य नहीं है, तू अपने इस संकल्प को त्याग दे। फिर तू यह तो बतला कि, इतना कठिन तप किसलिए करती है?

तू किसकी पुत्री है और तेरा पति कौन है? तब रावण के इस प्रकार पूछने पर उस यशस्विनी एवं तपस्विनी कन्या ने रावण का सविधि आतिथ्य करते हुए कहा कि 'मैं ब्रह्मर्षि कुशध्वज की पुत्री हूँ। मेरा नाम वेदवती है। मेरे विवाह के लिए कितने ही देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस और नाग मेरे पिता से मिले और मुझसे ब्याह कर देने की प्रार्थना की, परन्तु मेरे पिता यह चाहते थे कि उनके जामात्र सुरेश्वर विष्णु हों, अन्य नहीं। इससे बलगर्वित दैत्येन्द्र शुम्भ ने उन्हें रात्रि में सोते समय मार डाला।

मेरी महाभागा माता उनकी शव के साथ सती हो गयीं। तबसे मैं अपने पिता की इच्छानुसार श्रीविष्णु को ही अपना पति बनाने के लिए तप कर रही हूँ। जो सत्य बात थी, वह मैंने तुमसे कह दी। उन पुरुषोत्तम के अतिरिक्त मेरा कोई अन्य पति नहीं हो सकता। हे रावण! मैंने तुमको जान लिया। तुम यहाँ से चले जाओ। मैं अपने तपोबल से त्रैलोक्य में जो कुछ होता है वह सब जानती हूँ। यह सुनकर कामबाण से पीड़ित रावण विमान से उतर पड़ा और अश्लीलतापूर्वक बकता हुआ उसके केशों को पकड़ कर उससे बर्बस अपनी काम-पिपाशा शान्त करना चाहा तथा विष्णु की निन्दा भी किया।

इस पर वेदवती ने क्रोध में भरकर अपने हाथ से जो इस समय खड्ग रूप हो गये थे—अपने उन बालों को काट डाला और अपने क्रोध से अग्नि प्रदीप्त कर रावण को भस्म करती हुई उस अग्नि में प्रवेश कर गई तथा यह कह गई कि रे पापात्मा! तेरा वध करने के लिए मैं पुन: उत्पन्न होऊँगी। क्योंकि पापी पुरुष को मारना स्त्रियों के वश की बात नहीं है।

यदि मैं तुझे शाप दूँ तो मेरी तपस्या क्षीण होगी। यदि मैंने कुछ भी सुकृत किया हो तो उसके पुण्य से फिर किसी धर्मात्मा के गृह में अयोनिज जन्म धारण करूँ। ऐसा कह वेदवती उस धधकती चिता में कूद पड़ी। चिता के चारों ओर पुष्प छितरा उठे। हे प्रभो! वही वेदवती जनकराजा के गृह में कन्या रूप से उत्पन्न होकर तुम्हारी भार्या हुई है। हे महाबाहो! तुम भी वे ही सनातन विष्णु हो।

रावण का राजा मरुत् को जीतना

वेदवती के अग्नि में प्रवेश करने के पश्चात् रावण पुष्पक विमान पर बैठ

चारों ओर पृथ्वी में विचरते हुये उशीरबीज नामक उस देश में जा पहुँचा कि जहाँ देवताओं सहित राजा मरुत यज्ञ कर रहे थे और बृहस्पतिजी के सगे भ्राता धर्मज्ञ संवर्त ऋषि सब देवताओं सहित उनका यज्ञ करा रहे थे। तब वरदान से अजित रावण के वहाँ पहुँचते ही उसे देख, उसके सताने के भय से बस देवता पक्षिरूप होकर पलायन कर गए। रावण अपवित्र कुत्ते के समान उस यज्ञशाला में प्रवेश कर गया और वहाँ जाकर राजा मरुत से बोला—या तो तुम मुझसे युद्ध करो या हार मानो।

मरुत ने पूछा—तुम कौन हो? यह सुनकर रावण अट्टहास करते हुए बोला—मैं तुम्हारी सरलता पर प्रसन्न हूँ। क्योंकि तुम धनद कुबेर के लघु भ्राता मुझ रावण को नहीं पहचान रहे हो। त्रैलोक्य में मेरे बल को कौन नहीं जानता? जिस रावण ने अपने ज्येष्ठ भ्राता को पराजित कर उसका यह पुष्पक विमान छीन लिया, उसे कौन नहीं जानता? राजा मरुत ने कहा—तुम धन्य हो। वास्तव में तुम्हारे जैसा श्लाघ्य पुरुष तो त्रिलोकी में कोई नहीं है जिसने अपने बड़े भाई को युद्ध में परास्त कर दिया। भला इस पर भी तुम अपनी प्रशंसा करते हो? रे दुष्ट! खड़ा रह। अब तू मेरे समक्ष जीता नहीं जा सकता।

मैं अपने पैने बाणों से तुझे आज ही यमालय भेजता हूँ। तदनन्तर राजा मरुत धनुष बाण ले रावण से युद्ध करने के लिए यज्ञशाला से बाहर निकले। किन्तु संवर्त मुनि ने उनके आगे आकर उनका मार्ग रोक दिया और कहा—यह माहेश्वर यज्ञ है, इसमें क्रोध करना अपके कुल के लिय घातक होगा, अत: इससे युद्ध न कीजिये।

यज्ञदीक्षित पुरुष क्रोध नहीं करते। फिर यह राक्षस अजेय भी है। तब अपने गुरु की आज्ञा मानकर राजा मरुत ने रावण से युद्ध करने का विचार त्याग दिया। रावण के मन्त्री ने कहा—मरुत हार गया। फिर तो ऐसी घोषणा कर यज्ञ में आये हुए ऋषियों को खा-चबाकर, उनका रक्त पेटभर पीकर रावण पुन: पृथ्वी मण्डल पर विचरने लगा।

इक्ष्वाकुवंशी महाराज अनरण्य का रावण को शाप

अब राजा मरुत को जीतकर राक्षसाधिप युद्धकांक्षी रावण नगरों में विचरने लगा। उसने महेन्द्र और वरुण के समान श्रेष्ठ राजाओं के समीप जाकर कहा कि, या तो तुम मुझसे युद्ध करो या अपनी हार मानो। तब बुद्धिमान् राजाओं ने परस्पर गोष्ठी कर अपनी हार मान ली। क्योंकि रावण को वरदान का बल था। मरुत, महेन्द्र, वरुण, सुरथ, गाधि, गय और पुरूरवा आदि सब राजाओं ने उससे अपनी पराजय स्वीकार ली। तब रावण अयोध्यापुरी में पहुँचा।

वहाँ महाराज अनरण्य से भी उसने वैसा ही कहा। किन्तु अयोध्यापति

महाराज अनरण्य ने कहा—मैं तुझसे युद्ध करूँगा। महाराज अनरण्य ने पहले ही से रावण का वृत्तान्त सुनकर अपनी सेना सजा रखी थी। फिर तो उनकी वह सेना राक्षस के वधार्थ शीघ्र ही युद्ध के लिए निकल पड़ी। उसमें दश हजार हाथी, एक लाख घोड़े तथा सहस्रों अश्वारोही और पदाती सैनिक थे।

दोनों ओर से युद्ध हुआ। महाराज अनरण्य और राक्षसेन्द्र रावण का अद्भुत युद्ध होने लगा। किन्तु कुछ ही क्षणों में रावण के बलवान् मन्त्रियों एवं मायावी राक्षसों ने उनकी समस्त सेना को काट-मारकर बचे बचाये सैनिकों को मार पीटकर भगा दिया। पृथ्वी रक्तरंजित हो गई। युद्ध क्षेत्र में भयानक दृश्य उपस्थित हो गया। फिर महाराज अनरण्य ने राक्षसराज के शिर में आठ सौ बाण मार उसे विक्षिप्त कर देना चाहा।

किन्तु उन सब बाणों से रावण को खरोंच तक न लगी। इतने में क्रोध में भरकर रावण ने महाराज के मस्तक पर जो एक थप्पड़ लगाया तो उसे वे सहन न कर सके और जैसे वन में बिजली का मारा साखू का वृक्ष गिर पड़ता है, वैसे ही वे धराशायी हुए। आहत होने पर उन्होंने कहा—'हे राक्षस! यह तो तुमने इक्ष्वाकुकुल का अपमान किया है, इसके कारण मैं कहता हूँ कि यदि मैंने दान दिया हो, होम किया हो, तप किया हो और न्यायपूर्वक प्रजापालन किया हो तो इक्ष्वाकुकुल में दाशरथी राम उत्पन्न होकर तेरा वध करें।

महाराज अनरण्य के मुख से यह वचन निकलते ही मेघों की गर्जना के तुल्य आकाश से नगाड़े के बजने का शब्द सुनाई पड़ा और पुष्प-वृष्टि हुई। तदनन्तर महाराज अनरण्य स्वर्ग सिधारे और रावण भी चला गया।

नारद जी द्वारा रावण को यमपुर विजय की प्रेरणा

राक्षसाधिप रावण पृथ्वी पर मनुष्यों को कष्ट देता हुआ विचर रहा था कि उसने मेघ पर आरूढ़ मुनिपुङ्गव नारदजी को देखा। उसने उन्हें प्रणाम किया और कुशल पूछ आगमन का कारण पूछा। देवर्षि ने कहा—विश्रवानन्दन राक्षसेन्द्र! खड़े रहो। मैं तुम्हारे मन्त्रियों और तुम पर बड़ा प्रसन्न हूँ।

तुमने तो गन्धर्व और नागादिकों को वैसे ही पराजित कर दिया है कि जैसे विष्णु ने दैत्यों को। अतः मैं तुमसे बहुत सन्तुष्ट हूँ। अब मैं तुम्हारे हित की कुछ बात कहता हूँ, ध्यान से सुनो। हे तात! तुम तो देवताओं से भी अवध्य हो। फिर इन बेचारे मनुष्यो को क्यों मारते हो।

ये तो स्वयं ही मृत्यु के वशीभूत हैं। ये तो बेचारे स्वयं ही सदा विपत्तिग्रस्त रहते हैं और विशेषतः अपना कल्याण करने में अत्यन्त ही मूढ़ हैं। जरा आदि सैकड़ों

व्याधियों से आवृत्त रहते हैं। अत: ऐसों के मारने से क्या लाभ है? वे तो अपने सुख-दु:ख के समय को भी नहीं जानते। फिर ये सब मरकर यमपुरी ही में तो जायेंगे।

अतएव हे पौलस्त्यनन्दन! तुम यमराज की पुरी पर चढ़ाई करो। उस पुरी को जीतो; क्योंकि उसे जीतने पर ही तुम अपने से सबको जीता हुआ समझोगे। तब इस प्रकार नारद जी के समझाये जाने पर स्वतेज से दीप्त लंकापति रावण ने उन देवर्षि को प्रणाम किया और मुसकुराता हुआ कहने लगा—देवर्षि! आपका कहना यथार्थ है, मैं ऐसा ही करूँगा।

इस समय मैं विजयार्थ रसातल की यात्रा कर रहा हूँ। फिर त्रैलोक्य विजय कर नागों और देवताओं को अपना वशवर्ती बनाऊँगा और पुन: अमृत प्राप्ति के लिये समुद्र-मन्थन भी करूँगा। इस पर नारद जी ने कहा—अच्छा, यदि तुम्हें रसातल ही जाना है, तो अन्य मार्ग से क्यों जाते हो? यह मार्ग सीधे प्रेतराज के नगर यमपुरी को चला गया है, इससे तुम सीधे उनके समक्ष जा निकलोगे।

यह सुनकर रावण ने शरद्काल के मेघ के समान हँसकर कहा—बहुत अच्छा हम ऐसा ही करेंगे। अब मैं यम के वधार्थ ही इस दक्षिण दिशा के मार्ग से जाता हूँ। मेरी तो यही पूर्व प्रतिज्ञा थी कि, मैं चारों लोकपालों को विजय करूँ। उसमें सब प्राणियों को सताने वाले उस यम को मैं मारूँगा। ऐसा कह और नारदजी को प्रणाम कर रावण दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ा। नारदजी क्षण भर मौन हो विचार करते रहे। उन यमराज को कैसे यह रावण जीतेगा? इसका तो मुझे बड़ा कुतूहल है। अत: स्वयं ही चलकर यमराज और रावण का युद्ध देखूँगा।

रावण-यमराज युद्ध

यमपुरी पहुँच कर रावण ने देखा कि सब प्राणी बँधकर मारे-पीटे जा रहे हैं। सब प्राणी पुण्यों और पापों का फल पा रहे हैं। जल के स्थान में रक्त से पूर्ण अति गम्भीर वैतरणी नदी को सब पार कर रहे और बालू पर घसीटे जा रहे हैं। तब इस प्रकार के दृश्य देखते हुए रावण ने उन पापियों को, जो अपने पापकर्म फल से कष्ट भोगाये जा रहे थे, उन्हें अपने बल से मुक्त कर दिया। फिर तो रावण द्वारा जीवों को मुक्त हुआ देख यम-किन्नरों ने उस पर आक्रमण कर दिया।

यमराज के उन लाखों सैनिकों की गणना नहीं हो सकती जो अभिलषित युद्ध करने लगे। उधर रावण भी स्वयं युद्ध कर रहा था। कुछ क्षण पश्चात् सभी यम किन्नर एक स्वर से रावण पर टूट पड़े और उस पर शूलों की वर्षा करने लगे। उस शूल वर्षा से रावण का शरीर बिंध उठा और उसने रक्त स्नान सा कर लिया। परन्तु वह यमराज के सैनिकों पर बड़ी-बड़ी शिलाएँ बरसाने लगा। उधर यमकिन्नरों ने भी

अपने भी अपने भयानक प्रहारों से रावण का धनुष काट दिया और उसके कवच को तोड़ डाला।

फिर भी वह युद्ध करता ही रहा और अब वह पुष्पक विमान से उतर पृथ्वी पर खड़ा हो हाथ में दूसरा धनुष ले, दूसरे यमराज के समान, युद्ध के लिये सन्नद्ध हुआ। फिर पशुपतास्त्र को अभिमन्त्रित कर सबको ललकारते हुए रावण ने तिष्ठ-तिष्ठ कह उन पर भयानक प्रहार किया। पशुपतास्त्र का रूप धूम्र और ज्वालमाला से युक्त था।

ज्वालमाली बना रावण यम की सेना पर उसे भस्मसात् करता हुआ दौड़ रहा था। उसके उस अस्त्र के तेज से यमराज के समस्त सैनिक त्रस्त हो गिर पड़े। यह देख भयंकर विक्रमी राक्षस रावण अपने मन्त्रियों सहित पृथ्वी को कम्पित करता हुआ-सा महानाद करने लगा।

रावण के इस घोर नाद को सुनकर यमराज ने समझ लिया कि रावण की विजय हो गई और मेरी सेना नष्ट हो गई। तब वह स्वयं अपने विशाल रथ पर बैठ पाश और मुद्गर ले युद्ध करने आया। तदनन्तर सारथी ने उनके लाल रंग वाले घोड़ों को हाँका तो वह रथ घोर शब्द करता हुआ राक्षसराज रावण की ओर चल पड़ा। यम को स्वयं आता देख रावण के मंत्री भयभीत हो यत्र-तत्र पलायन करने लगे; परन्तु रावण किञ्चित् भयभीत न हुआ।

सात दिन-रात यम और रावण एक-दूसरे पर अपने अस्त्र शस्त्र से प्रहार करते रहे। परन्तु जब यमदेव ने युद्ध में इतनी दृढ़ता प्रकट की तब वह मूर्च्छित हुआ तथा उसने युद्ध से अल्प विराम लिया। किन्तु पलायन नहीं किया। यमराज ने कहा— अब मैं रावण का संहार ही कर डालूँगा। तदनन्तर यमराज ने क्रोध से अमोघ कालदण्ड को उठा रावण को मारना चाहा।

यह देख ब्रह्माजी उनके समीप आकर बोले—वैवस्वत महाबाहो! इस दण्ड को चलाकर तुम इस राक्षस को मत मारो। क्योंकि मैं इसको वरदान दे चुका हूँ। अत: मेरा वचन मिथ्या मत करो। ब्रह्माजी के ये वचन सुनकर, धर्मात्मा यमराज ने कहा— आप मेरे स्वामी हैं।

अत: मैं इस दण्ड को इस पर न चलाऊँगा; परन्तु आप ही बतलावें कि इस युद्ध में क्या करूँ? यह तो अपाके वरदानसे अवध्य ही है। अत: अब उस राक्षस की दृष्टि से मैं अदृश्य हो रहा हूँ। यह कहकर यमराज अन्तर्ध्यान हो गये। इस प्रकार रावण ने यमराज पर विजय प्राप्त की।

रावण का यमराज को जीतकर आगे बढ़ना

तदनन्तर समर-विजयी रावण समुद्र में प्रवेश कर अपने मन्त्रियों सहित

रसातल में जहाँ दैत्य और नाग रहते हैं और जिसके रक्षक वरुणदेव हैं वहाँ चला गया। तब वासुकि नाग की भोगवतीपुरी में जाकर वह नागों को जीतकर उस मणिपुरी में गया, जहाँ निवातकवच दैत्य वास करते थे। वहाँ पहुँच रावण ने सबको युद्ध की उत्तेजना दी। अतः उन्होंने बड़े हर्ष से अपने विविध अस्त्रों द्वारा रावण से महासंग्राम किया और उभय में किसी ने भी अपनी पराजय न स्वीकार की।

तब लोकपितामह ब्रह्मजी वहाँ भी शीघ्र ही पहुँचे और उन्होंने उन्हें समझा कर मित्रता करा दी। निवात कवचों ने रावण का बड़ा सत्कार किया। वहाँ रहकर रावण ने निवातों से सौ प्रकार की मात्राएँ सीखीं। फिर वरुणदेव के नगर की खोज करता हुआ रावण कालकेय दैत्यों के 'अश्म' नामक नगर में पहुँचा। कालकेय दैत्य बड़े बलवान् थे। किन्तु रावण ने उन्हें भी परास्त कर दिया। इसी युद्ध में रावण ने अपने बहनोई विद्युज्जिह्व को तलवार के घाट उतार दिया।

उस युद्ध में रावण ने क्षणमात्र में चार सौ दैत्यों को मार डाला। तदनन्तर रावण को श्वेत मेघ के सदृश वरुण का दिव्य भवन दिखाई पड़ा। रावण ने वहीं सुरभी गौ भी देखी जिसके थन से सर्वदा दूध की धार बहा करती थी। उस परम अद्भुत सुरभि की प्रदक्षिणा कर रावण ने वरुण का वह श्रेष्ठ भवन देखा जो सैन्य-सुरक्षित और बड़ा ही भयंकर था। वहाँ पहुँच कर रावण ने वरुण के सेनापतियों को ताड़ित किया तथा युद्ध कर उन्हें मार डाला।

इतने ही में महात्मा वरुण के पुत्र-पौत्र क्रुद्ध हो रावण से युद्ध करने को आ पहुँचे। फिर तो देवासुर संग्राम की भाँति दोनों ओर से आकाश में घोर युद्ध आरम्भ हुआ। वरुण की सेना ने अपने अग्निवत् बाणों को चलाकर रावण को संग्राम से विमुख कर दिया। तब उसके महोदर आदि मंत्री वरुण के पुत्रों से युद्ध करने लगे और उन्हें परास्त-सा कर दिया।

यह देख, तब तक सचेष्ट हो रावण भी उन पर प्रहार करने लगा। फिर जलधारा के समान बाण बरसा कर वरुण के पुत्रों को मारने लगा। वरुण के पुत्र युद्ध में मूर्च्छित हो गये। सारथी उन्हें उठाकर तत्क्षण घर ले आया। रावण गर्जन करने लगा साथ ही उसने वरुण के सेवकों से कहा कि तुम मेरा संदेश वरुण से जाकर कहो।

इस पर वरुण के 'प्रहास' नामक मन्त्री ने कहा—इस समय सलिलेश्वर वरुणजी गन्धर्व गान श्रवण करने के लिये ब्रह्मलोक गये हुए हैं। उनके वीर कुमारों को तो तुम परास्त ही कर चुके हो। अब वरुण महाराज की अनुपस्थिति में तुम क्या व्यर्थ परिश्रम करते हो? यह सुन रावण ने भी वहाँ भी अपने विजय की घोषणा करा दी।

रावण का बहुत-सी कन्याओं और स्त्रियों का हरण करना तथा उनसे शापित होना

वहाँ से लौटते समय दुरात्मा रावण मार्ग के राजर्षियों, देवताओं और दानवों की कन्याएँ हरण करता हुआ लंका में आया। जिसकी भी दर्शनीय कन्या सुन्दरी स्त्री को मार्ग में देखता, उसके बन्धुजनों को मारकर उसे हरकर अपने विमान में बैठा लेता। इस प्रकार उसने कितनी ही राक्षसों, असुरों, मनुष्यों, पन्नगों और यक्षों की कन्यायें अपने विमान में बैठा लीं। वे बेचारी दुःखी हो शोकार्त्त भयोत्पन्न अग्नि ज्वाला सी अश्रुधारा बहाती थीं।

एक नहीं सैकड़ों ही कन्याएँ शोक सन्तप्त ऐसा ही अश्रु प्रवाहित कर रही थीं। उनके शोक और विलाप का वर्णन नहीं हो सकता। उस सब कन्याओं और स्त्रियों ने भी रावण को यही शाप दिया कि 'यह दुर्मति पर स्त्री के कारण ही मारा जावे।' उन पतिव्रताओं के मुख से यह वाक्य निकला ही था कि, आकाश में दुन्दुभी बज उठी और पुष्पों की वर्षा भी हुई। फिर तो उन स्त्रियों के शाप से रावण का पराक्रम नष्ट हो गया और उसकी कान्ति मन्द पड़ गई।

उन पतिव्रताओं के शाप को सुन रावण उदास हो गया। इस प्रकार वह उनके विलाप और शाप सुनता हुआ लंका में आया। निशाचरों ने बड़ा स्वागत किया। परन्तु वह ज्योंही वहाँ पहुँचा कि, त्योंही उसकी बहिन उसके समक्ष आकर सहसा पृथ्वी पर गिर पड़ी। रावण ने बहिन को उठाया और परिसान्त्वना देकर पूछा कि—क्या बात है?

तब उस राक्षसी ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से उसकी ओर देख कर कहा कि तुम्हारे चौदह सहस्र कालकेय दैत्यो को मारने के समय मेरे पति को भी शत्रु समझकर मार डाला। अतः तू मेरा नाम मात्र का ही भाई है। हे राजन् तेरे कारण तुझे वैधव्य भोगना पड़ेगा। तब रावण ने उसे उठाकर धैर्य बँधाया और कहा—बहिन युद्ध में मुझे अपने और पराये का कुछ ज्ञान न था, जिससे तेरा स्वामी मेरे हाथ से मारा गया।

अब तू अपने ऐश्वर्यवान् भ्राता खर के पास जाकर रह। तेरा वह भाई खर अबसे चौदह हजार राक्षसों का स्वामी होगा। वह तेरी सब आज्ञाओं का नित्य पालन करेगा। इसके पश्चात् खर चौदह हजार भयानक राक्षसों को साथ ले तत्क्षण ही दण्डकवन को प्रस्थित हुआ। और वहाँ पहुँच कर निष्कण्टक राज्य करने लगा शूर्पणखा भी वहीं चली गयी।

खर और दूषण को जनस्थान भेजना

इस प्रकार जब दशग्रीव उस खर की घोर सेना और बहिन को सान्त्वना देकर हर्षित और स्वस्थ हुआ, तब अपने अनुचरों को साथ लेकर, वह निकुम्भिला

नामक लंका के उस उपवन में चला कि, जहाँ उसका भयंकर रूपधारी पुत्र मेघनाद काले मृग का चर्म ओढ़े हुए और दण्ड-कमण्डल लिये यज्ञ मण्डप में शोभित हो रहा था।

वहाँ रावण ने अपनी बीसों भुजाएँ फैलाकर पुत्र को हृदय से लगाया और पूछा कि 'हे पुत्र! तू यह क्या कर रहा है?' तब पुरोहित शुक्राचार्य ने रावण से कहा—तुम्हारे पुत्र ने सविस्तार सात बड़े यज्ञों का अनुष्ठान किया है। जिसमें अग्निष्टोम, अश्वमेध, बहुसुवर्णक, राजसूय, गोमेध तथा वैष्णव यज्ञ तो इसने पूर्ण कर लिये हैं।

तत्पश्चात् महेश्वर यज्ञ आरम्भ होने पर तुम्हारे पुत्र को साक्षात् महादेवजी से कई वर प्राप्त हुए हैं। एक इच्छानुसार चलने वाला दिव्यरथ भी इसने पाया है और तापसी नाम की माया भी प्राप्त हुई है जिसके द्वारा अन्धकार व्याप्त हो जाता है। यह माया जिसे प्राप्त होती है उसकी गति को देवता या असुर कोई भी नहीं जान पाते।

इसके अतिरिक्त इसे दो अक्षय तरकस, दुर्जेय धनुष तथा संग्राम में शत्रुघाती एक बड़ा ही बलाढ्य शस्त्र भी प्राप्त हुआ है। आज ही यज्ञ की समाप्ति में यह सब इसे प्राप्त हुआ है तथा हम दोनों आज ही आपसे मिलने के इच्छुक थे।' यह सुनकर रावण ने कहा—यह कार्य अच्छा नहीं हुआ। क्योंकि इसमें तो विविध उपचारों से तुमने मेरे शत्रु इन्द्रादि देवों की पूजा भी की होगी।

अच्छा, जो किया वह ठीक ही है। इसमें सन्देह नहीं कि, तुम्हें पुण्य की प्राप्ति होगी। यह कह रावण अपने पुत्र और विभीषण को साथ ले अपने भवन में आया। वहाँ उसने उन सब रोती हुई स्त्रियों को विमान से उतार दिया। तब उन सब स्त्रियों के प्रति रावण की आसक्ति जानकर धर्मात्मा विभीषण ने कहा—राजन्! आपके ये आचरण आपके सुयश, धन और कुल का नाश करने वाले हैं। हे राजन्! जिस प्रकार आपने इन स्त्रियों के बन्धुजनों को मार-पीटकर इनको हरा है, उसी प्रकार मधु दैत्य आपके मस्तक पर पाँव रखकर आपकी बहित कुम्भनसी स्त्री को हर ले गया है।'

रावण ने पूछा—तुम सब क्या करते थे? विभीषण ने उत्तर दिया—आपका पुत्र यज्ञ में लगा था। मैं जल में निवास करता था और भैया कुम्भकर्ण नींद का आनन्दले रहे थे। इसी समय महाबली मधु ने आक्रमण किया और यहाँ के प्रधान-प्रधान राक्षस मन्त्रियों को मारकर वह कुम्भीनसी को हर ले गया। यद्यपि वह अन्तःपुर में भलीभाँति सुरक्षित थी। परन्तु आप अपनी दूषित बुद्धि के कारण, पाप प्रवृत्त हुए हैं।

इस कर्म का फल आपको इसी लोक में प्राप्त हो गया। इसे आप भली प्रकार

समझ लें। तब विभीषण का यह वचन सुनकर राक्षेन्द्र रावण क्रोध से जल उठा। उसके नेत्र लाल हो गये। उसने कहा—मेरा रथ शीघ्र जोतकर लाया जाय। शूर-वीर योद्धा युद्ध के लिये सन्नद्ध हों। भाई कुम्भकर्ण और मुख्य-मुख्य निशाचर नाना प्रकार के आयुधों से सज्जित हो वाहनों पर आरूढ़ हों। मैं मधु का आज ही वधकर देवलोक की यात्रा करूँगा।

राक्षसों की चार हजार अक्षौहिणी सेना युद्ध के लिये सन्नद्ध हो गई। मेघनाद उस सेना का अग्रणी हुआ। रावण मध्य में और कुम्भकर्ण उसके पृष्ट भाग में स्थित हुआ। धर्मात्मा विभीषण अपने धर्माचार में रत लंका में रह गये। शेष सभी निशाचर मधुपुरी की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचकर दशग्रीव ने अपनी बहित कुम्भीनसी को देखा, किन्तु मधु का दर्शन नहीं हुआ।

कुम्भीनसी ने अपने भाई रावण से अपने पति मधु का जीवनदान माँगा। जब रावण हर्षित हो अपनी मौसेरी बहिन से बोला—शीघ्र बतला तेरा पति कहाँ है? मैं उसे अपने साथ लेकर जय के लिये स्वर्ग-लोक को प्रस्थान करूँगा। यह बात सुनकर कुम्भीनसी महल में सोये हुए पति को उठाकर बोली आर्यपुत्र! मेरे भाई दशग्रीव आपको स्वर्गलोक विजय पाने की इच्छा से आपको सहायक बनाना चाहते हैं।

तब पत्नी की बात सुनकर मधु ने बहुत अच्छा कहते हुए उसे स्वीकार किया और राक्षसेन्द्र के पास जाकर धर्मानुसार उसका पूजन किया। वहाँ से प्रस्थान करने के पश्चात् कैलाशपर्वत पर पहुँचते हुए सन्ध्या हो गई। इससे वहीं एक शिखर पर उसने अपनी सेना का शिविर स्थापित किया।

रावण को नलकूबर का शाप

इस प्रकार संध्या समय कैलास पर्वत के शिखर पर अपनी सेना को स्थित कर रावण स्वयं ही विश्राम करने लगा। अन्य सब सैनिक भी निद्रा विभोर हो रहे। इतने में चन्द्रोदय हुआ। महापराक्रमी रावण उठकर पर्वत शिखर पर बैठकर चन्द्रमा की प्रभा और वृक्षों के कारण वर्द्धित कैलास पर्वत की शोभा देखने लगा, जहाँ से कुबेर के भवन में गान करती हुई अप्सराओं की मधुर ध्वनि भी श्रवणगोचर हो रही थी। संगीत की तान, विविध पुष्पों की शोभा, शीतल वायु का स्पर्श, पर्वत की रमणीयता, रजनी की मधुवसा और चन्द्रोदय उद्दीपन की इन समस्त सामग्रियों के कारण रावण कामासक्त हो गया।

इसी समय सब अप्सराओं में श्रेष्ठ चन्द्रमुखी रम्भा इसी मार्ग से आ निकली। उसके सुन्दर शरीर पर दिव्य वस्त्र और आभूषण शोभ रहे थे। अङ्गों दिव्य चन्दन का अनुलेप लगा था और केशपाश में पारिजात के पुष्प गुँथे हुए थे। वह दिव्य

पुष्पों से दिव्य शृङ्गार करके किसी उत्सव में सम्मिलित होने जा रही थी। वह अपनी अलौकिक कान्ति से दूसरी लक्ष्मी के ही सदृश ज्ञात होती थी। उस समय रावण तो काम वशीभूत था ही। अतः उसने उठकर तत्क्षण ही रम्भा का हाथ पकड़ लिया।

रम्भा बहुत ही लज्जित हो गई। तथापि रावण ने मुसकाकर कहा—वरारोहे! तुम कहाँ जा रही हो। तुम्हारी क्या इच्छा है। यह समय किसे अभ्युदय का है, जो तुम्हारा उपभोग करेगा। यह सुन्दर शिला है, इस पर बैठकर विश्राम करो। हे भीरु! इस जगत् में मुझसे बढ़कर कोई नहीं है। इन्द्र, विष्णु, अश्विनीकुमार कोई भी मेरी समता नहीं कर सकते। अतः मुझे त्याग कर तेरा अन्य के पास जाना उचित नहीं। देख मैं त्रिलोकी का विधाता दशग्रीव हूँ और तुझसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ, अतः हे सुन्दरी! मेरा कहना मान ले।

रावण के ऐसे वचन सुन, रम्भा काँप उठी। उसने हाथ जोड़कर कहा—राक्षसराज! आप मुझ पर प्रसन्न होइये—मुझ पर कृपा कीजिये। आपको मुझसे ऐसी बात न कहनी चाहिये। क्योंकि आप मेरे महान् हैं, गुरु और पिता के तुल्य हैं। यदि मुझे और कोई ऐसा कहे तो आपको मेरी रक्षा करनी चाहिये। मैं धर्मतः आपकी पुत्र-वधू हूँ, यह आपसे सत्य कह रही हूँ।

मैं इस समय आपके भाई कुबेर के पुत्र नलकूबर की सेवा में जा रही हूँ और इस कार्य में विघ्न न करें। मुझे त्यागकर सज्जनों के मार्ग पर चलिए। रावण ने कहा—रम्भे! तुम अपने को मेरी पुत्र-वधू क्यों बता रही हो? यह विचार तो उस स्त्री के लिए आता है जो किसी एक पुरुष की पत्नी हो। तुम्हारे देवलोक की तो स्थिति ही कुछ और है। अप्सराओं का कोई पति नहीं होता। ऐसा कह उस निशाचर ने बलपूर्वक रम्भा को उस शिला पर बैठा लिया और कामासक्त होकर उसका उपभोग किया।

पश्चात् उस अप्सरा को उसने छोड़ दिया। वह भय कम्पित हो नलकूबर के पास चली गई और हाथ जोड़कर उसके चरणों में गिर पड़ी। नलकूबर ने कहा—'कल्याणी! यह क्या बात है?तुम मेरे पैरों पर क्यों गिर रही हो? वह थर-थर काँप रही थी। पश्चात् उसने हाथ जोड़कर, जो कुछ हुआ था वह सब बात कही। तब उस पर बलात्कार की बात सुनकर वैश्रवण कुमार नलकूबर ने ध्यान लगाकर रावण की सब बर्बरता को ज्ञात कर लिया।

उसके नेत्र क्रोध से लाल हो गये। उन्होंने तत्क्षण सविधि आचमन कर हाथ में जल ले राक्षसेन्द्र रावण को यह भयंकर शाप दिया कि—'हे भद्रे! स्त्री की इच्छा न रहने पर यदि काम पीड़ित होकर किसी स्त्री पर अत्याचार करेगा तो उसके सिर

के सात टुकड़े हो जायेंगे। नलकूबर के इस शाप को जब रावण ने सुना तब से उसने अकामा स्त्रियों पर बलात्कार करना त्याग दिया।

देवताओं और राक्षसों का युद्ध तथा सुमाली वध

इसके बाद कैलाश पर्वत को लाँघकर महातेजस्वी दशानन समस्त सेना सहित इन्द्रलोक में जा पहुँचा। रावण के आक्रमण से इन्द्र का सिंहासन डगमगा गया। फिर तो आदित्य, आठों वसु, ग्यारहों रुद्र साध्यगण तथा उनचासों देवताओं सहित उससे युद्ध करने चले।

इधर स्वयं इन्द्र भयभीत हो विष्णुजी के पास पहुँचे। ब्रह्माजी के वरदान की सब बात कह उचित मार्ग से प्रस्थान की प्रार्थना की। उन्हें उससे युद्ध करने की भी प्रेरणा दी। विष्णुजी ने कहा—अवश्य ही ब्रह्माजी से वरदान पाकर रावण इस समय बड़ा ही दुर्जय है।

तुम उससे युद्ध कर कदापि विजयी नहीं हो सकते और मैं ही इस समय उससे युद्ध करूँगा। क्योंकि शत्रु का वध किये बिना विष्णु कभी समरभूमि से नहीं आते। किन्तु रावण वरदान के बल से सुरक्षित है। इससे अभी मेरा अभीष्ट पूर्ण नहीं होगा। तथापि मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि, मैं ही इस राक्षस की मृत्यु का कारण होऊँगा।

मैं ही इसे सपरिवार मारकर देवताओं को प्रसन्न करूँगा। परन्तु अभी समय की अपेक्षा है। तुम जाकर देवताओं सहित उससे निर्भय युद्ध करो। फिर तो ग्यारहों रुद्रादि सबने कवच धारण कर राक्षसों पर आक्रमण किया। प्रातःकाल से ही भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया। राक्षसों की अपार अक्षयवाहिनी को देख देवता व्यग्र हो गये। तदनन्तर विविध आयुधधारी देवताओं, राक्षसों और दानवों का घोर तुमुल युद्ध आरम्भ हो गया।

रावण के शूरवीर और मन्त्रिगण युद्ध करने लगे। उन्होंने भीषण प्रहार कर देवताओं की सेना को मार गिराया। वे दशों दिशाओं में भाग चले। तब अपनी सेना को भागते देख अष्टम वसु, सवित्र, त्वष्टा औरपूषा तथा आदित्य देव ने बड़े साहस के साथ राक्षसों का सामना किया। युद्ध होने लगा। अब देवताओं की मार से राक्षसों की सेना त्रस्त होने लगी। यह देख राक्षस सुमाली बड़े क्रोध से उनसे युद्ध करने आया।

देवसेना नष्ट होने लगी। उसने इन देवताओं को भी मार भगाया। परन्तु सवित्र वसु फिर अपनी प्रचण्ड रथवाहिनी ले उस पर टूट पड़े। उन्होंने सुमाली के वेग को रोक दिया। सुमाली और वसु का रोमाञ्चकारी युद्ध होने लगा। फिर तो महाबली वसु ने अपने महाबाण मारकर उसके सर्परथ को खण्ड-खण्ड कर गिरा दिया, फिर

अपनी प्रचण्ड गदा के प्रहार से उन्होंने उसे मार ही डाला तथा और भी जितने आये उन सबका उन्होंने गदा से मारकर संहार कर दिया।

मेघनाद का इन्द्र को बाँधकर लंका ले आना

अब देवताओं और राक्षसों का तुमुल युद्ध होने लगा। अन्धकार की उस घोर निविड़ता में इन्द्र, रावण और मेघनाद—यह ही तीन सावधान रह सके। देवताओं ने राक्षसों का घोर संहार कर दिया। यह देख रावण अत्यन्त ही कुपित हुआ। उसने अपने सारथी सूत से कहा—तुम शीघ्र ही मेरा रथ देवताओं की सेना के उस पार उदयाचल तक चलाओ।

सूत ने शत्रु देवताओं के मध्य से ही रथ को आगे बढ़ाया। इन्द्र ने देवताओं को उत्तेजना देकर कहा—क्या कहते हो, रावण को जीवित ही पकड़ लो। क्योंकि वरदान के प्रभाव से यह मारा तो जा नहीं सकता, अत: शीघ्रता करो। देवताओं से ऐसा कह इन्द्र दूसरी ओर घूमकर राक्षसों को मारने लगे। फिर तो रावण अबाध गति से उत्तर की ओर से देवसेना में प्रवेश कर गया।

इन्द्र दक्षिण की ओर राक्षसों पर प्रहार कर रहे थे।रावण सौ योजन तक प्रवेश कर गया। उसने अपने प्रचण्ड बाणों से देवताओं को त्रस्त कर दिया, इनमें में दानवों और राक्षसों ने बड़ा हाहाकार किया कि, हा! हम सब मारे गये, इससे यह निश्चय हो गया कि इन्द्र ने रावण को पकड़ लिया। फिर तो परम क्रोधातुर हो मेघनाद उस दारुण देवसेना पर टूट पड़ा। उसने कई उत्तम बाणों से इन्द्र के सारथि को मारकर घायल कर दिया।

तब इन्द्र रथ और सारथी को वहीं त्याग ऐरावत पर जा बैठे और मेघनाद को ढूँढ़ने लगे। पर वह तो अपनी माया द्वारा अन्तरिक्ष में अदृश्य हो रहा था। इन्द्र उसकी माया में फँस गये। उसने उन्हें बाँध लिया। यह देख देवता बड़े चिन्तित हुये। यद्यपि इन्द्र स्वयं अनेक प्रकार की माया जानते थे, तथापि इन्द्रजित् उन्हें बलपूर्वक पकड़े ले गया।

इससे देवता परम कुपित हो रावण को ऐसा मारने लगे कि, वह रण से विमुख हो गया। अब उसकी युद्धशक्ति सर्वथा ही क्षीण हो गयी। बाणों की घोर वर्षा से उसका शरीर जर्जरित हो गया। उसी समय अदृश्य रह मेघनाद अन्तरिक्ष से बोला—पिताजी! आप चिन्ता न करें, हमने इन्द्र को बाँध लिया है। अब युद्ध समाप्त हो गया, चलिए घर चलें। हमने देवताओं का मानमर्दन कर दिया। त्रिलोकपति इन्द्र को हमने बाँध लिया।

यह सुन देवताओं ने युद्ध स्थगित कर दिया और इन्द्र सहित वे वहाँ से

प्रस्थान कर दिये। रावण भी अपने पुत्र की बात सुन हर्षित हो वहाँ से चलकर मेघनाद के साथ हो उसकी प्रशंसा करने लगा और कहा—हे पुत्र! तूने मेरे कुल और वंश का गौरव बढ़ाया। आज तूने देवताओं सहित इन्द्र को जीत लिया। अच्छा, अब तू इन्द्र के रथ पर चढ़ और अपनी सेना सहित लंका को चल। मैं भी तेरे पीछे-पीछे अपने मन्त्रियों सहित हर्षित होता हुआ आता हूँ। इस प्रकार मेघनाद इन्द्र को पकड़कर लंका में ले आया।

ब्रह्मा का वर दे इन्द्र को छुड़ाना

इस प्रकार जब इन्द्र पकड़ कर लंका में लाये गये, तब सब देवता ब्रह्माजी को आगे कर रावण के पास गये। वहाँ पहुँच ब्रह्माजी ने आकाश में स्थित हो, पुत्र और भ्राताओं सहित बैठे हुए रावण से कहा—वत्स रावण! मैं तेरे पुत्र की शूर वीरता से सन्तुष्ट हूँ; क्योंकि वह तुमसे भी युद्ध में श्रेष्ठ हुआ है। इस प्रकार तुमने अपने पराक्रम से तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर ली।

अत: मैं तुम दोनों ही पर प्रसन्न हूँ। हे रावण! अबतेरा यह अतिबली पुत्र संसार में इन्द्रजीत नाम से विख्यात होगा। परन्तु हे महाबलाढ्य! अब तुम इन्द्र को छोड़ दो। इसके स्थान में बोलो कि, तुम देवतओं से क्या चाहते हो? इस महाविजयी इन्द्रजीत बोला—हे देव! यदि आप इन्द्र को छुड़ाना चाहते हैं, तो इसके बदले मुझे अमरत्व प्रदान कीजिए।

ब्रह्माजी ने कहा—हे वत्स! इस पृथ्वी का कोई भी प्राणी अमर नहीं हो सकता। मेघनाद ने कहा—अच्छा, अब मुझे यह वर दीजिए कि, मैं जब कभी शत्रु पर विजय पाने की इच्छा से संग्राम में उतरूँ और मन्त्रयुक्त अग्निदेव का पूजन करूँ, उस समय अग्नि से मुझे ऐसा दिव्य रथ प्राप्त हो जाया करे कि, जिस पर बैठकर युद्ध करते हुए मुझे कोई मार न सके। हाँ, यदि मैं जप और हवन को पूर्ण किये बिना ही युद्ध करूँ तब मेरी मृत्यु हो।

इस पर ब्रह्माजी ने कहा—एवमस्तु! ऐसा ही होगा। फिर तो यह वर पाकर मेघनाद ने इन्द्र को छोड़ दिया। सब देवता उनके साथ हो स्वर्ग को चले। उस समय इन्द्र दीन से हो रहे थे। उनका देवोचित तेज लुप्त सा हो गया था और वे चिन्तामग्न हो कुछ और ही सोच रहे थे।

तब उनकी मन: स्थिति को पहचानकर ब्रह्माजी ने कहा—देवराज! यह तुम्हारे पूर्व पापों का ही फल है। अब यह शोक क्या करते हो? तुम्हें स्मरण है, तुमने उस उत्तम गुण-सम्पन्न मेरी उत्पत्ति की हुई सुन्दरी अहल्या पर, जिसे मैंने धर्मात्मा महर्षि गौतम को अर्पण किया था—कैसा अत्याचार किया था, उस समय तुम्हें मेरा कुछ भी भय न रहा और तुमने उस निरीह मुनि पत्नी का बलात्कार किया।

मुनि ने उसे अदृश्य हो जाने का शाप दिया और तुम्हें भी शापित किया। तब अहल्या की प्रार्थना पर गौतम ने कहा कि, 'इक्ष्वाकुवंश में एक तेजस्वी महारथी का अवतार होने पर कि जिनका श्रीराम नाम होगा और जब वे तपोवन में आवेंगे तब उनके दर्शन से तू पुनः पवित्र हो मुझे प्राप्त होगी और तुम्हें कहा था कि 'तू शत्रु के हाथ में पड़ेगा।'

वही तुम्हारा पाप उदय हुआ है। अब तुम वैष्णव यज्ञ कर उस पाप से निवृत्त होओ। तुम्हारा पुत्र जयन्त युद्ध में मारा नहीं गया है। उसे उसका नाना अपने साथ लेकर समुद्र में प्रवेशकर गया है। इस समय वह उन्हीं के पास विद्यामान् है।' ब्रह्माजी के वचन सुनकर देवराज ने स्वर्ग में जाकर वैष्णवयज्ञ किया और पुनः स्वर्ग का राज्य पालन रने लगे।

हे राम! इन्द्रजीत इस प्रकार का बली था। अन्यों की तो बात ही क्या है उसने देवराज इन्द्र को जीत लिया था। अगस्त्य मुनि का वचन सुन राम लक्ष्मण बड़े आश्चर्यचकित हुये। तब वानरों सहित राम के पास बैठै विभीषण ने भी कहा—हे महर्षे! अवश्य ही यह आश्चर्य की बात है, जिसे बहुत दिन पश्चात् आज मैंने यह आपसे श्रवण किया। आपका यह कथन सर्वथा ही यथार्थ है।

रावण की पराजय का इतिहास

तदनन्तर महातेजस्वी राम विस्मित हो अगस्त्यजी को प्रणाम कर बोले—हे द्विजोत्तम! जब क्रूर रावण पृथ्वी-पर्यटन करता था, तब क्या इस पृथ्वी पर कोई वीर था ही नहीं अथवा पृथ्वी वीरों से शून्य थी? राजा या राजमात्र! क्या कोई भी ऐसा पुरुष नहीं था? तब राघव के ऐसे वचनों को सुनकर भगवान् अगस्त्य ऋषि हँसकर श्रीराम से ऐसा बोले, मानों ब्रह्माजी महादेवजी से बोलते हों।

उन्होंने कहा—पृथ्वीपते! इसी प्रकार विचरता हुआ रावण एक बार स्वर्ग तुल्य अग्निदेव के स्थान जब माहिष्मतीपुरी में जा पहुँचा, तब वहाँ का राजा अर्जुन, जो अग्नि के ही सदृश प्रभावशाली था, वह अपनी स्त्रियों सहित नर्मदा पर जल विहार करने गया था। तब वहाँ पहुँच कर रावण ने उसके मन्त्रियों से पूछकर उससे भेंट करने की इच्छा प्रकट की। मन्त्रियों ने कहा कि, इस समय महाराज राजधानी में नहीं हैं।

यह सुन उस पुरी को त्याग कर रावण हिमालय के समान उस विन्ध्याचल पर आया, जो मानों पृथ्वी को फोड़कर निकाल हुआ-सा अपने सहस्रशिखरों से शोभित था और जिसकी कन्दराओं में सिंहादिक अनेकों जन्तु वास करते थे। वह स्वर्गीय उन्नतशील था। हिमालय-सा उत्तुङ्ग और विशाल कन्दराओं से युक्त था। तब

उस विन्ध्यपर्वत को देखते-देखते रावण नर्मदा नदी के तट पर जा पहुँचा, जो स्वच्छ पर्वतों पर बहती हुई पश्चिमोदधि गामिनी थी।

उसके तट पर सभी दर्शनीय प्राकृतिक दृश्य थे। वहाँ पहुँच रावण शीघ्र ही पुष्पक से उतर पड़ा और श्रेष्ठ नर्मदा नदी में स्नान करने को उद्यत हुआ। उसके शुक, सारण और मारीच नामक मन्त्रिगण भी साथ हुए। तदनन्तर उसने अनायास ही अपने मन्त्रियों से कहा—'देखो, इस समय अपने तीक्ष्ण ताप से तप्त होने वाला सूर्य आकाश के मध्य में स्थित है, तथापि मुझे यहाँ देखकर चन्द्रवत् शीतल हो गया है।

मेरे ही भय से यह वायु भी नर्मदा के जल से शीतल, सुगन्धित और श्रमनाशक होकर बड़ी सावधानी से प्रवाहित हो रहा है। तुम लोग भी इस महानदी में स्नान कर पापों से मुक्त हो जाओ। मैं भी इसके स्वच्छ पुलिन पर महादेवजी को पुष्पाञ्जलि अर्पित करूँगा।' रावण के ऐसा कहने पर उसके सब मन्त्रियों ने नर्मदा में प्रवेश कर स्नान किया और पुनः रावण के लिये पुष्पों का पर्वत-सा लगा दिया।

रावण स्नान करने नदी में प्रविष्ट हुआ। फिर स्नान कर बाहर आ सविधि मन्त्रों का जाप करते हुए जब हाथ जोड़कर चला तो सब राक्षस भी उसके पीछे-पीछे चले। राक्षसेन्द्र रावण जिधर जाता उधर ही अपने साथ एक सुवर्णमय शिवलिङ्ग ले जाता। उसने वहाँ भी बालुका में एक लिङ्ग स्थापित किया। उसकी सविधि पूजा की। फिर वह उसके समक्ष हाथ उठाकर भक्तिपूर्वक नाचने लगा और गाने लगा।

सहस्रार्जुन द्वारा रावण का बाँधा जाना

राक्षसेन्द्र रावण नर्मदा के जिस तट पर शिवजी की पुष्पों से पूजा कर रहा था, वहाँ से कुछ ही दूर हटकर माहिष्मती नगरी का राजा महाविजयी अर्जुन अपनी बहुत-सी रानियों के साथ जल-क्रीड़ा कर रहा था। उसकी सहस्र भुजाएँ थीं, जिनके परीक्षणार्थ नर्मदा के घाट के जल को रोक रहा था। तब उसकी भुजाओं से अवरुद्ध नर्मदा का जल समुद्र के द्वारा के समान उमँड़कर जिधर रावण बैठा पूजा कर रहा था उस ओर विपरीत गति से प्रवाहित होने लगा।

इससे रावण द्वारा शिव को समर्पित समस्त पुष्प प्रवाहित हो गये। रावण ने देखा, नर्मदा का जल समुद्र के द्वार के समान पश्चिम की ओर से बढ़कर पूर्व की ओर प्रवाहित हो रहा है। इसकी पूजा भी अभी समाप्त न हो पायी थी, कि आधे में ही जल की बाढ़ के कारण उसे अपनी पूजा समाप्त कर देनी पड़ी। वह नर्मदा की ओर घूमकर देखने लगा।

देखा तो जल की धारा पश्चिम से पूर्व की ओर अग्रसर है और अल्प समय में ही नदी शान्तपथ से पूर्ववत् प्रवाहित होने लगी। यह देख रावण मुख से कुछ न

बोला, किन्तु अपने दाहिने हाथ की अँगुली से शुक और सारण को नदी की बाढ़ का कारण ज्ञात करने के लिए संकेत किया।

वे दोनों भाई पश्चिम की ओर आकाश में उड़े। उड़ते-उड़ते जब आधा योजन निकल गये तब देखा कि, एक पुरुष स्त्रियों के साथ जलविहार कर रहा है, तो साल वृक्ष के समान परमोन्नत है, जिसके केश खुले हुए हैं और नेत्र मदात्य से लाल हो रहे हैं और वह अति मद्यपान से मतवाला हो रहा है तथा जैसे अपने सहस्त्रों चरणों से सुमेरु पर्वत पृथ्वी को दबाये हुए हो, ऐसे ही अर्जुन की सहस्त्रों भुजाओं से नदी का जल अवरुद्ध है।

वह बलवान् सहस्त्रों श्रेष्ठ स्त्रियों से समावृत्त है। शुक और सारण उस अद्भुत दृश्य को देखकर शीघ्र ही लौटे और रावणसे सब देखा हुआ वृत्तान्त का। शुक और सारण के इस प्रकार कहने पर रावण बोल उठा—'वही अर्जुन है।' तदनन्तर रावण अपने मन्त्रियों सहित युद्ध की लालसा से उधर की ओर चला और शीघ्र ही वहाँ जा पहुँचा, जहाँ अर्जुन जलक्रीड़ा कर रहा था।

वह अञ्जन के समान काला और बड़ा ही बलवान् था। वहाँ पहुँच कर उसने अर्जुन को स्त्रियों से आवृत्त जल विहार करते हुए वैसी देखा जैसे बहुत-सी हथिनियों के साथ कोई गजेन्द्र जल विहार करता हो। राजा अर्जुन को देखते ही राक्षसराज रावण के नेत्र क्रोध से ला हो गये। उसने अर्जुन के मन्त्रियों से गम्भीर वाणी में यह कहा—'मन्त्रियों! तुम लोग दैत्यराज अर्जुन से कहो कि, तुमसे युद्ध करने के लिए रावण आया है।'

मन्त्रियों ने कहा—'इस समय महाराज स्त्रियों के मध्य में हैं और ऐसी स्थिति में आप युद्ध करना चाहते हैं? आज के दिन क्षमा कीजिए और रात भर ठहर जाइये। कल अर्जुन से मिलकर युद्ध कर लीजियेगा। और यदि आपको युद्ध करने की बड़ी शीघ्रता हो तो हम सबको संग्राम में मारकर यमराज के पास पहुँचा जाइए।' यह सुन रावण के मन्त्रियों ने अर्जुन के कितने मन्त्रियों को मार डाला और कितने ही को भूखे होने के कारण खा डाला।

उभय मन्त्रियों के युद्ध से नर्मदा तट पर बड़ा कोलाहल मच गया। अर्जुन के पक्ष के योद्धा रावण के पक्ष वालों पर और रावण के पक्ष वाले वीर तथा मंत्रिगण अर्जुन के पक्ष वालों पर बाण, तोमर, भाले, त्रिशूल और वज्र आदिक अस्त्र शस्त्रों का प्रहार करने लगे। जब यह समाचार वीर राजा अर्जुन को मिला तो वह अपने साथ क्रीड़ित स्त्रियों से बोला—'तुम सब किञ्चित् भी भयभीत न होना।'

ऐसा कह उन सबको जल से बाहर निकाला और क्रुद्ध विकृत नेत्रों से अपनी

गदा ले तीव्रता से राक्षसों पर टूट पड़ा। परन्तु तत्क्षण ही विन्ध्य के सदृश अचल प्रहस्त हाथ में मूसल ले उसके समक्ष जा पहुँचा। उसने उस लौह जटित मूसल से अर्जुन पर प्रहार किया। फिर यम-सी भीषण गर्जना की। किन्तु अस्त्रकुशल अर्जुन ने तनिक भी चिन्ता न की और अपनी गदा से उसके प्रहार को व्यर्थ कर दिया।

उस गदाघातों से प्रहस्त धाराशायी हुआ। प्रहस्त को धराशायी हुआ देख मारीच, शुक, सारण महोदर और धूम्राक्ष युद्ध क्षेत्र से पलायन कर गये। यह देख स्वयं रावण ने वीर श्रेष्ठ अर्जुन पर आक्रमण किया। सहस्त्र भुजाधारी नरनाथ और बीज भुजाधारी निशाचरनाथ को रोमाञ्चकारी युद्ध होने लगा। दोनों ही सिंह के समान बली थे।

भयानक गर्जना कर रुद्र और यमराज के समान कुपित हो एक-दूसरे पर प्रहार करने लगे। उस समय उन गदा-प्रहारों को वे दोनों उसी प्रकार सहन करने लगे, जैसे पर्वतों ने भयंकर वज्राघातों को सहन कर लिया था। विद्युत् की घोर गर्जन से जैसे दिशाएँ गूँज उठती हैं, उसी प्रकार उनकी गदाओं के प्रहार से सभी दिशाएँ प्रतिध्वनित हो रही थीं।

इसी क्षण अर्जुन ने कुपित होकर रावण के विशाल वक्ष:स्थल पर पूर्ण शक्ति से गदा का प्रहार किया। परन्तु रावण तो वर के प्रभाव से सुरक्षित था, अत: उसके वक्ष:स्थल से टकराकर उस गदा के दो खण्ड हो गये। तथापि अर्जुन के गदा प्रहार से रावण एक धनुष पीछे हट गया और रोता हुआ पृथ्वी पर बैठ गया। रावण को व्याकुल देखकर अर्जुन ने दौड़कर उसे पकड़ लिया और अपने सहस्त्र करों के द्वारा उसे जबरन से बाँध दिया।

रावण के बँध जाने पर सिद्ध, चारण और देवताओं ने 'धन्य-धन्य' कहा, अर्जुन के ऊपर पुष्पों की वर्षा की। फिर तो जैसे सहस्त्र लोचन इन्द्र राजा बलि को जीत अमरावती में आये थे, वैसे ही अर्जुन भी रावण को बाँधे हुए अपनी माहिष्मतीपुरी में आया।

पुलस्त्यजी का रावण को मुक्त कराना तथा रावण का लज्जित हो लंका को लौट आना

रावण को पकड़ लेना वायु को पकड़ लेने के ही समान था। स्वर्ग में वार्तालाप करते हुए पुलस्त्यजी ने जब देवताओं के मुख से यह बात सुनी तो वे पुत्रस्नेह वश थर्रा उठे और वायु गति से माहिष्मती नरेश से भेंट करने आये। राजा के द्वारपालों और मन्त्रियों ने उनके आगमन की सूचना राजा को दी। तब तपस्वी

पुलस्त्य का आगमन सुन वे हाथ जोड़े हुए उनकी आगवानी को आए। राजपुरोहित अर्घ्य और मधुपर्क सामग्री ले आगे चले।

राजा ने कहा—हे मुने! यह राज्य, ये स्त्री-पुत्र और हम सब लोग आपके ही हैं। आज्ञा दीजिए, अम आपकी क्या सेवा करें?' यह सुनकर, पुलस्त्य मुनि ने धर्म, अग्नि और पुत्रों का कुशलमंगल पूछा। साथ ही उन्होंने अर्जुन से कहा—'हे नरेन्द्र! तुममें अतुलित बल है। तभी तो तुम दशग्रीव को जीत लिया है। अहो! जिसके भय सेसागर और पवन भी मौन होकर आज्ञा पाने की प्रतीक्षा किया करते हैं! हे वत्स! अब मैं तुमसे यही माँगता हूँ कि, मेरा वचन मानकर, तुम रावण को मुक्त कर दो।'

अर्जुन के पुलस्त्यजी की आज्ञा शिरोधार्य की और बिना किसी आपत्ति के ही सहर्ष राक्षसेन्द्र रावण को मुक्त कर दिया। फिर अग्नि के समक्ष उपस्थित हो अपने मन को शुद्ध कर इसके साथ मैत्री भी कर ली। फिर ब्रह्माजी केपुत्र पुलस्त्यजी को प्रणाम कर राजा अर्जुन अपने भवन में प्रविष्ट हुआ। पुलस्त्य ने भी रावण को विदा किया। यद्यपि अर्जुन ने रावण का स्वागत किया, तथापि पराजित हो जाने के कारण वह लज्जित होता हुआ लंका को चला गया। ब्रह्मपुत्र पुलस्त्यजी भी रावण को छुड़ा ब्रह्मलोक को प्रस्थित हुए।

जब रावण किष्किन्धा गया था

अर्जुन द्वारा मुक्त किया गया राक्षसाधिप रावण फिर सब पृथ्वी का परिभ्रमण करने लगा। जहाँ-कहीं भी उसे अधिक बलवान् मनुष्य या राक्षसों का होना सुनाई पड़ता, वह वहीं दौड़कर जाता और उसे युद्ध के लिये ललकारता। एक दिन वह बालिपालित किष्किन्धापुरी में पहुँचा और उसने सुवर्णमालाधारी बालि को युद्ध के लिये बुलाया।

तब युद्ध की इच्छा से आये हुए रावण से बालि के मन्त्री, तारा, तारा के पिता सुषेण, अंगद और सुग्रीव ने कहा—राक्षसेन्द्र! इस समय बालि तो बाहर गये हुए हैं, जो आपके जोड़ के हैं। अभी अल्प काल के लिये आप ठहरिये। बालि चारों समुद्रों पर सन्ध्या कर, अब आना ही चाहते हैं। तब-तक शंख के समान श्वेत हड्डियों के इस ढेर को देख लो। ये उनकी हड्डियाँ हैं, जो वानरराज बालि से युद्ध करने की इच्छा से आ चुके हैं।

हे रावण! यदि तुमने अमृतरस भी पान किया होगा, तो भी बालि के समक्ष जाने पर तुम फिर जीवित न रह सकोगे। हे विश्रवा पुत्र! आज तुम इस संसार को देख लो और अल्प क्षणों तक ठहरो, फिर तो तुम्हारा जीवन दुर्लभ हो जायेगा और यदि

तुम्हें मरने की शीघ्रता हो तो दक्षिण समुद्र पर चले जाओ। वहीं समुद्र के तट पर तुम्हारी बालि से भेंट हो जायेगी।

बालि पृथ्वी पर स्थित अग्नि के समान भभकता है। तब उनकी इन बातों को सुनकर उनका तिरस्कार करता हुआ रावण पुष्पक पर बैठा दक्षिण समुद्र की ओर गया। वहाँ पहुँच उसने सुवर्णगिरि के समान उन्नत बालि को सन्ध्योपासन करते हुए देखा। काजल के समान काले रंग का रावण विमान से उतर पड़ा और बालि को पकड़ने के लिये पैरों की आहट न करते हुये तत्क्षण ही उसकी ओर चल दिया। परन्तु दैवयोग से बालि ने उसे देख लिया।

किन्तु उसके दुष्ट अभिप्राय को जानकर भी वह किञ्चित् व्यग्र न हुआ और न उसकी ओर कुछ ध्यान ही दिया। उसने निश्चय कर लिया कि, यह मुझे पकड़ना चाहता है, परन्तु इस दुष्ट को अपने पार्श्व में दबाकर अन्य तीन समुद्रों पर जाऊँगा। इसके हाथ, वस्त्र और पैर लटकते रहेंगे जिससे गरुड़ के पंजे में फँसे हुए सर्प के समान लोग इसे मेरे पार्श्व में पड़ा देखेंगे।'

यह सोचकर बालि मौन ही रहा और वेद मन्त्रों का जाप करता रहा। जब रावण ने समझा कि अब तो मैं हाथ बढ़ाकर इसे पकड़ सकता हूँ, उसी समय बालि ने दूसरी ओर मुँह किये ही उसे इस प्रकार पकड़ लिया, जैसे गरुड़ सर्प को दबोच लेता है। फिर तो वह उसे बगल में दाबे हुए बड़े वेग से आकाश में उड़ा। रावण उसे बारबार नोचता था। तब भी वायु जिस प्रकार बादल को उड़ा ले जाता है उसी प्रकार बालि उसे बगल में दबाये चलता था।

इस प्रकार रावण के परास्त हो जाने पर उसे मन्त्री उसे बालि से मुक्त करने के लिये रावण के पीछे-पीछे दौड़ते रहे। परन्तु बालि तक वे पहुँच ही नहीं पाते थे। इससे वे श्रमित होकर बैठ गये। इतने में महावेगवान् वानरराज बालि रावण को लिये हुए पश्चिम समुद्र पर पहुँचा, वहाँ स्नान, संध्या और जप करके वह उत्तर समुद्र पर आया।

वहाँ भी उसने संध्या की और पुनः पूर्व समुद्र पर आया। वहाँ भी सन्ध्योपासन करके उसे पार्श्व में दबाये किष्किन्धा लौट आया। किष्किन्धा के उपवन में पहुँचकर उसने रावण को अपनी काँख से छोड़ दिया और बार-बार हँसकर पूछा---कहिए, आप कहाँ से आ रहे हैं? तब काँख में इतनी देर दबे रहने के कारण रावण भी श्रमित हो गया था जिससे उसके नेत्र व्याकुल हो रहे थे।

राक्षसेन्द्र ने विस्मित हो बालि से कहा—वानरराज! तुम तो साक्षात् इन्द्र के समान हो। मैं राक्षसेन्द्र रावण हूँ, युद्ध करने की इच्छा से यहाँ आया था। परन्तु आज

तुम्हारे हाथ से पकड़ लिया गया। अहो! तुम्हारा बल, पराक्रम और गाम्भीर्य आश्चर्योत्पादक है। तुमने मुझे पशु के समान पकड़ चारों समुद्र पर परिभ्रमण किया है। हे वीर! तुम्हारे अतिरिक्त ऐसा कोई भी वीर नहीं है। जो मुझे लिये इस प्रकार वहन करे।

ऐसे गति तो मन, वायु और गरुड़ इन तीन की ही है। अथवा नि:सन्देह चौथे आप ऐसे वेगशाली हैं। हे वानरराज! मैंने आपका बल देख लिया। अब मैं अग्नि को साक्षी बनाकर आपके साथ सर्वदा के लिए मित्रता करता हूँ। स्त्री, पुत्र, नगर, राज्य, भोग, वस्त्र और भोजन—ये सभी वस्तुएँ हम दोनों की सम्मिलित रहेंगी।' फिर तो वानरराज और राक्षसराज दोनों ने अग्नि प्रज्वलित कर परस्पर बन्धु-स्नेह की स्थापना की और एक ने दूसरे का आलिङ्गन किया।

फिर दोनों हर्षित हो एक-दूसरे का हाथ पकड़े हुए किष्किन्धा में गये। रावण एक मास तक किष्किन्धा में सुग्रीव के समान रहा। फिर त्रैलोक्यनाशक रावण के मंत्री वहाँ आ उसे लिवा ले गये।

हे प्रभो! यह एक प्राचीन घटना का वृत्तान्त है, जिसमें बालि ने रावण को नत किया और पुन: अग्नि-सान्निध्य में उससे बन्धुत्व स्थापित किया था। हे राम! बालि में अनुपम बल था, किन्तु अग्नि जिस प्रकार पतङ्गे को दग्धकर देती है, उसी प्रकार आपने उस बालि को एक ही बाण से मार डाला।

अन्त में अगस्त्यजी बोले—हे राम! उस लोककण्टक रावण की यह उत्पत्ति कथा है जिसने इन्द्र तथा जयन्त को भी युद्ध में परास्त कर दिया था।

अत: हे पुत्र! अपना माहेश्वर यज्ञ तुम अब सम्पन्न करने के लिए उद्यत हो जाओ और सदाशिव को प्रसन्न करो।

॥ इस प्रकार रावणसंहितान्तर्गत रावण जीवन वृत्तान्त प्रथम परिच्छेद सरल, सुबोध हिन्दी भाषा में मैथिल आचार्य शिवकान्त झा द्वारा सुसम्पन्नता को प्राप्त हुआ॥१॥

॥ शुभमिति ॥

□□□

4PBooks.com

द्वितीय परिच्छेद

रावण सदाशिव सम्वादात्मक

तन्त्र-मन्त्र साधना

त्रेता युग में कैलास पर्वत के शिखर पर, जो कि अनेक रत्नों से शोभित, अनेक वृक्षों एवं लताओं से व्याप्त था। जिस पर भाँति-भाँति के पक्षी मधुर ध्वनियों में किल्लोल कर रहे थे।

जहाँ पर सब ऋतुएँ अनेकानेक फूलों एवं फलों से सुन्दर ज्ञात होती थीं और शीतल, मन्द, सुगन्ध पवन चल रहा था।

जहाँ पर वृक्षों की अटल एवं सुखद छाया में अप्सराओं की सुन्दर संगीत ध्ववनि होती थी और कोकिकालाओं का समूह बनों से प्रविष्ट होकर कुहुकता था, एवं ऋतुराज बसन्त अपने सेवकों के साथ सदा निवास करते थे।

जिस कैलास पर्वत के शिखर पर सिद्ध, चारण, गन्धर्व तथा अपने गणों सहित गणेशजी और स्वामिकार्तिकेय जी सदा निवास करते थे। उसी रम्य कैलास शिखर के ऊपर चराचर जगत के श्रीशंकर जी मौन धारण कर निवास करते थे।

जो सदा कल्याण करने वाले, आनन्द मूर्ति एवं दयारूपी अमृत के सागर हैं। जिनका वर्ण कर्पूर एवं कुन्द-पुष्प की भाँति उज्ज्वल और जो पवित्र सत्त्वगुणमय तथा व्यापक हैं।

जिनके दिशायें ही वस्त्र हैं, जो दीन दुखियों के स्वामी योगियों में सर्वश्रेष्ठ तथा योगियों को अत्यन्त प्रिय हैं। जिनकी जटायें गंगाजी की धारा से सदा भीगी रहती हैं।

जो विभूति से भूषित, शान्ति स्वरूप, सर्पों की माला एवं मुण्डों की माला धारण किये हैं। जिनके तीन नेत्र हैं, जो तीनों लोकों के स्वामी तथा त्रिशूलधारी हैं।

जो शीघ्र ही प्रसन्न होने वाले, ज्ञानरूप, मुक्ति प्रदान करने वाले, आदि अन्त रहित, कल्पनातीत तथा विशेष रहित निरंजन हैं।

जो सबका हित करने वाला, देवताओं के भी देवता तथा निरामय अर्थात् जो रोग रहित हैं। जिनका ललाट अर्धचन्द्र द्वारा देदीप्यमान है और जो पाँच मुख वाले तथा सुन्दर भूषणों से भूषित हैं।

इस प्रकार प्रसन्न मुख शंकरजी को देखकर रावण ने संसार के हित की कामना से उनसे पूछा।

4Books.com

रावण उवाच

हे देवों के देव! जगत् गुरो!! सदाशिव! संसार का सदा कल्याण करने वाले मैं आपको नमस्कार करता हूँ। मेरे स्वामी, क्षण मात्र में ही सिद्धि को प्रदान करने वाली ऐसी तन्त्र विद्या को आप हमसे कहिये।

शिव उवाच

भगवान् शङ्कर बोले—हे वत्स ! तुमने संसार के हित की कामना से यह अच्छा प्रश्न किया, अत: तुम्हारे समक्ष इस उड्डीश नामक तन्त्र को कहता हूँ।

केवल पुस्तक में लिखी हुई विद्या बिना गुरु के सिद्धि प्रदान नहीं करती है, अत: बिना गुरु के इस तन्त्र शास्त्र पर किसी का अधिकार नहीं हो सकता है अर्थात् तन्त्र शास्त्र की जो भी क्रियाएँ की जायँ वे गुरुओं की सहायता से ही की जायँ।

पहले इस शास्त्र में षट् कर्म—१. मारण, २. मोहन, ३. उच्चाअन, ४. विद्वेषण, ५. आकर्षण तथा ६. वशीकरणादि के लक्षणों कका वर्णन करता हूँ। जो कि तन्त्र मत के अनुसार सिद्धि रूपी फल को देने वाले हैं।

षट्-कर्म

१. शान्ति कर्म, २. वशीकरण, ३. स्तम्भन, ४. विद्वेषण, ५. उच्चाटन एवं ६. मारण इन छ: प्रकार के कर्मों को मुनियों ने षट्कर्म कहा है।

षट्-कर्म-लक्षणम्

जिस प्रयोग से रोग, या किसी प्रकार की बाधिादिकों की शान्ति या अनिष्ट ग्रहों की शान्ति आदि की जाती है, उसी प्रयोग को शान्ति कर्म कहते हैं, जिस प्रयोग के द्वारा किसी स्त्री, राजा, शत्रु या इष्ट को वश में किया जाता है अर्थात अपनी इच्छा के अनुकूल आचरण कराया जाता है, उस प्रयोग को वशीकरण करहते हैं। जिस प्रयोग से अग्नि, जल, शत्रु के पराक्रम या शत्रु की सेना की रुकावट की जाती है उसी को स्तम्भन कर्म कहते हैं। जिस प्रयोग से एक दूसरे से लगे प्रेम को छुड़ा दिया जाता है, उसको विद्वेषण कहते हैं। जिस प्रयोग से मनुष्य अपने स्थान को छोड़कर भाग जाता है, उसे उच्चाटन कहते है। जिस प्रयोग से मनुष्य का मरण हो जाता है, उसे मारण कहते हैं।

विषय-कथनम्

हे राक्षसराज रावण, इस ग्रन्थ के प्रथम प्रकरण में आकर्षण, दूसरे प्रकरण में उन्मादन, तीसरे में विद्वेषण, चौथे में उच्चाटन, पाँचवें में ग्रामोच्चाटन, छठवें में जलस्तम्भन, सातवें में स्तम्भन, आठवें में वशीकरण इसके अतिरिक्त और भी अन्धा, वहिरा एवं गूँगा आदि बनाने का प्रयोग नवें, दशवें प्रकरण में वर्णित है।

इस ग्रन्थ में बहिरा बना देना, मूर्ख बना देना, भूत लगा देना, ज्वर चढ़ा

देना, बुद्धि का स्तम्भन करना, दही को नष्ट कर देना, पागल बनाना, हाथी-घोड़ा को कुपित कर देना, सर्प एवं मनुष्य को बुला देना, खेती आदि का विनष्ट करना, दूसरे के ग्राम में प्रवेश करना इसके अतिरिक्त भूतादिकों की सिद्धि, पादुका सिद्धि एवं नेत्र के अञ्जन आदि की सिद्धि शास्त्रीय रीति से वर्णित है।

इन्द्र जाल की क्रीड़ा, यक्षिणी मन्त्र साधन, गुटिका बनानाा, आकश में गमन करना, मरे हुए को जिलाना इसके अतिरिक्त और भी भयंकर विद्याओं, उत्तम मन्त्रो एवं उत्तम औषधियों तथा गुप्त कार्यों का वर्णन करूँगा। जो शङ्कर जी के कहे हुए उड्डीश को नहीं जानता वह क्राधित होकर क्या कर सकता है। यह उड्डीश तन्त्र सुमेरु पर्वत को हिला देने वाला तथा पृथ्वी को सागर में डुबा देने वाला है।

यह तन्त्र शास्त्र नीच कुलोत्पन्न को, पापी को, मूर्ख को, भक्ति हीन को, भृख (दरिद्र को), मोह में फँसे हुए को, शंकित चित्त वाले को और विशेष करके निन्दा करने वाले प्राणी को कदापि न देना चाहिए। क्योंकि इनसे उड्डीश तन्त्र की क्रिया नहीं हो सकती है। फिर सिद्धि तथा फल तो दूर रहा।

यदि इस विद्या की प्रतिष्ठा एवं अपनी आत्मा की रक्षा चाहे तो देवता व गुरु-भक्त, सज्जन, बालक, तपस्वी, वृद्ध, उपकारी तथा सुमति वाले विद्वान् के प्राप्त होने पर ही उन्हें यह विद्या प्रदान करे। इसी में इस शास्त्र की प्रतिष्ठा है।

इस तन्त्र शास्त्र के प्रयोग में तिथि, वार, नक्षत्र, व्रत, होम, काल बेला आदि का विचार नहीं किया जाता है। केवल तन्त्र के ही बल से औषधियाँ सिद्धि प्रधान करने वाली होती हैं। जिसका साधन करने से क्षण मात्र में ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

जैसे चन्द्रमा से हीन रात्रि, सूर्य से हीन दिवस तथा राजा से हीन राज्य सुखकर नहीं होता, उसी प्रकार गुरु से हीन मन्त्र भी सुख तथा फल देने वाला नहीं होता है। अतः इसमें गुरु की अत्यन्त आवश्यकता है।

जैसे इन्द्र का वज्र दैत्यों का विनाशक है, वरुण का पाश महा बलवानों का भी बाधक है, जैसे यमराज का दण्ड सबको दण्डित करता है एवं जैसे अग्नि देव सबको भस्म करने की शक्ति रखते हैं।

उसी प्रकार इस शास्त्र में विहित प्रयोग भी शक्ति रखते हैं। यह असत्य नहीं है, कहाँ तक कहा जाय इन मन्त्रों की शक्ति तो ऐसी है कि सूर्य को पृथिवी पर बुला ले।

अपकारी, दुष्ट, दुराचारी, पापी ऐसे व्यक्तियों पर यदि मारण का प्रयोग करे तो कोई दोष नहीं है। यदि बिना प्रायोजन किसी पर मारण प्रायोग किया जाय तो

अपना ही नाश हो जाता है। जो इस तन्त्र शास्त्र पर विश्वास नहीं करते उनको सिद्धि भी नहीं मिलती है।

मारण-प्रयोग

हे रावण ! अब मैं तुमसे मारण नाम का प्रयोग करता हूँ। जो कि मनुष्यों को शीघ्र सिद्धिकर है।

मारण का प्रयोग जिस किसी पर थोड़ी सी गलती कर देने पर भी नहीं करना चाहिये। मारण का प्रयोग किसी पर तब करे, जब जान ले कि यह हमको जान से मार डालना चाहता है।

मूर्ख का किया हुआ प्रयोग उसी को स्वयं नष्ट कर देता है, अत: अपनी आत्मा की रक्षा को चाहने वाला मारण का प्रयोग भी न करे, क्योंकि इसमें अपना ही प्राण जाने का भय रहता है।

जो व्यक्ति अपने ज्ञान-दृष्टि से सम्पूर्ण विश्व को देखने वाला है तथा प्रत्येक जीवात्मा को ब्रह्मा के ही समान समझता है, वह संकटापन्न स्थिति उत्पन्न होने पर मारण का प्रयोग कर सकता है। यदि दूसरा कोई मारण करेगा तो दोष का भागी होगा। कथञ्चित् मारण का प्रयोग करना ही पड़े तो नीचे लिखे प्रमाण के अनुसार करे।

शत्रु के पैर के नीचे की मृत्तिका तथा चिता की भस्म एवं मध्यमा (बिचली) अंगुली का रक्त मिलाकर एक पुतली मूर्ति बनावे।

और उस मूर्ति को काले कपड़े में लपेट एवं काले डोरे से बाँध कुशासन पर सुला कर एक दीप जलावे।

तथा मारण मन्त्र का दशहजार जप कर पश्चात् १०८ उर्दी लेकर प्रत्येक को मारण मन्त्र से अभिमन्त्रित करे।

उस पुतली के मुख में मारण-मन्त्राभिमन्त्रित उर्दी डाल देवे। अर्धरात्रि के समय इस मारण प्रयोग को करने से इन्द्र तुल्य शत्रु भी मारा जाता है।

रात्रि में उक्त प्रयोग को करके प्रात:काल उस मूर्ति को श्मशान भूमि में गाड़ दे। इस प्रकार बराबर एक माह तक प्रयोग करते रहने पर निश्चित शत्रु की मृत्यु होती है।

मारणमन्त्र—**ॐ नमः कालसंहाराय अमुकं हन हन क्रीं हुं फट् भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।**

इस ग्रन्थ के प्रयोग में जहाँ अमुक शब्द आवे वहाँ शत्रु का नाम लेता जावे। चार अँगुली प्रमाण एक नीम की लकड़ी लेकर उसमें शत्रु के सिर के बाल लपेट उसी से शत्रु का नाम लिखे पश्चात् सावधानी से उस लिखे नाम से चिता के अङ्गार पर धूप

देवे। इस प्रकार तीन या सात रात्रि तक धूप देने से शत्रु को प्रेत पकड़ लेता है। प्रयोग करने वाला व्यक्ति कृष्णपक्ष की अष्टमी को प्रयोग आरम्भ करे तथा चतुर्दशी तक समाप्त कर दे और निम्न लिखित मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जपे।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षाय घोरदंष्ट्रिणे ग्रहयक्षभूतेनानेन शङ्कर अमुकं हन हन दह दह पच पच गृह्ण हुं फट् स्वाहा ठः ठः।**

चार अङ्गुल प्रमाण मनुष्य की हड्डी लेकर पुष्य नक्षत्र में जिसके घर गाड़ दे। उसका परिवार सहित नाश हो जाय। यह प्रयोग बिना मन्त्र के ही प्रसिद्ध है।

इसी प्रकार एक अंगुल प्रमाण सर्प की हड्डी लेकर आश्लेषा नक्षत्र में शत्रु के घर में गाड़ दे और निम्नलिखित मन्त्र का दश हजार जप कर दे तो शत्रु की सन्तति का विनाश होता है।

मन्त्र—**ॐ सुरेश्वराय स्वाहा।**

बिना मन्त्र जाप के कार्य नहीं सिद्ध होगा। अतः मंत्र जपे।

चार अंगुल प्रमाण घोड़े की हड्डी अश्विनी नक्षत्र में निम्नलिखित मंत्र से अभिमंत्रित करके गाड़ दे तो शत्रु के परिवार का नाश होता है।

मन्त्र—**ॐ हुँ हुँ फट् स्वाहा। सप्तदशाभिमंत्रितं कृत्वा निखनेत्।**

सत्रह बार मंत्र से अभिमंत्रित करके तबी हड्डी गाड़े।

निम्ब की कील आर्द्रा नक्षत्र में शत्रु के शयनागार में गोड़ने से शत्रु का मरण होने लगता है और उसे उखाड़ लेने पर पुनः सुखी हो जाता है।

इसी प्रकार शिरीष की कील शत्रु के घर आर्द्रा नक्षत्र में गाड़ने से शत्रु का नाश होता है।

मन्त्र—**हुँ हुँ फट् स्वाहा।**

एकविंशतिवारमभिमन्त्रितं कृत्वा द्वयोरपि प्रयोगे निखनेत्।

उपरोक्त दोनों प्रयोगों में २१ बार अभिमन्त्रित करके गाड़ने से सपरिवार शत्रु का विनाश होता है।

ज्वर द्वारा शत्रु का मारण

मन्त्र—**ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं: डः अमुकं गृह्ण गृह्ण हुँ हुँ ठः ठः। अनेन मंत्रेण सहस्रवारमभिमन्त्रितं नरास्थि श्मशाने निखननेन मृत्युः।**

उपरोक्त मंत्र से हजार बार जिसके नाम पर अभिमन्त्रित कर मनुष्य की हड्डी श्मशान में गाड़े तो उसकी मृत्यु होय।

रिपु की विष्ठा (मल) तथा बिच्छू एक हाँड़िया में बन्दकर ऊपर से मिट्टी

लगाकर पृथ्वी में गाड़ दे तो शत्रु का मलावरोध (मल रुकने से) मरण तुल्य कष्ट को लगता है और भूमि खोदकर हंडी खोल देने से पुनः सुखी हो जाता है।

मंगलवार को शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी ला गोमूत्र में मिलाकर एक प्रतिमा (पुतली) बनावे।

जहाँ कोई मनुष्य न आ-जा सके ऐसे एकान्त स्थान पर या नदी का किनारा हो या बनादि हो, वहाँ पर एक वेदी बना उस पर पुतली को सुला दे और उसकी छाती में एक चोखा शूल (सूजा) गाड़ दे, पश्चात् बाम भाग में काल भैरव की स्थापना कर प्रतिदिन बलि एवं पूजन करे।

प्रयोग स्थान पर ११ वेद पाठी ब्राह्मण-ब्रह्मचारी बटुओं (बालकों) को भोजन करावे तथा कालभैरव के समक्ष कडुआ तेल का दीपक जलावे।

मूर्ति के दक्षिण (दाहिने) भाग में व्याघ्र के चर्मासन पर दक्षिण मुख बैठकर जितेन्द्रिय होकर रात्रि में निम्नलिखित मंत्र जपे।

सावधान चित्त हो रात्रि काल में उक्त मंत्र का दश हजार जप करे, ऐसा करने से १९ दिनों में शत्रु का मरण होता है।

आर्द्रपटी साधन का विनियोग

ॐ अस्य श्रीआर्द्रपटी महाविद्यामंत्रस्य दुर्वासा ऋषिर्गायत्री छंदः, हूं बीजं, स्वाहाशक्तिः, ममाऽमुकशत्रु-निग्रहार्थं जपे विनियोगः।

आर्द्रपटीसाधन मन्त्रः—**ॐ नमो भगवति आर्द्रपटेश्वरि हरितनीलपटे कालि आर्द्रजिह्वे चाण्डालिनि रुद्राणि कपालिनि ज्वालामुखि सप्तजिह्वे सहस्रानयने एहि एहि अमुकं ते पशुं ददामि अमुकस्य जीवं निकृन्तय एहि एहि जीवितापहारिणि हुं फट् भूर्भुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रवशाखादिनि मम शत्रून् छेदय छेदय शोणितं पिब पिब हुं फट् स्वाहा।**

केवल जपमात्रेण मासान्ते शत्रुमारणम्।

स्नानादि से शुद्ध हो पवित्र आसन पर बैठकर पहले आर्द्रपटी का विनियोग करे अर्थात् 'ॐ अस्य श्री.) से लेकर 'विनियोगः' तक वाक्य पढ़कर हाथ में लिये हुए जल को पृथ्वी पर छोड़ दे। इस आर्द्रपटी मन्त्र का केवल एक मास पर्यन्त जप करने मात्र से ही शत्रु का मरण हो जाता है। यह आर्द्रपटी मन्त्र सब मंत्रों से श्रेष्ठ तथा तत्काल फलदायक है।

प्रयोग—कृष्ण पक्ष की अष्टमी से प्रारम्भ कर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी पर्यन्त समाप्त करे तथा अमुकशब्द के स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारणसहित १०८ बार प्रतिदिन मन्त्र का जप करे। समाप्ति के दिन शत्रु के पैर के नीचे मिट्टी लाकर पुतले

बनावे तथा काली को बकरा की बलि देकर उसी रक्त में वस्त्र को भिगोवे ओर उक्त वस्त्र में पुतली को लपेट दे। पश्चात् मन्त्र का जप करता रहे। जब तक रक्त सूखेगा उतने ही समय में शत्रु समाप्त हो जायेगा।

बैरिमारण कवच

ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरवऋषिर्गायत्री छन्दः, श्रीकालीदेवता, सद्यः शत्रुहननार्थे विनियोग।

हाथ में जल से उपरोक्त मंत्र मढ़कर पृथ्वी पर छोड़ दे।

काली का ध्यान

ध्यान—इस प्रकार करे कि भगवती काले वर्ण की तीन आँखों वाली, चार भुजाओं वाली, जिसकी जिह्वा बाहर निकलती हुई है और वह देवी चन्द्रमा के समान कान्तिमान है।

तथा नील कमल के समान श्याम है, शत्रुओं का नाश करने वाली, नरमुण्ड, खड्ग, खप्पर एवं कमल पुष्प अपने चारों हाथों में लिये हुई हैं।

लाल वस्त्र पहिने, भयंकर दाँतों वाली, बड़े जोरों से हँसती हुई एवं नंगी शरीर वाली काली।

मुर्दे पर बैठी हुई, मुण्डों की माला पहनी हुई, महादेवी काली का ध्यान करते हुए निम्नलिखित कवच का पाठ करना चाहिये।

कवच

हे भयंकर रूप धारण करने वाली एवं सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली और सब देवताओं द्वारा स्तुति की जाने वाली काली हमारे शत्रु का नाश करो।

ह्रीं ह्रीं स्वरूप वाली, ह्रीं ह्रीं सं हं रूपी बीज को धारण करने वाली, पुनः ह्रीं ह्रीं क्षैं क्षौं स्वरूपवाली काली, आप सदा शत्रुओं का नाश करने वाली हैं, अतः हमारे भी शत्रु का विनाश कीजिये।

श्रीं ह्रीं ऐं रूपवाली तथा संसार का बन्धन छुड़ाने वाली हे भगवती, आपने जिस प्रकार शुभ-निशुभ का वध किया था उसी प्रकार अमुक नाम वाले मेरे शत्रु का वध कीजिये।

ब्राह्मी (गायत्री), शैवी (पार्वती), वैष्णवी (लक्ष्मी), वाराही एक नारसिंही आदि अनेक रूप धारण करने वाली शंकर प्रिया हे कालिके शत्रु का विनाश करने के लिये आपको नमस्कार करता हूँ।

कौमारी, श्री (लक्ष्मी रूपी), सुरेश्वरी (इन्द्राणी रूपी) तथा भयंकर रूप धारण करने वाली और चण्ड-मुण्ड का विनाश करने वाली हे चामुण्डे! हमारे शत्रुओं को भक्षण कर जाओ।

4EBooks.com

ह्रीं ह्रीं रूपिणी तथा मुण्डों की माला धारण करने वाली हे कालिके, विकराल दाँतों दाँतों वाली एवं रक्त पान से प्रसन्न होने वाली हमारी सदा रक्षा करो।

मन्त्र—**रुधिरपूर्णवक्त्रे च रुधिरावितस्तिनि मम शत्रून् खादय खादय हिंसय हिंसय मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषण शोषय यातुधानिके चामुण्डे ह्रीं ह्रीं वां वीं कालिकायै सर्वशत्रून् समर्पयामि स्वाहा। ॐ जहि जहि किटि किटि किरि किरि कटु-कटु मर्दय मर्दय मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंसय ध्वंसय भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय यातुधानिका चामुण्डा सर्वजनान् राजपुरुषान् राजश्रियं देहि देहि नूतनं नूतनं धान्यं भक्षय भक्षय क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं स्वाहा।**

हे राक्षसराज रावण, मैंने इस दिव्य कवच का तुमसे वर्णन किया। जो इस कवच का भक्ति पूर्वक नित्य पाठ करेंगे उनके शत्रुओं का नाश होगा तथा शत्रु रोग से पीड़ित होंगे एवं धन-पुत्र सुख से रहित हो जायेंगे। इस कवच के एक हजार पाठ करने के बाद सिद्धि मिलती है। कवच सिद्ध होने पर मारण प्रयोग में अवश्यमेव सफलता प्राप्त होती है अन्यथा नहीं।

मारण कवच एवं मंत्र सिद्ध करके जलती हुई चिता से अंगार लावे पश्चात् अग्नि शान्त होने पर कोयले को चूर्ण कर शत्रु के पैर से स्पर्शित जल मिलाकर खूब घोंटकर स्याही बनावे, जब स्याही बन जाय फिर लोहे की कलम से शत्रु की कुरूप मूर्ति बनावे, जिसके पैर दक्षिण एवं शिर उत्तर की ओर हो पश्चात् उस मूर्ति हृदय पर अपना हाथ रखकर मंत्र सहित उक्त कवच का पाठ करे।

प्राण प्रतिष्ठा का मन्त्र जानने वाले विद्वान् से मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करावे या स्वयं प्राणप्रातिष्ठा मंत्र से प्राण प्रतिष्ठा करे पश्चात् मूर्ति के कण्ठ को तीखे शस्त्र से एक ही बार में काट दें, फिर कटी हुई मूर्ति के मय शिर व धड़ के ऊपर जलते हुए अंगार से लेपन करें। इस प्रकार करने से शत्रु ज्वर से पीड़ित होकर प्राण त्याग देता है और केवल बायाँ पैर पोंछने से दरिद्र हो जाता है।

यह कवच बैरियों का नाश करने वाला तथा उनको वश में करने वाला और महान् ऐश्वर्य का दाता एवं पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि करने वाला है। प्रातः काल या सायंकाल पूजा के समय इसका पाठ करने से अवश्य सिद्धि प्राप्त होती है।

और इसके केवल पाठ मात्र से शत्रु का उच्चाटर होता है, अर्थात् देश छोड़कर परेदश भाग जाता है। पश्चात् दास की तरह वश में होकर रहता है, यह शंकरजी का वचन सत्य है, सत्य है इसमें संशय नहीं है।

माला-निर्णय

मूँगा, हीरा तथा मणि की माला पुष्टि एवं वशीकरण प्रयोगों में आवश्यक है, आकर्षण प्रयोग में हाथी दाँत की माला से जप करे, विद्वेषण तथा उच्चाटन में स्फटिक या घोड़े के दाँतों की माला सूत में या बालों में गूँथकर जप करे। जिस प्रयोग में जिस प्रकार की माला लिखी है उसी प्रकार की माला पर जप करने से सिद्धि होती है।

शत्रु-मारण प्रयोग में या शत्रु सैन्य-स्तम्भन प्रयोग में गदहे के दाँतों की माला या स्फटिक की माला से जप करे।

धर्म, अर्थ एवं काम की सिद्धि के लिये शंख की माला से जप करे तथा सम्पूर्ण कामनाओं की सिद्धि के लिये कमल की माला से जप करे।

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मन्त्रों का जप किया जा सकता है। स्फटिक, मोती, मूँगा, रुद्राक्ष तथा पुत्रजीव की माला पर जप करने से विद्या की प्राप्ति होती है।

शान्ति एवं पुष्टि के प्रयोग में माला को कमल के सूत्र में पिरोवें, आकर्षण तथा उच्चाटन के प्रयोग में घोड़े की पूँछ के बालों में माला को गूँथें।

मारण प्रयोग में मनुष्य की स्नायु (हड्डी) में रहने वाले पतले चर्मतन्तु (तागे) में माला को पिरोवे और अन्य कार्यों के लिए कपाल का सूत ही प्रशंसनीय है। अर्थात् सूती तागे में माला पिरोनी चाहिये।

सत्ताइस दाने क माला सिद्धि प्रदान करने वाली होती है, अभिचार कर्म प्रयोग में १५ दाने की माला होनी चाहिये। जिस प्रयोग में जैसी माला का वर्णन है, उसमें वैसी ही माला द्वारा प्रयोग करना चाहिए।

रुद्राक्ष की माला से सब प्रकार के मन्त्रसिद्धि किये जा सकते हैं, ऐसा मन्त्र शास्त्र के तत्त्वदर्शियों ने कहा है तथा एक सौ आठ (१०८) दाने) की माला सब कार्यों में सिद्धि प्रदान करने वाली होती है।

वर्शीकरण प्रयोग में पूर्व मुख होकर बैठे तब फिर जपादिक कर्म आरम्भ करे एवं अभिचार में दक्षिण मुख बैठे, धन की इच्छा से जप करने वाले पश्चिम मुख बैठे तथा शान्तिकर्म, आयु, रक्षा, पुष्टि एवं विद्या आदि प्राप्ति के लिए उत्तर मुख बैठकर जप करना चाहिए।

जप-लक्षण

जप तीन प्रकार का होता है। १. वाचिक, २. उपांशु तथा ३. मानसिक। १. जिस जप में मन्त्र का उच्चारण दूसरे को भी सुनाई पड़े उसे वाचिक जप कहते हैं।

२. जो दूसरे को और अपने को भी स्वयं सुनाई न पड़े उसे उपांशु जप कहते हैं। ३. जिसमें जिह्वा, दाँत तथा ओष्ठ का हिलना न दिखाई दे, मंत्र के अक्षरों को केवल मन से ही चिन्तन किया जाय उसे मानस जप कहते हैं। मानस का ही विशेष अभ्यास हो जाने पर अजपा जाप के नाम से ऋषियों ने पुकारा है।

पराभिचार (मारण प्रयोग) में वाचिक जप करे अर्थात् मन्त्रों का जोर-जोर से उच्चारण करे, शान्ति एवं पुष्टि कर्म में उपांशु अर्थात् दूसरे को सुनाई न दे तथा मोक्ष एवं ज्ञान-प्राप्ति के निमित्त मानस जप करे।

काले जीरे के चूर्ण के अंजन से घोड़े अन्धे हो जाते हैं। यदि उनकी आँखों को मट्ठे से धो दे तो फिर पहले की भाँति देखने लगते हैं।

छछुन्दर का चूर्ण घोड़े की नाक में डाल देने से घोड़ा मूर्छित हो जाता है तथा जल में चंदन घिस कर पुनः नाक में पुनः नाम में डाल देने से स्वस्थ हो जाता है।

घोड़े की हड्डी की सात अंगुल की कील बना अश्विनी नक्षत्र ओन पर घोड़साल में गाड़ दे तो घोड़े मरने लगते हैं।

अश्वमारणमन्त्रः—**ॐ अश्वं पच पच स्वाहा।**

(अयुत-जपात् सिद्धिः)

उक्त मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है, उपरोक्त कील इसी से अभिमंत्रित करके घोड़साल में गाड़े।

बेर के काष्ठ की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में यदि मल्लाह के घर में गाड़ दे तो उसकी सब मछलियाँ नष्ट हो जायेंगी।

मस्त्यनाशनमन्त्रः—**ॐ जले पच पच स्वाहा।**

(इत्येनन मन्त्रेणायुतजपात् सिद्धिः)

यह मंत्र दश हजार जपने पर सिद्ध होता है। इसी मंत्र से अभिमंत्रित कर कील गाड़नी चाहिए।

चमेली (फूल) की लकड़ी की आठ अंगुल की कील पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में निम्नलिखित मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित करके धोबी के घर में गाड़ने से उसके सब वस्त्र नष्ट हो जाते हैं।

मन्त्र—**ॐ कुम्भं स्वाहा।**

(अयुत् -जपात् सिद्धिर्भवति)

यह मन्त्र दश हजार जपने से सिद्ध होता है।

महुआ के काष्ठ की चार अंगुल की कील चित्रा नक्षत्र में तेल पेरने के स्थान

पर गाड़ देने से सम्पूर्ण तेल विनष्ट हो जाता है।

तैलनाशनमन्त्रः—**'ॐ दह दह स्वाहा' (इत्यनेन सहस्रसंख्याकजपः)**

यह मन्त्र एक हजार जपने से सिद्ध होता है। उपरोक्त कील इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके ही गाड़े।

गन्धक का चूर्ण पानी में घोलकर शाक के ऊपर छिड़क देने से सब शाक नष्ट हो जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

जामुन की लकड़ी की आठ अंगुल की कील अहीर के घर में जहाँ गायें दूही जाती हों वहाँ अनुराधा नक्षत्र में गाड़ देने से गायों का दूध सूख जाता है, यह प्रयोग बिना मन्त्र का है।

सफेद मदार की लकड़ी की सोलह अंगुल की कील कृत्तिका नक्षत्र में मदिरा उतारने वाले के घर में गाड़ देने से मदिरा नष्ट हो जाती है। यह भी प्रयोग बिना मन्त्र का है।

सोपाड़ी के लकड़ी की नव अंगुल की कील शतभिषा नक्षत्र में तमोली के घर में या खेत में गाड़ देने से उसके पान नष्ट हो जाते हैं।

भगवान् शंकर बोले कि, हे राक्षसराज रावण! मैं खेती के विनाश की विधि संक्षेप में कहता हूँ कि, जिस क्रिया को करने मात्र से अन्न के फसलों का सम्यक् विनाश होगा।

जहाँ पर आकाश से बिजली गिरी हो वहाँ की मिट्टी लाकर एक वज्र बनावे तथ निम्नलिखित मंत्र से अभितंत्रित कर जिस खेत में गाड़ दे उसकी फलस विनष्ट हो जायेगी।

सस्यनाशनमन्त्रः—**ॐ नमो वज्रपाताव सुरपतिराज्ञापयति हुं फट् स्वाहा।**

यह मन्त्र दस हजार जपने से सिद्ध होता है।

मोहनाभिधान

हे रावण! अब इसके आगे मोहन कहता हूँ, ध्यान देकर सुनो, जो शीघ्र सिद्धि प्रदान करता है।

सिन्दूर, केशर व गोरोचर को आँवले के रस में पीसकर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

सहदेई के रस में तुलसी का बीज घोटकर रविवार के दिन तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

मैनसिल एवं कपूर मिलाकर केला के रस में घोंटकर तिलक करने से सभी लोग निश्चित मोहित हो जाते हैं।

4Books.com

हरताल, असगन्ध तथा गोरोचन कदली के रस में घोटकर तिलक करने से सब लोग मोहित होते हैं।

काकड़सिंगी, चन्दन, वच तथा कूट इनको एक में मिलाकर इसका धूप कपड़े एवं शरीर तथा मुख आदि पर देने से मोहन शक्ति प्राप्त होती है, अर्थात् उस आदमी को देखकर राजा, मनुष्य तथा पशु-पक्षी आदि जीव भी मोहित हो जाते हैं, पान की जड़ का तिलक भी मोहनकारक है।

सिन्दूर तथा वच मिलाकर पान के रस में घोटकर मोहन मंत्र द्वारा अभिमंत्रित कर तिलक करने से सब लोग मोहित हो जात हैं। बिना मोहन मंत्र मोहन मंत्र सिद्ध किये ये सब प्रयोग सिद्ध नहीं होते, अत: मन्त्र अवश्य सिद्ध कर लें।

चिड़चिड़ा, भृङ्गराज, लाजवन्ती तथा सहदेविका इन सबको साथ घोटकर मोहन मंत्र से अभिमंत्रित कर तिलक करेन से सब लोग मोहित हो जाते हैं।

श्वेत दूर्वा (सफेद दूब) तथा हरताल एक साथ पीसकर एवं मोहन मंत्र से अभिमंत्रित करके तिलक करने से सब लोग मोहित हो जाते है।

विल्वपत्र को अच्छी तरह छाया में सुखाकर कपिला गौ के दूध में घिसकर गोली बनावे ओर उसे मोहन मंत्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो सब जगत् मोहित होता है।

मोहनमन्त्र:—**ॐ उड्डामरेश्वराय सर्वजगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं फट् स्वाहा।**

यह मन्त्र एक लक्ष जप करने पर सिद्ध होता है। जब मन्त्र सिद्ध कर ले तो सात बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तब तिलक करना चाहिये।

स्तम्भन प्रयोग

श्री शंकरजी बोले—हे रावण ! अब मैं आगे स्तम्भन प्रयोग का वर्णन करता हूँ, ध्यान देकर सुनो कि, जिसके साधन से सिद्धि निश्चित रूप से हाथ में आ जाती है।

जल स्तम्भन का प्रयोग

शंकरजी बोले कि, इस स्तम्भन प्रयोग में पहले मैं जल का स्तम्भ कहता हूँ। केकड़ा का पैर, दाँत तथा रक्त एवं कछुआ का कलेजा, सूँइस की चर्बी तथा भिलावे का तेल इन सबको एक में मिलाकर पकावे। पकने के बाद इसका शरीर पर लेप करने से मनुष्य जल के ऊपर सुखपूर्वक स्थित हो सकता है अर्थात् डूब नहीं सकता। सर्प, नक्र (नाक) तथा नेवला की चर्बी और डुण्डुम का शिर इन सबको एक साथ भिलावे के तेल में पकावे, पकने के बाद एक लोहे के बर्तन में रख लेवे पश्चात्

कृष्ण पक्ष की अष्टमी आने पर शिवजी की पूजा एवं प्रणाम कर तथा स्तम्भन मन्त्र से एक हजार आठ बार घी की आहुति शंकरजी के नाम से देवें। पश्चात् स्तम्भन मंत्र को पढ़ता हुआ तैल का शरीर के ऊपर लेप कर जल पर सुख पूर्वक बैठ सकते है अथवा चल-फिर सकते हैं। इसी प्रयोग को शंकरजी के प्रसाद से सिद्ध कर प्राचीन महात्माओं ने बढ़ती हुई नदियों को पार कर चमत्कार दिखलाया है।

अग्नि स्तम्भन का प्रयोग

मेढक की चर्बी तथा कपूर एक साथ मिलाकर लेप करने से अग्नि में शरीर नहीं जलता अर्थात् अग्नि का स्तम्भन हो जाता है।

धिकुआर का रस लेपन करने से कोई वस्तु आग में नहीं जलती, अग्नि का स्तम्भन हो जाता है। हे रावण ! यह मेरा वचन सत्य है।

स्तम्भनमन्त्र:—**ॐ नमो भगवते जलं स्तम्भय स्तम्भय हुं फट् स्वाहा।**

यह मंत्र एक लक्ष जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध हो जाय तभी क्रिया करनी चाहिए।

आसन स्तम्भन का प्रयोग

मृतक की खोपड़ी में मिट्टी भरकर उसमें श्वेतगुञ्जा (सफेद कजीरी) का बीज बो दे और गौ के दूध से उसको खींचता रहे, जब वह जमकर लता के रूप में परिणत हो जाय तो उसकी शाखा (डालें) तोड़कर जिसके स्थान पर या जिसका निर्देश कर सामने डाल दे तो उस व्यक्ति के आसन का स्तम्भन हो जाता है। यह सिद्ध प्रयोग है।

आसन स्तम्भन मन्त्रः

ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्य आसनं स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध होने पर एक हजार बार जप कर तब प्रयोग करना चाहिए।

बुद्धि स्तम्भन प्रयोग

उलूक (उल्लू) तथा बन्दर का विष्ठा पान में जिसको खिला दी जायेगी उसकी बुद्धि का स्तम्भन हो जायेगा।

जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो उस दिन खर मञ्जरी की जड़ लावे, पश्चात् उसको पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र द्वारा शरीर पर क्षत (घाव) नहीं होता है।

खजूर मुख में तथा केतकी कमर में एवं भुजाओं पर मदार की जड़ बाँध लेने पर सर्व प्रकार के शस्त्रों का निवारण होता है।

रविवार के दिन बेल के कोमल पत्तों को विस (कमल) के नाल के साथ पीसकर शरीर पर लेप करने से शस्त्र का स्तम्भन होता है।

4Books.com

शस्त्र स्तम्भन मन्त्रः

ॐ नमो अघोररूपाय शस्त्रस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने पर सिद्ध होता है।

मेघ स्तम्भन-प्रयोग

दो ईंट लाकर दोनों ईंटों द्वारा संपुट करे पश्चात् चिता के कोयले से उस पर मेघ लिखकर उस संपुट को स्तम्भन मंत्र से अभिमंत्रित करे, फिर उसे पृथ्वी में गाड़ देवे तो मेघ का स्तम्भन होता है।

निद्रा स्तम्भन का प्रयोग

भटकटैया को मधु के साथ पीसकर नास ले तो नींद न आवे अथवा मधु तथा भटकटैया दोनों को खूब घोंटकर अञ्जन बना लेवे और दोनों आँखों में लगा ले तो नींद का स्तम्भन हो जाय।

जहाँ गायों या भैसों या अन्य पशुओं आदि के रहने के स्थान हों वहाँ पर चारों ओर ऊँट की हड्डी गाड़ देने से पशुओं का स्तम्भन होता है।

ऊँट के रोवें लेकर चाहे जिस पशु पर छोड़ दें उसका स्तम्भन हो जायेगा, यह सिद्ध प्रयोग है।

हरलात के रस से मदार के पत्ते पर जिसका नाम लिखकर किसी बगीचा में ईशान कोण में गाड़ देने से उसके मुख का स्तम्भन हो जाता है। हे रावण! यह मेरा कहना सत्य है।

सैन्य स्तम्भन प्रयोग

रविवार के दिन श्वेत गुञ्जा-फल (सफेद कर्जिरी का फल) लेकर श्मशान भूमि पर गड्ढा खोदकर गाड़ देवे तथा ऊपर से पत्थर रखकर दबा दें, पश्चात् आठों योगिनियों की और रौद्री, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवही, कुमारिका, लक्ष्मी तथा ब्राह्मी एवं गणेश, वटुकभैरव, क्षेत्रपाल तथा दिग्पालों का षोडशोपचार से अर्थात् चन्दन, पुष्प, धूप-दीपादिकों से पूजन कर मदिरा व मांस की बलि पृथक् पृथक् नामों से देवे, पश्चात् सैन्य स्तम्भन मन्त्र का दस हजार जप करे।

ॐ नमः कालरात्रित्रिशूलधारिणी मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

यह मन्त्र चालीस हजार जपने से सिद्ध होता है।

सैन्य पलायन प्रयोग

मंगलवार को कौआ तथा उल्लू की पाँख की कलम बनाकर गोरोचन से भोजपत्र के ऊपर पलायन मन्त्र को शत्रु-नाम सहित लिखे पश्चात् भोजपत्र के सहित उन दोनों पाँखों को यंत्र में भरकर गले में बाँधकर जिस सेना के सन्मुख जाकर जोरों से डाँटते हुए शब्द करे तो केवल उसके शब्द को सुनकर राजा एवं प्रजा सहित सम्पूर्ण सेना भाग जाय।

4Books.com

पलायनमन्त्र:—**ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्य-पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मंत्र का दश हजार जप करने पर सिद्धि होती है।

विद्वेषण प्रयोग

श्रीशंकरजी बोले कि, हे रावण! अब मैं विद्वेषण नामक प्रयोग कहता हूँ, तुम ध्यान से उसका श्रवण करो जो कि महाकौतुक रूप है।

हाथी का दाँत और सिंह का दाँत चूर्ण कर मक्खन के साथ खूब पीसकर तिलक करने योग्य बनाकर फिर उसको विद्वेषण मन्त्र से अभिमन्त्रित कर तिलक करे तो उस तिलक को देखते ही शत्रु आपस में लड़ने लगते हैं अर्थात् विद्वेषण हो जाता है।

एक हाथ में कौवे का पंख तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पंख लेकर दोनों विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर काले डोरे से एक साथ बाँध दें और।

जल में खड़े हो तथा उस बँधे पंखों को हाथों में लेकर सात दिन तक विद्वेषण मंत्र से प्रतिदिन एक सौ आठ बार तर्पण करने से विद्वेषण हो जाता है।

शत्रु के पाँव के नीचे की मिट्टी लाकर पुतली बनावे तथा उसके ऊपर हाथी एवं सिंह के बाल पलेट भूमि में गाड़कर उस पर वेदी बनाकर अग्नि स्थापन के पश्चात् मालती के पुष्पों का विद्वेषण मंत्र द्वारा हवन करे तो विद्वेषण हो जाता है।

जड़ सहित ब्रह्मदण्डी तथा कौवा ोड़ी को सात दिवस पर्यन्त चमेली के फूल के रस में भिगो दे पश्चात् उसे निकालकर पुन: सात दिवस पर्यन्त बिल्ली के मूत्र में भिगोवे फिर उसे निकाल लेवे पश्चात् शत्रु के घर के समीप उसी का धूप देवे। इस धूप की सुगन्धि जो-जो सूँघेगा उसमें परस्पर विद्वेषण होगा।

हाथी एवं सिंह के दाँतों का चूर्ण मक्खन में मिलाकर जिसका नाम लेकर विद्वेषण मन्त्र से अग्नि में हवन करे उसको अन्य से विद्वेषण होवे।

भैंस और घोड़े के बाल मिलाकर जिस सभा में धूप दे उस सभा में क्षण मात्र में ही विद्वेषण हो जाता है।

बिल्ली, मूषक और शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर एक में मिलाकर पुतली बनावे और उसे नीला कपड़ा ओढ़ावे तथा एक सौ बार विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देवे तो शीघ्र ही शत्रु सहित उसके परिवार वालों में विद्वेषण हो जायेगा।

एक हाथ में कौवे का पर तथा दूसरे हाथ में उल्लू का पर ले विद्वेषण मंत्र से अभिमंत्रित कर दोनों परों को एक साथ मिलाकर काले सूत से बाँधकर शत्रु के घर

में गाड़ दे तो पिता-पुत्र में विद्वेषण हो जाय, जब शान्त करना हो तो उसे निकालकर गुग्गुल का धूप दे तो शान्त हो जायेगा।

विद्वेषणमन्त्र:—**ॐ नमो नारायणाय अमुकस्य अमुकेन सह विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।**

इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिये। एक लाख मन्त्र जपने पर सिद्ध होता है। मन्त्र बिना सिद्ध किये प्रयोग सिद्ध नहीं होता।

उच्चाटन प्रयोग

शिवजी बोले कि, हे रावण! ध्यान देकर सुनो, यह उच्चाटन या वध उसी पर करना चाहिये कि जिसने घर, खेत, स्त्री, धन एवं पुत्र का अपहरण किया हो।

कलिहारी की जड़ उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित करे और उसे जिस पर उच्चाटन करना हो उसके घर में गाड़ दे तो शीघ्र ही उसका उच्चाटन हो जायेगा।

ब्रह्मदण्डी और चिता का भस्म शिवलिङ्ग के ऊपर लेपन करे तथा ब्रह्मदण्डी, चिताभस्म और सरसों शनिवार के दिन शत्रु के घर में फेंकने से उच्चाटन होता है।

गूलर की चार अंगुल की लकड़ी की कील उच्चाटन मन्त्र मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के सोने के स्थान पर खोदकर गाड़ देने से उच्चाटन हो जाता है।

कौवा और उल्लू का पर उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के घर मे गाड़ देने से उच्चाटन हो जाता है।

मनुष्य की हड्डी की चार अंगुल की कील उच्चाटन मंत्र से अभिमन्त्रित कर शत्रु के गृह में मंगलवार को गाड़कर स्वयं पेशाव कर दे तो शत्रु का उच्चाटन निश्चित हो जाय।

सफेद सरसों और शंकरजी पर चढ़ायी हुई माला एवं जल इन तीनों को निम्नलिखित मन्त्र से अभिमंत्रित कर शत्रु के घर में गाड़ देने से उच्चाटन होता है और उसे खोदकर निकाल देने से पूर्ववत् सुखी होता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय कलादंष्ट्राय अमुकं पुत्रबान्धवैः सह हन दह दह पच पच शीघ्रं उच्चाटय-उच्चाटय फट् स्वाहा।**

दस हजार जप करने पर यह मन्त्र सिद्ध होता है। बिना मन्त्र सिद्धि के प्रयोग निष्फल होगा।

मध्याह्न (दोपहर) में जहाँ गदहा लोटा हो वहाँ की धूल पश्चिम मुख होकर बायें हाथ से उठा लेवे, पश्चात् उच्चाटन मन्त्र से अभिमन्त्रित कर सात दिन बराबर शत्रु के घर में फेंके तो गृह के स्वामी का उच्चाटन होवे।

उच्चाटनमन्त्र:—**ॐ नमो भीमास्याय अमुकगृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।**

44Books.com

वशीकरण प्रयोग

शंकरजी कहते हैं— हो रावण ! अब मैं वशीकरण प्रयोग करता हूँ जिसके द्वारा राजा, प्रजा एवं पशु भी वश में किये जा सकते हैं।

वकुनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेसर व धतूरा का पञ्चांग (जल-डाल-पात-फूल-फल) सबको सम भाग ले जल के सहयोग से घोट गोली बना छाया में सुखाकर वशीकरण मन्त्र से सात बार अभिमंत्रित कर जिसे वश में करना हो उसे खान-पान में खिलाचे तो वशीकरण सिद्ध हो।

वश्यमन्त्र मन्त्र—**ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहाय मोहाय मिलि ठः ठः स्वाह।**

इस मन्त्र को तीस हजार जप कर सिद्ध कर लें।

बेलपत्र तथ नीबू बकरी के दूध में घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से भी वशीकरण होता है।

भाँग के बीज एवं घिकुआर की जड़ को एक साथ घोट वशीकरण मन्त्र से अभिमंत्रित कर तिलक करने से वशीकरण होता है।

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन तथा काक जंघा की जड़ को सम भाग ले कुमारी कन्या द्वारा बावली के जल से पिसवा वशीकरण से अभिमंत्रित तिलक कर लगाने से वशीकरण सिद्ध होता है एवं विजय प्राप्त होती है।

रावशीकरण

चन्दन, रोरी, गोरोचन एवं कपूर को गौ के दूग्ध में घोट अभिमंत्रित कर तिलक कर लगाने से राजा लोग वश में हो जाते हैं।

चम्पा की कली रवि-पुष्य नक्षत्र में अथवा रवि-भरणी नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधे तो राजा लोग की वश में हों, अन्य मनुष्यों की क्या गणना? सुदर्शन की जड़ भी उक्त नक्षत्र में लाकर हाथ में बाँधने से वशीकरण होता है।

वशीकरणमन्त्र—**ॐ ह्रीं सः अमुकं मे वशमानय आनय स्वाहा।**

शिव उवाच

शंकर जी बोले—हे रावण, अब मैं उस विधि को कहता हूँ जिसे स्त्रियां वश में की जाती हैं।

मधु के साथ खस खस व चन्दन मिला तिलक लगा स्त्री के गले में हाथ डाले तो स्त्री वश में हो।

चिता की राख, बच, कूट, रोली एवं गोरोचन सम भाग ले चूर्ण कर स्त्री के शिर पर डालने से स्त्री वश मे हो जाती है।

4ABooks.com

नीलकमल, भौंरे की दोनों पंख, तगर का जड़, श्वेत कौआगोड़ी सम भाग ले चूर्ण कर युवती के शिरपर डालने से स्त्री वश में होती है।

स्त्री-प्रसङ्ग के पश्चात् अपने वीर्य को बायें हाथ से स्त्री के बायें चरण के तलवे में लेप करने से स्त्री वशीभूत हो जाती है। इसमें सन्देह नहीं है।

सेंधा नमक, शहद, कबूतर की विष्ठा एक में पीस लिंग पर लेप कर स्त्री से मैथुन करने पर स्त्री वश में हो जाती है।

गोरोचन, कुरैया, पारा और काश्मीरी केशर को धतूरे के रस में घोंट लिंग पर लेप कर स्त्री प्रसङ्ग करने से स्त्री अत्यन्त वशीभूत होती है।

छोटी एवं पतली इन्द्रिय द्वारा स्त्रियाँ सुखी नहीं होती हैं, उनके लिये मोटा एवं लम्बा होना चाहिये, अत: मोटा और लम्बा लिंग बनाने का प्रकार कहता हूँ।

कूट, छोटी पीपर, दोनों खरैटी, बच, असगन्ध, गजपीपर और कनेर को मक्खन के सहयोग से पीसकर लिंग पर लेप करे तो लिंग मोटा और लम्बा मूसल की तरह हो जाय।

लोध, केसर, असगन्ध, पीपर और शालपर्ण कड़वा तेल में पकाकर लिंग पर मालिश करने से लिंग लम्बा-मोटा होता है।

बच, खरैटी व पासा भैंस के मक्खन में खूब घोंटकर लिंग पर मलने से लिंग तुरन्त लोहा के समान हो जाता है।

भिलावा-गिरी, सेवार, कमल पत्र की राख को सेंधा नमक के साथ जल के सहयोग से घोटकर लेप करने से घोड़े की तरह लिंग बन जात है।

सूअर की चर्बी और मधु एक में मिला लेप करने से करीव एक माह के बाद लिङ्ग लम्बा तथा मोटा भी बन जाता है।

असगन्ध, सतावर, कूट, जटामासी और कटेली को चौगुने दूध और चौगुने तिल के तेल में पका लिंग तथा स्तन पर लेप करने एवं खाने से कड़ा होता है।

इसी प्रकार मुसली का चूर्ण भी घी में मिला लेप करने से काफी लाभ होता है तथा पीपर, सेन्धा नमक और मिश्री को दूध में पकाकर लेप करने से भी लिंग मोटा एवं लम्बा होता है।

यह ध्यान रहे कि उक्त औषधियाँ गालों पर भी लगाई जाती हैं तथा बाँहों में भी लगाई जाती हैं।

जटामाँसी, बहेड़ा, कूट, असगन्ध तथा सतावर इनको कड़वे तेल में पका लिंग पर मलने से लिंग कड़ा, मोटा एवं लम्बा होता है।

4ABooks.com

पारा, असगन्ध, हल्दी, गजपीपर एवं मिश्री जल से सहयोग से घोटकर लिंग व स्तन पर लेप करने से अद्भूत लाभ होता है।

गोरोचन, मछली का पित्त तथा मोर की शिखा को मधु एवं घी के सहयोग से घोटकर योनि के ऊपर लगा पुरुष से प्रसंग करने पर पुरुष वश में हो जाता है।

कुलथी, विल्वपत्र, गोरोचन एवं मैनशिल को सम भाग ले चूर्ण कर ताम्रपात्र में रख सरसों के तेल में सात दिन तक मीठी आँच में पका-पकाकर उतारता जाय, पश्चात् कपड़े से छानकर उस तेल को योनि पर लगा पुरुष के साथ रमण करने से पुरुष वश में होता है।

ककुनी, सौंफ, केसर, वंशलोचन सम भाग ले घोड़े के मूत्र में घोट कर योनि पर लगा मैथुन करने से पुरुष वश में हो जाता है।

कुचकाठिन्य की विधि

रेड़ी का तेल, मछली का तेल व बिल्वफल का लासा इन तीनों को मिलाकर स्तन पर लगाने से स्तन कड़े होते हैं। यह ध्यान रहे कि मलते समय हाथ ऊपर की ओर रहे।

काले रंग का बिच्छु तथा खंभारी के रस को तिल के तेल में पकावे व केवल तेल शेष रह जाय तो कपड़े से छानकर स्तन पर मले फिर तो गिरे स्तन भी कड़े होकर उठ जाते हैं।

श्वेत रंग के मोथे को काली गौर के दूध में पका लेप करने योग्य बना स्तन पर लेप करने से स्तन बड़ा एवं कड़ा हो जाता है।

वच, असगन्ध की जड़ तथा पत्र एवं गज पीपर इन सबको शुद्ध जल के सहयोग से पीस स्तन पर लेप करेन से स्तन ताड़ फल एवं बड़े आम्र फल के जैसे होते हैं।

गम्भारि के पत्ते का रस व तिल का तेल सम भाग लेकर दूने जल में पाक करे। जब केवल तेल शेष रह जाय तो कपड़े से छानकर शीशी, बोतल में रख स्तन पर मले फिर तो ठीक तौर से एक बार मलने के बाद ही स्तन लोहे जैसे कड़े हो जायेंगे।

इन उपरोक्त विधियों का वर्णन स्त्री-पुरुष के प्रसङ्गार्थ श्री शंकर जी ने स्वयं किया है।

योनि संस्कार

निम्बपत्र को कोरी हाँड़ी में जल देकर खूब उबाल कपड़े से छानकर योनि

को धोवे पश्चात् काले अगर व गुग्गुल को आग में जला योनि को सेंक पति के साथ मैथुन करे तो पति बड़ा प्रसन्न होता है।

जिस स्त्री की योनि में दुर्गन्ध मालूम पड़ती हो वह तो नीम के पानी से योनि को धोकर नीम के कोमल पत्ते पीस योनि पर लेप करे फिर दो-तीन बार के ऐसा होने से योनि-दुर्गन्ध समाप्त हो जायेगी।

रोम-नाशन

पलाश पत्र का भस्म तथा हरताल भस्म का चूर्ण केले के केले के रस में मिलाकर रोग स्थान पर लगा देने से बाल साफ हो जाते हैं फिर कभी नहीं जमते हैं।

एक भाग हरताल का भस्म, पाँच भाग शंख का भस्म, पाँच भाग पिलखन का भस्म इन सबको केले के जल में मिला रोम स्थान पर लगाने से आराम से बाल साफ हो जाते हैं।

हरताल चूर्ण, शंख चूर्ण और मजीठ भस्म को पलाश के फूल के साथ पीसकर लेप रने से भी बाल साफ हो जाते हैं।

हरताल चूर्ण व शंख का चूर्ण चूने के पानी में घोटकर रोम स्थान पर लगा धूप दिखाने से बाल साफ हो जाते हैं।

सुपारी के पत्ते के रस में उत्तम गन्धक पीसकर रोम स्थान पर लगाने, धूप दिखाने से रोम साफ हो जाते हैं।

योनि-संकोचन

आमा हल्दी व खाने की हल्दी, कमल केसर तथा देवदारु की लकड़ी सम भाग ले जल में पीस योनि पर लगाने से योनि संकुचित होती है।

धव पुष्प, त्रिफला, जामुन की छाल, जामुन का रस, घी तथा मूलहठी समभाग लेकर पीसे फिर इसे योनि पर लगावे। यदि वृद्धा स्त्री हो तो भी उसका भग लकड़ी के तुल्य संकुचित हो जाता है।

नीले कमल का बीज, कटेरी, वच, काली मिर्च, कनेर की छाल व बीज, असन तथा हल्दी को समभाग घोटकर लेपन योग्य बना योनि पर लगाने से शीघ्र योनि संकुचित हो जाती है।

बीरबहूटी नाम की जड़ी को पीस पर लगाने से योनि सहज ही में कड़ी तथा गहरी भी हो जाती है।

स्त्री-द्रावण

कामशास्त्रों ने पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में आठ गुना काम अधिक बताया है सलिए औरतें जल्दी स्खलित नहीं होती हैं, एतदर्थ उन औषधियों का संक्षिप्त वर्णन करता हूँ कि, जिससे औरतें भी पुरुषों के साथ प्रेमानन्द ले सके।

4EBooks.com

सिन्दूर, इमली के फल को मधु में घोटकर भगद्वार पर लगा मैथुन करने से स्त्री का शीघ्र ही पतन हो जाता है।

त्रिफला चूर्ण को अच्छी तरह कपड़े से छानकर शहद में मिला योनि द्वार पर थोड़ा लगाकर स्त्री प्रसंग करने से स्त्रियाँ शीघ्र ही स्खलित हो जाती हैं।

पीपर, चन्दन, कटेरी तथा पकी इमली इन सबको घोट पीसकर लेप बना लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र ही स्त्री स्खलित हो जाती है।

अगस्त पत्र का रस, भुने सुहागे का चूर्ण, घी एवं शहद में मिला लेप बना लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र ही स्त्री का पतन हो जाता है।

अच्छी लोध, धतूर, कटेरी व पिपरामूल सम भाग ले चूर्ण कर शहद में मिला लिंग पर लगा मैथुन करने से शीघ्र स्त्री का स्खलन होता है।

असगन्ध के पत्तों को हंडी में उबाले, पश्चात् उसे तेल में उरिद एवं मुलहठी दोनों सम भाग पीस लिंग पर लगा मैथुन करने से स्त्री शीघ्र ही स्खलित हो जाती है।

बेल का फूल व मुण्डी का फूल और कपूर पीस लिंग पर लेप कर स्त्री प्रसंग करने पर स्त्री शीघ्र स्खलित होती है।

कटेरी की जड़ एवं फल भी, पीपर, काली मिर्च, गोरोचन सम भाग ले शहद में घोट लिंग पर लगा संभोग करने से स्त्री शीघ्र स्खलित होती है।

काली मिर्च, धतूर बीज, पीपर, लोध चूर्ण सम भाग ले शहद में घोट लिंग पर लेप कर मैथुन करने से कैसी भी स्त्री क्यों न हो पर उसके पतन में देर नहीं होती है।

उपर्युक्त औषधियों को निम्नलिखित द्रावण मंत्र से अभिमंत्रित कर लेना चाहिये। यह मंत्र १०८ बार जपने पर सिद्ध होता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुदाय उड्डामरेश्वराय स्त्रीणाम्मदं द्रावय द्रावय ठः ठः स्वाहा।**

आकर्षण प्रयोग

भगवान् शंकर बोले कि, हे राक्षसराज रावण, अब मैं आगे आकर्षण विधि का वर्णन करता हूँ, जिसके ज्ञान से सचमुच आकर्षण होगा। निम्नवर्णित प्रयोगों से मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष, उरग, राक्षस, स्थावर, जंगम सभी का आकर्षण हो सकेगा इसमें संशय नहीं है।

आश्लेषा नक्षत्र में देवदारु वृक्ष की बाँझी लकड़ी लाकर बकरे के मत्र में कूट-पीसकर सुखा ले, जिससे कि भुरभुरी हो जाय, फिर तो जिसका आकर्षण करना हो उसके शिर पर थोड़ा डाल दे तो उसका आकर्षण हो जायेगा।

4ABooks.com

पंचमी की तिथि में हुरहुर की जड़ खोद लावे और जिसका आकर्षण करना हो उसे पान में खिला दे तो वह स्वयं वह स्वयं आकर्षित हो आपके पास चला आयेगा।

स्त्री के बायें पैर के नीचे की मिट्टी ला गिरगिटान के खून में सान उसकी प्रतिमा (पुतली) बनावे, पश्चात् प्रतिमा के वक्षस्थल पर उसी स्त्री का नाम लिखे, जिसका आकर्षण करना हो अर्थात् जिसे बुलाना हो। फिर उस प्रतिमा को मूत्र करने के स्थान पर गाड़ दे तथा प्रतिदिन उस पर मूत्र करे तो हजारों मील की दूरी पर रहने वाली स्त्री क्यों न हो पर वह आकर्षित होकर चली आवेगी।

यक्षिणी साधन

शंकरजी बोले कि मैं यक्षिणियों को सिद्ध करने का उपाय कहता हूँ कि, जिसके द्वारा मनुष्य की हर एक कामनाएँ सिद्ध होंगी।

इसके सिद्ध करने का कई प्रकार है—जैसे बहिन, माता, पुत्री तथा स्त्री के रूप में जो जिस भाव के इच्छुक हों उन्हें उन्हीं भाव का ध्यान करना चाहिये।

इस यक्षिणी साधन में मांस एवं पान का भक्षण अत्यन्त निषेध है, प्रातः काल स्नान कर नित्य क्रिया से छुट्टी पाकर जप करना चाहिये और किसी का भी स्पर्श न करना चाहिये। यह सब क्रिया तब तक करे जब तक वांछित पदार्थ देने वाली यक्षिणी प्रत्यक्ष रूप में प्रगट न हो जाय।

महायक्षिणी साधन

साधनमन्त्र—**ॐ क्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीमहायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः।**

उपर्युक्त मन्त्र को जितेन्द्रिय हो बेल वृक्ष पर चढ़कर एक मास पर्यन्त प्रतिदिन एक हजार जपे।

मांस तथा मदिरा प्रतिदिन रखे क्योंकि न जाने वह नाना रूप धारण करने वाली यक्षिणी कब आकर उपस्थित हो जाय।

जिस समय यक्षिणी आकर उपस्थित हो जाय उस समय उसे देखकर भयभीत न हो (वह भयानक रूप भी धारण कर सकती है), अपना जप करता जाय, जब वह यह वचन कहे कि हम अमुक दिन बलि लेंगे तथा वरदान देंगे तो उसे मानकर उसी दिन वर की याचना करें, जैसे धन की इच्छा हो तो धन माँगे, इसी तरह कान में बात करना या नाचना या स्त्री लाना, राजा को वश में करना, आयु, विद्या, यश, बल आदि जिस चीज की इच्छा हो तो धन माँगे, इसी तरह कान में बात करना या नाचना या स्त्री लाना, राजा को वश में करना, आयु, विद्या, यश, बल आदि जिस चीज की इच्छा हो वही वरदान माँगे।

44Books.com

प्रसन्न हुई यक्षिणी सब कुछ देती है, इसमें सन्देह नहीं है यदि प्रयोग को अपने न कर सके तो किसी निर्भीक ब्राह्मण करावे। यह यक्षिणी-साधन देवताओं द्वारा किया गया है।

अथवा अपने सहायकों को रख ब्राह्मणों से करावे और प्रतिदिन तीन कुमारी कन्याओं को भोजन कराता रहे।

धनादि की सिद्धि होने पर धन अच्छे कार्य में खर्च करें, नहीं तो सिद्धि नष्ट हो जायेगी।

धनदा-यक्षिणी मन्त्र—**ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं मम देहि देहि स्वाहा।**

धन देने वाली यक्षिणी का जप पीपल के वृक्ष पर बैठकर करने से धनदा प्रसन्न होकर धन देती है।

पुत्र की इच्छा वाला व्यक्ति आम के पेड़ पर चढ़कर जप करे तो पुत्रदा यक्षिणी प्रसन्न होकर पुत्र प्रदान करती है।

बरगद के पेड़ पर चढ़कर महालक्ष्मी का जप करने से वह प्रसन्न होकर घर में चिरस्थायी हो जाती है।

मदार की जड़ के ऊपर बैठकर जप करने से जया नाम वाली यक्षिणी प्रसन्न होकर सब कार्यों को सिद्ध करती है।

यक्षिणियों की साधना गुप्त रूप से करनी चाहिये, प्रत्यक्ष प्रकट रूप से करने में विघ्नों का भय रहता है तथा प्रयोग सिद्ध नही हो पाता।

भूतिनीसाधनम्

भूतिनी नाम की यक्षिणी अनेक रूप धारण करती है, जैसे कुण्डल धारण करने वाली, सिन्दूर धारण करने वाली, हार पहनने वाली, नाचने वाली, अत्यन्त नाचने वाली, चेटी, कामेश्वरी और कन्या आदि।

भूतिनीमन्त्र—**ॐ ह्रां क्रूँ क्रूँ क्रँ कटुकटु अमुकी देवी वरदा सिद्धिदा च अं भः।**

भूतिनी का जप चम्पा के नीचे करे और प्रति दिन आठ हजार जप करे, पहले भूतिनी का पूजन करे पश्चात् गुग्गुल का धूप दे। उपर्युक्त विधि से करने पर सातवीं रात में भूतिनी आती है, जब इष्ट आ जाय तो उसे चन्दनमिश्रित जल से अर्घ्य देवे फिर तो प्रसन्न होकर भूतिनी उसी रूप में परिणत हो जाती है, जिस रूप में साधक की इच्छा है।

जब साधक यक्षिणी को माता के रूप में सिद्ध करता है तो वह १८ आदमियों को वस्त्राभूषण और भोजन प्रतिदिन देती है। भगिनी के रूप में सिद्ध होने

पर सुन्दर स्त्रियों को दूर-दूर से लाकर देती है तथा रसवाले दिव्य भोजनों को देती है, भार्या के रूप में सिद्ध होने पर अपनी पीठ पर चढ़ा स्वर्गादि लोकों को भ्रमण कराती है एवं भोजनादि के पदार्थों को भी उपलब्ध कराती है।

रात होने पर देवालय में सुन्दर पलंग बिछा सजावे तथा चमेली पुष्प, चन्दन आदि से पूजन कर गुग्गुल की धूनी कर मंत्र का अष्ट सहस्र जप करे। जप की समाप्ति पर सम्पूर्ण वस्त्रालंकारों से विभूषित होकर यक्षिणी प्रकट होगी और साधक का आलिंगनचुम्बनादि कर भोग करेगी तथा कुबेर के धन-कोष से धन भी लाकर देगी।

शव-श्मशान-साधन

शंकरजी बोले कि, अब मैं मसान सिद्धि-अर्थात् मुर्दे के ऊपर चढ़कर सिद्धि किस प्रकार की जाती है उस आश्चर्यजनक क्रिया का वर्णन करूँगा जिसके ज्ञन के बाद साधक सिद्ध हो जाता है।

प्रथम निराहार एवं जितेन्द्रिय हो पश्चात् श्मशान भूमि में उस दिन जाय, जिस दिन मंगलवार को अमावस्या हो, फिर पुरुष शव का अन्वेषण कर उसकी छाती पर निर्भय हो बैठकर दश हजार मंत्र का जप करे पश्चात् वहाँ से उठ एकान्त में आ श्यामा और श्यामल सुन्दरी का षोडशोपचार से पूजन करे, यही शव-साधन की क्रिया है, ऐसा करने के बाद साधक जो आज्ञा देगा वह यक्षिणी करेगी।

शवसाधनमंत्र—**ॐ ह्रीं शवमेनं साधय साधय स्वाहा।**

श्वेत काकजङ्घा, गिद्ध की चर्बी, असगन्ध इनको लेकर ऊँटनी के दूध में पीस लेप बना पैर के तलवे में लगाने से मनुष्य पन्द्रह योजन तक निरापद चल सकता है।

पादुका सिद्धि का मन्त्रः- ॐ नमो भगवते रुद्राय भूत-बेताल-त्रासनाय शंख-चक्र-गदाधराय हन हन महते चन्द्रयुताय हूँ फट् स्वाहा।

इसी मन्त्र का लक्ष जाप पादुका (खड़ाऊँ) सिद्ध करता है, इसको सौ बार पढ़कर उपर्युक्त लेप अभिमंत्रित कर लेना चाहिए।

ॐ नमो भगवते रुद्राय मासे संमले काले खले घोर प्रवर सर सर स्वाहा।

कुत्ता, बिल्ली एवं नेवले का पित्त सम भाग लेकर पैर के तलवे में लेप कर पन्द्रह योजन आदमी जा सकता है तथा काक मांस एवं रसाञ्जन का लेप कर पन्द्रह योजन लौटकर पुनः वापस आ सकता है।

पदलेपनमन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय हरति गदेश्वराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा।**

इस मन्त्र द्वारा लेप को सात बार अभिमन्त्रित करके तब लेप को पैर के तलवे में लगावे।

काग क कलेजी, आँख एवं जीभ, मैनसिल, सिन्दूर, गुरुच, अजवाइन, मालती तथा बिदारीकन्द को सम भाग में ले घोंट लेप बना पाद तले लगाने से सौ योजन तक जाने की शक्ति पैरों में आ जाती है। इस लेप को उपर्युक्त मंत्र से सात बार अभिमंत्रित कर लेना चाहिये।

मृतसञ्जीवनी प्रयोग

शंकरजी कहते हैं कि, मैं मृत सञ्जीवनी विद्या का प्रयोग प्रेमपूर्वक कहूँगा, अकोल नाम वृक्ष के नीचे एक शिव लिंग स्थापित करे, पश्चात् घट के ऊपर कसोरे में यव रख तथा जल से परिपूर्ण करे, प्रथम शिवलिंग की विधिवत् पूजा करे फिर वृक्ष की एवं यव तथा घट की पूजा करे और वृक्ष व लिंग तथ घट तीनों को एक सूत्र में बाँध देवे।

तथा इस क्रिया में चार आदमियों को साधक बनावे फिर सब साधक बारी-बारी से प्रणाम करें और एक-एक साधक दो-दो दिन तक पूजा करता रहे जब तक कि वृक्ष में फूल-फल न लगे। जब फल पक जाय तो कलश जो कि पहले से रखा है, उसी में रखे।

उस कलश का प्रति दिन षोडशोपचार से पूजन करे, कुछ दिनों बाद फिर बीजों को निकाल उनकी गुद्दी निकाले, छिलके अलग फेंक दे, फिर कोंहार के यहाँ से बड़े मुँहवाला घड़ा ला उसके अन्दर एक चौथाई भाग सुहागा से लेप करे।

पश्चात् शुद्ध मिट्टी रख उसें गोलाई में बीज बो दे फिर कुछ दिनों बाद जब बीज सूख जाय तो ताम्रपात्र से ढँककर (ध्यान रहे कि इस प्रकार ढंका जाय जिसमें तेल निकल सके), घड़ा को औधा (नीचे मुख) कर ऊपर से आंच देकर तेल निकाले, जब तेल निकल जाय तब शीशी में रख ले और आधा मासा यह तेल तथा आधा-आधा मासा तिल का तेल मिलावे और जिस रोगी की मृत्यु सर्प काटने से हुई हो उस रोगी को नास दे तो वह जीवित हो जायेगा। सर्पदंशियों की यह अचूक दवा है।

अघोरमन्त्र—**अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यः नमस्तेऽस्तुरुद्ररूपेभ्यः।**

इसी अघोर मंत्र से घट की पूजा कर प्रतिदिन नमस्कार करने से संजीवनी प्रयोग सिद्ध होता है।

विद्याधर सिद्धि

ॐ ह्रीं गौर्गोपतये नमः।

अर्ध रात्रि में विद्याधर मंत्र का तीन हजार प्रति रात्रि जप करने से विद्याधर की सिद्धि होती है तथा गन्धर्व शब्द का ज्ञान एवं पुत्र और बल भी प्राप्त होता है।

शिवज कहते हैं कि, अब मैं इन्द्रजाल कौतुक का व्याख्यान करता हूँ, जिसके ज्ञान से प्रत्येक प्रकार के कौतुकों की जानकारी हो जाती है।

भूतकरणम्

भिलोय के रस में गुञ्जा (घुँघुची) विष, चित्ता तथा केंवाच का चूर्ण मिलाकर देने से भूत लगता है।

भूत चढ़ने के लक्षण ये हैं कि, जैसे धीरे-धीरे शरीर का हिलना, बार-बार मूर्च्छा का आना अथवा हाथ कँपना, पटकना आदि।

खस, चन्दन, कंगनी, तगर, लालचंदन और कूट एक में पीस लेप करने से भूत उतरता है।

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनी कुर्बली स्वाहा।**

इस मन्त्र के द्वारा सौ बार झाड़ने से भूत उतरता है।

लोहबान, घी, हींग, देवदारु, इन्द्रवारुणी, गोदन्ती, सरसों, केश, कुटकी, नीम की पत्ती, दोनों कटाई, बच, चव्य, बनउर, जव, बकरे का बाल तथा मोर की पूँछ।

बछड़े के मूत्र में पीस के सुखावे तथा मिट्टी की परई में अग्नि जला इसका धूप दे तो ग्रहादि एवं भूतादि डाकिनी-शाकिनी और भी ज्वरादि अनेक प्रकार के दुःख दरिद्रों की शान्ति होती है।

गुग्गुल, लहसुन, घी, साँप की केंचुल, बानर का बाल, मोर, मुर्गा एवं कबूतर की विष्ठा एक में मिलाकर धूप देने से बड़े-बड़े प्रेत शान्त हो जाते हैं एवं क्रूर ग्रह, पूतना, डाकिनी, एकाहिक ज्वरादि भी भयंकर से भयंकर नष्ट हो जाते है।

काली सरसों तथा काली मिर्च का अञ्जन भूत को उतार देता है, तगर, बकुची एवं निम्ब का अञ्जन भयानक ज्वर पीड़ा को शान्त करता है।

एक पात्र में गोरख मुण्डी की जड़ रखे पश्चात् हींग मिश्रित जल छोड़े फिर उस जल को पीने से ग्रहादि एवं भूतादिकों की बाधा शान्त होती है।

इन्द्र वारुणी का पका फल, कमलगट्टा और काली मिर्च गौ के मूत्र में पीसकर नास लेने (नाक में सूँघने) से ब्रह्मराक्षसादि एवं भूतादि की बाधाएँ शान्त होती हैं।

4EBooks.com

भूतनाशनमन्त्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः कोशेश्वराय नमो ज्योतिः पतंगाय नमो नमः सिद्धिरूपीरुद्राय ज्ञपति स्वाहा।**

इस मन्त्र को यथाशक्ति जप करने से कठिन से कठिन ग्रह शान्त हो जाते हैं।

शंकरजी के अघोर मन्त्र का हृदय में अर्थात् अजपा जाप करने से ज्वर शान्त होता है।

बरगद के पत्ते पर निम्नलिखित मंत्र कोयले से लिखकर ज्वरग्रस्त व्यक्ति को दिखाने से ज्वर उतर जाता है।

ज्वरनाशनमंत्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय छिन्धि छिन्धि ज्वरं ज्वराय ज्वरोज्वलित कपाल पाणये हुं फट् स्वाहा।**

इस मन्त्र को सिद्धि पर्यन्त जप करने से दूसरे पर ज्वर का आवेश हो जाता है।

उपर्युक्त मंत्र को भोजपत्र पर लिख दाहिने हाथ में बाँधे तथा नित्य १०८ बार जप करे तो सब प्रकार के ज्वर नष्ट हों।

धतूर का बीज, लोहे का मुर्चा, गोह की विष्ठा, करंज का बीज समान भाग ले चूर्ण कर जल में मिला खाने-पीने के साथ देने से पागलपन होता है तथा निम्नलिखित मंत्र से २१ बार अभिमंत्रित कर जल पिला देने से पागलपन शान्त हो जाता है।

उन्मादनाशनमंत्र—**ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये पिशाचाधिपतये आवेशय कृष्णपिंगलाय फट् स्वाहा।**

इस मंत्र को एक लक्ष बार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिये।

शंकरजी कहते हैं कि अब मैं शत्रुओं को पीड़ा पहुँचाने का प्रकार कहता हूँ, जिसके प्रयोग से शत्रु व्रणी (फोड़ा-फुन्सी वाला) होकर विनष्ट हो जाता है।

सर्प, भौंरा, काला बिच्छू एवं बंदर के शिर का सम भाग ले चूर्ण कर शीशी में भर लेवे पश्चात् शत्रु की शय्या या उसके वस्त्रादिकों पर डाल दे, इसके डालते ही शत्रु व्रणों से पीडित होकर मर जायेगा। यह चूर्ण यमदण्ड के सदृश है, जिसका निवारण देवतादिक भी नहीं कर सकते मनुष्यों की क्या गणना है।

जब शत्रु को पीड़ा रहित करना हो तो नील, लाल कमल एवं लाल चन्दन का मुर्गी के पित्त में मिला लेप करने से पीड़ा शान्त हो जायेगी।

विस्फोटक-करणमन्त्र—**ॐ नमो भवति गृहवराहो सुभगे ठः ठः स्वाहा।**

लक्ष जप द्वारा विस्फोटक मंत्र सिद्ध कर लेना चाहिये।

MBooks.com

कुष्ठीकरण प्रयोग

शंकरजी कहते हैं कि, अब मैं शत्रु को कुष्ठ रोग होने की विधि कहता हूं कि जिसके प्रयोग से शत्रु कोढ़ी होकर मर जाता है।

भिलावे का रस, घुँघुची एवं मेढ़क, गृहगोधी (चमगुदरी) इन सबको एक में मिला खाने-पीने के सामानों में खिला-पिला देने पर सात दिनों में ही कुष्ट रोग उत्पन्न हो जाता है।

आँवला, खैर एवं नीम का चूर्ण, घी, शहद एवं शक्कर मिला पुराने चावल के साथ पीसकर खिलावे तथा परोरे की तरकारी और पुराने चावल का भात पथ्य दे तो कुष्ठ अच्छा हो जायेगा।

मक्षिकानिवारण प्रयोग

हरताल को जल में पीस लेप बना एक पुतली पर करके रख दे तो उसे सूँघकर मक्खियाँ भाग जायेंगी।

मूषकनिवारण प्रयोग

तिल, कुल्थी का चूर्ण, सफेद मदार के दूध में मिला मदार के पत्ते पर रख देने से चूहे भाग जाते हैं।

बकरी के मूत्र में बकरी की लेंड़ी तथा हरताल, प्याज सहित पीस कर चूहे के ऊपर इसका लेप कर लेप कर चूहा छोड़ देने से उसे देखते ही सब चूहे भाग जाते हैं।

बिल्ली की विष्टा तथा हरताल एक में पीस चूहे के ऊपर लेप कर छोड़ देने से सूँघकर सब चूहे भाग जाते हैं।

मत्कुण-निवारण

मदार की रूई की बत्ती को महावर के रंग में कड़ुवे तेल में दीपक के जलाते ही खटमल भाग जाते हैं।

अर्जुन फल एवं पुष्प, लाख, चन्दन, गुग्गुल, सफेद अपराजिता की जड़, भिलावा, वायविडङ्ग इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से सर्प, खटमल और मूस भाग जाते हैं।

सर्पनिवारण प्रयोग

सफेद गुड़, चंदन, वायविडङ्ग, त्रिफला, लाख, मदार का फूल इन सबको एक में मिला धूप देने से सर्प, बिच्छू भाग जाते हैं।

नागरमोथा, सरसों, भिलावा, केवाच का फल, गुड़ तथा मदार का फल इनको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से खटमल, मच्छर, सर्प, मूस, और भी विषैले कीटाणु भाग जाते हैं। जैसे कि कायर पुरुष युद्ध से भाग जाते हैं।

44Books.com

मशक-निवारण

भिलावा, वायविडङ्ग, सोंठ, पोहकर मूल तथा जामुन इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर धूप देने से मच्छर नष्ट हो जाते हैं।

क्षेत्रोपद्रवनाशन प्रयोग

अब खेतों में उपजी फसलों को नष्ट करने वाले जंतुआं के विनाशार्थ उपाय कहते हैं। बालू, सफेद सरसों एक साथ मिला खेत में डाल देने से टिड्डी, कीड़े, सूअर, मृग, मूस, मच्छरादि सब प्रकार के जीव मन्त्र के प्रभाव से भाग जाते हैं।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में बहेड़े की बाँझी लेकर निम्न लिखे मंत्र से अभिमंत्रित कर खेत में गाड़ देने से अन्न अधिक उपजता है।

अन्नोत्पावन-मन्त्र

ॐ नमः सुरभ्यः बलजः उपरि परिमिलि स्वाहा।

यह मन्त्र दस हजार जपने से सिद्ध होता है।

रक्त निवारण

लिसोड़े की छाल और साठी के चावल की पोटरी बाँध स्त्री की योनि में रख देन से खून का गिरना बंद हो जाता है।

आँवला, बहेड़ा तथा निसोत का चूर्ण जल के साथ पीसकर पीने से अधिक गिरता रक्त भी बन्द हो जाता है।

चावल का धोवन तथा सरफोंस की जड़ को पीसकर पीने से भी स्त्रियों और का खून बन्द होता है। यह ध्यान रहे कि दवा की मात्रा १० मासे से अधिक न हो।

देवदारु, रसाञ्जन, चिरायता, भिलावा, अड़ूसा, नागरमोथा इन सबका क्वाथ घी और शहद के संयोग से सिद्ध कर पीने से शूलप्रशूल सब प्रकार के प्रदर आदि रोग शान्त हो जाते हैं।

बन्ध्यात्वनाशन प्रयोग

रविवार को सुगन्धरा की जड़ ला एक वर्णा गौर के दूध के साथ पीस ऋतुकाल में पीने से तथा साठी का भात एवं मूँग की दाल पथ्य खाने से बन्ध्यादोष विनष्ट होता है।

दवा खाते समय स्त्री को किसी प्रकार की चिन्ता या शोक अथवा भय, अधिक परिश्रम, दिन में सोना, गर्म चीजों का भोजन, धूप, अधिक ठंड इन सबसे बचना चाहिए। ऐसे पथ्य से रहते हुए पति के साथ सहवाह करने से बन्ध्या अवश्य गर्भवती होती है।

नागरमोथा, कंगुनी, वैर, लाहरस तथा मधु इनको बराबर लेकर पुराना चावल के धोवन के साथ एक तोले की मात्रा में सात दिन तक पूर्वोक्त पथ्य से पीव तो बन्ध्या गर्भ धारण कर लेती है।

पीपर, केसर आदि व काली मिर्च घी के साथ चूर्ण कर खाने से वन्ध्या गर्भवती होती है।

सफेद कटेली, जटामासी के पत्ते, नये दूध के साथ पीसकर पीने से वन्ध्या गर्भवती होती है। पथ्य सात्त्विक भोजन करे।

असगन्ध को जल में पकाकर घी में भूने पश्चात् प्रातः स्नान के बाद दूध व घी के साथ पाय तो वन्ध्या पुत्रवती हो।

रजोधर्म शुद्धि के पश्चात् काली अपराजिता की जड़ को बछड़ा वाली नवीन गौ के दूध में तीन दिन पीने से वन्ध्या गर्भवती होती है।

पहले ब्यायी हुई गौ जिसके साथ बछड़ा हो ऐसे गौ के दूध के साथ नागकेशर का चूर्ण सात दिन तक पीने से तथा घी-दूध के साथ भोजन करने से वन्ध्या स्त्री पुत्रवती होती है।

तिल, रस, गुड़ तथा नये जवान बछड़े का मूत्र १ सेर इनको ले एक हण्डी में गौ की कंडी पर पकावे, पकने के पश्चात् ऋतु के समय सात बार पीवे तो अवश्य वन्ध्या पुत्रवती हो।

कदम की पत्ती, सफेद चन्दन तथा कटेरी की जड़ सबको समान भाग ले बकरी के दूध के साथ पीसकर पीने से अवश्य वन्ध्या पुत्रवती हो जाती है।

विष्णुक्रान्ता को जड़ सहित भैंस के नैनू (नूतन घी) के साथ सात दिन खाने से काक वन्ध्या भी पुत्रवती होती है।

जन्म लेने के पश्चात् जिस स्त्री का पुत्र मर जाता है उसे मृतवत्सा कहते हैं, जिस रविवार को कृत्तिका नक्षत्र हो उस दिन पीत पुष्पा नाम की जड़ी जड़ सहित लावे, उसे पानी में सात दिन पर्यन्त पीस कर दस मासे पीवे तो पुत्र न मरे।

नीबू के पुराने पेड़ की जड़ को दूध में पीस घी मिला पीने से पति प्रसंग द्वारा स्त्री को दीर्घजीवी पुत्र होता है।

गर्भस्तम्भन

प्रथम मास के गर्भ में यदि अकस्मात् पीड़ा उत्पन्न हो तो गौ के दूध में पद्माख, लालचन्दन व खस इन सबको बराबर ले पीस एक-एक तोला तीन दिन तक पीने से गर्भ नहीं किरता अथवा मुलहठी, देवदारु, सिरस का बीज, काली गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से भी गर्भ गिरने से रुक जाता है।

नील कमल की जड़, लाह का रस, काकड़ासिंगी ये सब बराबर ले गौ के दूध में पीसकर पिलाने से दूसरे मास की गर्भ पीड़ा अच्छी होती है।

पीपल की छाल, काला तिल, शतावर इन सबको बराबर ले गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से दूसरे मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है।

चन्दन, तगर, कूट, कमल की जड़, कमल की केशर, काकोली और असगन्ध इन सबको ठण्डे पानी के साथ पीसकर पीने से तीसरे मास के गर्भ की पीड़ा जाती रहती है।

नील कमल व कमल की जड़, गोखरू गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से चौथे महीने के गर्भ की पीड़ा जाती है।

गदहपूर्णा, काकोली, तगर, नीलकमल, गोखरू इन सबको गौ के दूध के साथ पीने से पाँचवें मास के गर्भ की पीड़ा जाती है।

कैंथ का गूदा ठंडे पानी में पीस और गौ का दूध मिलाकर पीने से छठे मास के गर्भ की पीड़ा जाती है।

कसेरू, पुष्कर मूल, सिंघाड़ा व नीलकमल पानी में पीसकर पीने से सातवें मास के गर्भ की पीड़ा अच्छी होती है।

मुलहठी, पद्माख, मुस्त, नागकेशर, गजपीपर इन सबको गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से आठवें मास की गर्भपीड़ा जाती है।

इन्द्रायन के बीज, कंकोल (अकोल) मधु के साथ पीस घोंट कर खाने से नवें मास के गर्भ की पीड़ा शान्त होती है।

पुराना खाँड़, मुनक्का, छुहाड़ा, शहद व नील कमल को गौ के दूध में पीने से दसवें महीने के गर्भ की व्यथा दूर होती है।

सोंठ डाल कर पकाया हुआ गौ का दूध अथवा मुलहठी व देवदारु देवदारु आर सोंठ गौ के दूध के साथ पीसकर पीने से भी दसवें महीने की व्यथा दूर होती है।

आँवला और मुलहठी गौ के दूध के साथ पीने से गर्भ-स्तम्भन पूर्णरूपेण हो जातता है, फिर नहीं गिरता है।

कुम्भकार के हाथ की लगी मिट्टी, परवह चाक के ऊपर की हो, बकरी के दूध में मिलाकर पीने से गर्भ की व्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है, फिर नहीं गिरता।

कसेरू, सिंघाड़ा नागरमोथा और रेड़ी इन सबको सम भाग ले चूर्ण कर सतावर डालकर पकाये हुए गौ के दूध के साथ पीने से गर्भव्यथा दूर होकर गर्भ सुस्थिर हो जाता है।

कोई की जड़, शहद, घी इनको दूध में डालकर खौलावे पश्चात् ठंडा कर सात दिन तक पीने से गर्भ स्राव, अरुचि आदि सब प्रकार का विकार नष्ट हो जाता है।

कमल की जड़, जिसको भसोड़ कहते हैं तथा तिल व मिर्च दूध में पीसकर पीन से गिरता हुआ गर्भ तुरन्त रुक जाता है।

ह्रीबेर, अतीस, नागरमोथा व काली मिर्च का काढ़ा बना पीने से गर्भ का रोग दूर होता है।

गौ के दूध में खाँड़ मिलाकर पीने से गर्भ का सूखना बन्द हो जाता है या गंभारी के फल का चूर्ण मधु के साथ खाये या दूध पीवे तो भी गर्भ का सूखना बन्द हो जाय।

सुखप्रसव प्रयोग

बच्चा पैदा होने के समय यदि व्यथा अधिक हो और बालक उत्पन्न होने में कठिनाई मालूम पड़ती हो तो गदहपूर्ना की जड़ का चूर्ण योनि में रख देने से बालक सुख उत्पन्न है।

प्रसिद्ध काढ़ा दशमूल का और सेंधा नमक वे घी मिलाकर पीने से भी सुखपूर्वक बालक उत्पन्न हो है।

गर्भमोचन मन्त्र

ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः ॐ मन्मथः मन्मथवाहिनी लंबोदर मुंच मुंच स्वाहा।

नहा-धो शुद्ध हो उपर्युक्तं मंत्र से गरम जल अभिमंत्रित कर गर्भिणी को पिला देने से सुखपूर्वक बच्चा पैदा होता है।

करियारीकन्द, अपामार्ग (चिचिहिड़ा) या इन्दायन की जड़ को चूर्णकर पोटरी बाँध योनि में रखने से बन्द हुआ मासिक धर्म खुल जाता है।

तिल की जड़, बह्मदण्डी की जड़, मुलेठी, काली मिर्च तथा पीपर इन सबको कुचकुचाकर जल के साथ काढ़ा बनाकर पीने से बन्द हुआ मासिक खुल जाता है और रक्त गुल्म भी अवश्य नष्ट हो जाता है।

माल कंगनी के नवीन पत्र, जपा (दुपहरिया) के फूल के साथ खाने से बन्द मासिक खुल जाता है।

श्री शंकरजी बोले कि, हे रावण! मेरे कहे गये इस उड्डीशतंत्र को सभी के लिए न देवे अर्थात् पात्र समझकर ही प्रदान करे अन्यथा अनिष्ट हो जायेगा। इसकी यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए।

विद्यादात्री निर्गुण्डी यक्षिणी मन्त्र प्रयोग

यह ७ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ सररस्वत्यै नमः। इति सप्ताक्षरो मन्त्रः।

4EBooks.com

निर्गुण्डीमूलमारूढो जपेदेकाग्रमानसः। विद्या प्राप्तिर्भवेन्नित्यं नान्यथा शङ्करोदिम्। अयुतं जपेत्।

निर्गुण्डी की जड़ पर बैठकर एकाग्र मन से जप करे। इससे नित्य विद्या प्राप्त होती है। शंकर का यह कथन निष्फल नहीं होता। इसका दश हजार जप करना चाहिये।

विद्या यक्षिणी साधन

यह ६ अक्षरों का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा। इति नवाक्षरो मन्त्रः।

पञ्चविंशतिसहस्त्रं जपेत्। पञ्चमेवा दशांशतो होमस्तदा विद्या प्राप्त भवति।

मन्त्र का २५ हजार जप और पाँचवें दिन जप का दशांश होम करना चाहिये इससे विद्या प्राप्त होती है।

डाकिनी साधन

मन्त्र—**ॐ नमो चढ़ौ चढ़ौ सूरवीर धरती चढ्या पाताल चढ पग पाली चढ्या कुणकुण वीर हनुमन्तवीर चढ्या धरती चढ़ पगपानचढ़ी एडी चढ़ी मुरचै चढ़ी मुरचै चढ़ी पिण्डी चढ़ी पिण्डी चढ़ी गोंडां चढ़ी गोडां चढ़ी जांध चढ़ी जांघ चढ़ी कटि चढ़ी कटि चढ़ी पेट चढ़ी पेटसूं धरणी चढ़ी धरणीसूं पांसली चढ़ी हियासूं छाती चढ़ी छातीसूं खबा चढ़ी खवासूं कण्ठचढ़ी कण्ठसूं मुख चढ़ी मुखसूं जिह्वा चढ़ी जिह्वासूं कान चढ़ी कानसूं आंख चढ़ी आंखसूं ललाट चढ़ी ललाटसूं सीस चढ़ी सीससूं कपाल चढ़ी कपालसूं चोटी चढ़ी हनुमान् नारसिंह चले वीर समदवीर दीठ वीर आज्ञावीर सोसन्तावीर ये वीर चढ़े।**

ग्रहण की रात्रि को चौका लगाकर घी का दीपक जलाये और एक पैर पर खड़ा होकर मन्त्र का १०८ जप करे तो डाकिनी उपस्थित होती है। उससे भयभीत न हो और सम्मुख बात करे। ऐसा करने साधक जो काम कहेगा उसे डाकिनी करेगी।

तस्कर ग्रहण चेटक

एक अन्य प्रयोग का मन्त्र इस प्रकार है :

ॐ नमः किष्किन्धापर्वतपर कदलीवन तिस्के फल तोड़नेवाला चोर तेरे कुञ्जनको देनी पकड़ दे इतनी आज्ञा फुरो। इति मन्त्रः।

जिन पर सन्देह हो उनका नाम लिखकर आटे में गोली बनाये। इसमें से प्रत्येक गोली पर २१ बार मन्त्र पढ़कर पानी में डालता जाय। जिसने चोरी किया है केवल उसी के नाम गोली तैरती रहेगी, शेष डूब जायगी। इस प्रकार चोर के नाम का पता लग जायगा।

4Books.com

ग्रहनाशनभूतेश्वर मन्त्र

ॐ नमो भगवते भूतेश्वराय कलिकलिनखाय रौद्रदंष्ट्राकरालवक्त्राय त्रिनयनाय धगधगितपिशङ्गललाटनेत्राय तीव्रकोपानलामिततेजसे पाशशूल-खट्वाङ्गडमरुकधनुर्बाणमुद्गराभयदण्डत्रासमुद्राव्ययदसंयदाइदण्डमण्डिताय कपिलजटाजूटार्द्धचन्दधारिणे भस्मरागरञ्जितविग्रहाय उग्रफणिकालकूटा-टोपमण्डितकण्ठदेशाय जयजय भूतनाथामरात्मन् रूपं दर्शयदर्शय नृत्यनृत्य चलचल पाशेन बन्धबन्ध हुंकारेण त्रासयत्रासयवज्रदण्डेन हनहन-निशितखड्गेन छिन्धिछिन्धि शूलाग्रेण भिन्धिभिन्धिमुद्गरेण चूर्णयचूर्णय सर्वग्रहानावेशयावेशय स्वाहा। इति मन्त्रः।

गुग्गुलं मधुनाक्तेन घृतेन सह धूपयेत्। मन्त्रेण तेन हारीत तर्जयेद्ग्रपीडितम्।। ग्रहाविष्टेन चेत्तस्मै दीयते बलिरुत्तमः। मुक्तो भवति तस्माच्च संशयो नास्ति तत्र च।।

मधु से सिक्त गुग्गुल का घी के साथ धूप दे। हे हारीत! फिर हम मन्त्र से ग्रहपीड़ित को डरावे। ग्रहाविष्ट के द्वारा उसे उत्तम बलि देना चाहिये। तब वह ग्रहवाधा से मुक्त हो जाता है—इसमें संशय नहीं है।

भूतोपद्रवनाशका उड्डीश मन्त्र

मन्त्र—**ॐ नमो भगवते नारसिंहाय घोररौद्रमहिषासुररूपाय त्रैलोक्याडम्बराय रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रों ह्रों क्रीं क्रीं क्रीमिति ताडय ताडय मोहय मोहय द्रम्भि द्रम्भि क्षोभय क्षोभय आभि आभि साधय साधय ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीतिललाटे बन्धय बन्धय ह्रीं हृदसे स्तम्भय स्तम्भ किलि किलि ईं ह्रीं डाकिनि प्रच्छादयप्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय प्रभूतं प्रच्छादय स्वाहा राक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय प्रच्छादय सिंहिनीपुत्रं प्रच्छादय प्रच्छादय डाकिनीग्रहं साधय साधय शाकिनीग्रहं साधय साधय। अनेन मन्त्रेण डाकिनीशाकिनीभूतप्रेतपिशाचाद्येकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकचातुर्थिकपञ्चवातिक-पैत्तिकश्लेष्मिक सन्निपातकेसरिडाकिनीग्रहादीन्मुंचमुंच स्वाहा। गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फूरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति मन्त्रः।**

लोहे की सलाई से २१ बार झाड़ने अथवा छप्पर की तीली से झाड़ने से उन्मादादि भूतवाधा दूर होती है।

डाकिनी से बालक को छुड़ाने का मन्त्र

ॐ कालाभैरो कपिली जटा रातदिन खेलै चौपटा काला भैरूं भस्म मुसाण जेहि मांगूं सो पकड़ी आन। डङ्किनी सङ्किनी पटसिहारी जरख चढन्ती

गोरखमारी छोडिछोडिरे पापिणी बालक पराया गोरखनाथका परवाना आया। इति मन्त्रः।

तीर से झाड़ने तथा अभिमन्त्रित पानी पिलाने से बालक डाकनी से छूट जाता है—यह निश्चित है।

प्रेतादि या रोगादि झाड़ने का उत्तम मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको घोरघोर इन घोर काजीकी किताब घोर मुल्लाकी बांग घोर रैगरकी कुण्ड घोर धोबीकी कुण्ड घोर पीपलका पान घोर देवकी दिवाल घोर आपकी घोर बखेरता चल पारकी घोर बैठता चल वज्रका किवाड तोड़ता चल सारका किवाड़ तोड़ता चल कुनकुनसो बन्द करता चल भूतकू पलीतकू देवकू दानवकू दुष्टकू मुष्टक चोटकू फेटकू मेलेकू घरेलेकू उलकेकू बुककेकू हिडकेकू भिडकेकू ओपरीकू पराईकू भतनीकू पलीतनीकू डङ्किणीकू स्यारीकू भूचरीकू खेचरीकू कलुबेकू मलबेकू उनकू मथवायकं तापकू तेजराकू माथाकी मथवायकू मगरांके पीडकू पेटके पीडकू सांसकू कांसकू मरेकू मुसाणकू कुणकुणसा मुसाण कचिया मुसाण भुकिया मुसाण कीटिया मुसाण चीड़ी चौपटाका मुसाण नुह्या मुसाण इन्हींको बन्दकरि एड़ीकी एड़ी बंध करि पीड़ाकी पीड़ी बंध करि जांघकी जाड़ी बंधकरि कट्यांकी कड़ी बंधकरि पेटकी पीड़ा बन्धकरि छातीकी शूल बन्धकरि सरिकी सीस बन्धकरि चोटीकी बन्धकरि नौनाड़ी बहत्तर कोठा रूमरूममें घर पिण्ड में दखलकर देस बङ्गालाका मनसारा मसेवडा आकर मेरा करज सिद्ध न करै तो गुरू उस्तादसूं लाजै सब्दसाचा पिण्डकाचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा। इति मन्त्रः।

मद्यमांस छडछरीला अतर तेल दीपक रविवारकी रविवार भाङ्गसुलफा चढ़ाना तो सिद्ध हो पीछे मन्त्र सातवार पढ़कर झाड़ दे तो सर्वोपद्रव दूर होकर सुखी होवे इसमें सन्देह नहीं।

नजर झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो सत्यनाम आदेश गुरूको ॐ नमो नजर जहां परपीर न जानी बोलै छलसों अमृतवानी कहो नजर कहांते आई यहाँ की ठौर तोहि कौन बताई कौन जात तेरो कहा ठाम किसकी बेटी कहा तेरो नाम कहांसे उड़ी कहांको जाया अबही वसकरले तेरी माया मेरी जात सुनो चित लाय जैसी होय सुनाऊं आय तेलन तमोलन चूहड़ी चमारी कायथनी खतरानी कुह्मारी महतरानी राजाकी रानी जाको दोष ताहीके सिर पड़ै जाहर पीर नजरसो रक्षा करै मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र द्वारा मोर-पंख से झाड़ने से आराम होता है।

डाकिनी के चोट मारने का मन्त्र

ॐ नमो महाकाली जोगनी जोगनी पारशाकिनी कल्पवृक्षीयदृष्टि जोगनी सिद्धरुद्राय कालदण्डेन साधय साधय मारय मारय चूरय चूरय अपहर शाकिनी सपरिवारं नमः ॐ हूं हूं हैं हौं फट् स्वाहा। इति मन्त्रः

डाकिनी को चोट मारने का प्रयोग—उक्त मन्त्र से सात बार गूगल को अभिमन्त्रित कर ओखली में डालकर मूसल से कूटने से उस मूसल की चोट डाकिनी को लगेगी। यदि इस मन्त्र से अपना सर मूंडे तो डाकिनी का सिर मुंड जायगा। किसी वस्तु पर मन्त्र पढ़कर जिसके घर में उस वस्तु को फेंक दे तो डाकिनी उसके घर में जाकर बोलेगी। इस मन्त्र को पढ़कर आंखों जल का छींटा मारने से डाकिनी जल उठेगी।

डाकिनी द्वारा भक्षित को झाड़ना

ॐ डाकन शाकन और सिहारी भैरौ यतीके चक्र मारी अन्नपान खाय परायातकै तिस पापनका भण्डारा फूटै नरसा टूटै पाप न छूटै गुरूकी शक्ति चेलेकी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से सात बार झाड़ने से डाकिनी द्वारा ग्रसित को आराम होता है।

डाकिनी दूर करने वाला मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको डाकिनी सिहारी किन्ने मारी जती हनुमन्तने मारी कहां जाय दबकी किन देखी जती हनुमन्तने देखी सातवें पाताल गई सातवें पातालसूं कौन पकड़ल्याया जती हनुमन्त पकड़ल्याया एकताल दे एक कोठा तोड्या दो ताल दे दो कोठा तोड़्याः तीन ताल दे तीन कोठा तोड़्या चार ताल दे चार कोठा तोड़्या पांच ताल दे पांच कोठा तोड़्या छः कोठा तोड़्या सात ताल दे सातवों कोठो खोलदेखै तो कौन खड़ी छै? डाकिनी सिहारी भूतप्रेत चलै जती हनुमन्तसेरे झाड़े सूं चलै ॐ नमो आदेश गुरूको गूरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मोर के पंख अथवा लोहे से झाड़ने से सभी उपद्रव दूर होते हैं।

अन्य प्रयोग

ॐ नमो आदेस गुरूको गिरहवाज नटनीका जाया चलतीवेर कबूतर खाया पीवै दारू खाय जो मांस रोगदोषकूं लावै फांस कहांकहां सूं लावैगा गुदगुद में सुब्रावैगा वोटी वोटीमेंसूं ल्यावैगा चामचाममेंसूं ल्यावैगा नौनाडी बहत्तरकोठामेंसूं ल्यावैगा मारमार बन्दीकरकर ल्यावैगा न ल्यावैगा तो अपनी माताकी सेजपर पग धरैगा मेरा भाई मेरा देखादिखलाय तो मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

मोर के पंख से झाड़ने से भूत, प्रेत, डाकिनी, शाकिनी आदि सब भाग जाते हैं।

डाकिनी को बोलवाने का मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको ॐ नमो जय नरसिंह तीनलोक जौदहभुवन में हाथ चावी और होठ चावी नयन लाल लाल सर्व वैरी पछाड़मार भगतनको प्राण राखि आदेश आदिपुरुषको। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़कर पानी पिलाकर पूछने पर डाकिनी-शाकिनी निश्चित रूप से बोलती है।

प्रेतादि झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो नारसिंहाय हिरण्यकशिपुवक्षःस्थलविदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूतप्रेतपिशाच-डाकिनीकुलोन्मूलाय स्तम्भोद्भवाय समस्तदोषान् हरहर विसरविसर पचपच हनहन कम्पयकम्पय मथमथ ह्रीं ह्रीं फट्फट् ठः ठः एहिएहि। रुद्र आज्ञापयति स्वाहा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र को पढ़-पढ़कर सरसों मारने से सब दोष दूर होते हैं।

दूसरे के कृत्य को उलटना

एकठोसरसों सोलाराई मोरो पठवलकौ रोजाई खायखाय पडै भार जे करै ते मरै उलट विद्या ताहीपर परै शब्द साचा पिण्ड काचा तौ हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

इस मन्त्र से राई और नमक उतारकर आग में डालने से दूसरे द्वारा की गई विद्या उलट कर करनेवाले पर ही जा पड़ती है।

रात्रिज्वर निवारण तन्त्र

काकमाचीभवं मूलं कर्णे बद्धं निशिज्वरम्। निहन्ति नात्र सन्देहो यथा सूर्योदयात्तमः।।

काकमाची (काली मकोय) की जड़ कान में बाँधने से रात में होनेवाला ज्वर नष्ट हो जाता है। इसमें उसी प्रकार कोई सन्देह नहीं है जैसे सूर्योदय से अन्धकार का होने में सन्देह नहीं है। अथवा भाँगरा की जड़ को डोरे सहित कान मे बांधने से रात्रिज्वर दूर होता है।

अर्श निवारण तन्त्र

ॐ काका कर्ता क्रोरीकर्ता ॐ करतासे होय यो रसना दशहूंसे प्रकटै खूनी वादी बवासीर न होय। मन्त्र जानके न बतावै द्वादश ब्रह्महत्याका पाप होय लाख जप करै तो उसके वंसमें न होय शब्द सांचा पिण्ड काचा तौ हनूमानका मन्त्र साचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्रः।

4BOOKS.com

इस मन्त्र से बासी पानी को २१ बार अभिमन्त्रित करके आबदस्त लेने से बवासीर (अर्श) की पीड़ दूर होकर फिर कभी नहीं होती। जो कोई इस मन्त्र का १ लाख जप करता है उसके वंस में कभी बवासीर का रोग नहीं होता। जो इस मन्त्र को जानकर अर्शरोगी को आबदस्त के लिये जल के लिये नहीं कहता उसे १२ ब्राह्मणों की हत्या का पाप लगता है। अत: आबदस्त के लिये इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल ले जाने के लिये अवश्य कहना चाहिये। यदि कहने पर भी रोगी ऐसा जल नहीं ले जाता तो उससे मन्त्री (मन्त्र जाननेवाला, दोषभागी) नहीं होता। यह मन्त्र हमारा अनेक बार का परीक्षित है।

अन्यत्। ॐ उमतीउमती चलचल स्वाहा। इति मन्त्र:।

इस मन्त्र को २१ बार पढ़कर लाल सूत में गाँठ दे। इसी तरह गाँठ देकर दाहिने पैर के अँगूठे में बाँधने से खूनी बवासीर की पीड़ा दूर हो जायगी। यह अनुभूत प्रयोग है।

दाँत के कीडे झाड़ने का मन्त्र

ॐ नमो आदेस गुरूको वनमें व्याई अञ्जनी जिन जाया हनुमन्त काड़ा मकड़ा माकड़ा ए तीनू भस्मन्त गुरूकी शक्ति मेरी भक्ति फुरो मन्त्र इश्वरी वाचा। इति मन्त्र:।

दीवाली की रात से एक लाख जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है। फिर नीम की डाली से झाड़ने से दांत का दर्द तत्काल दूर होता है। यदि इस मन्त्र से कटाई के बीजों का धूआँ डाढ़ों में दिया जाय तो उसके सब कीड़े पानी में गिर पड़ेंगे।

अन्यत्। ॐ नमो कीडरेतूं कुण्डकुण्डाला लाल पूंछ तेरा मुक काला में तोहि पूंछूं कहां ते आया तोडमांस सबको क्यौं खाया अब तूं जाय भस्म हो जाय गोरखनाथके लागूं पाय शब्द सांचा पिण्डकांचा फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्र:।

इस मन्त्र द्वारा नीम की टहनी से ७ बार झाड़ने से सब कीड़े मर जाते हैं।

अन्यत्। ॐ नमो नाड़ीनाड़ी नौसे नीड़ी बहत्तरसौ कोठा चलै अगाड़ी डिगै न कोठा चलै न नाड़ी रक्षा करै जती हनुमन्तकी आन मेरी भक्ति गुरूकी शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा। इति मन्त्र:।

सूत में ६ गाँठ लगाकर उसे छल्ले की तरह बना ले फिर उसको नाभि पर रखकर मन्त्र पढ़े और उस पर फूँक मारे तो थोड़ी देर में धरण ठिकाने आ जायगी।

अन्य प्रयोग : वन में जब सङ्घाहुली फूले तो उसको हल्दी से रँगे चावलों से शनिवार को निमन्त्रित करे। फिर रविवार को प्रात:काल जाकर सात प्रदक्षिणा करके